RNI:
UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

द अचीवर टाइम्स

डाक पंजीयन संख्या
एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन
पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 244
पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया
लखनऊ, गुरुवार, 28 दिसम्बर, 2023

एक नज़र

निर्माणाधीन मकान की छत गिरने से 30 लोग दबे, दो मजदूरों की मौत

महराजगंज। कोल्हुई थाना क्षेत्र के रुदलापुर गांव में निर्माणाधीन मकान की छत गिरने से 30 लोग दब गए। इस घटना में दो मजदूर की मौत हो गई है। महराजगंज जिले में एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां कोल्हुई थाना क्षेत्र के रुदलापुर गांव में निर्माणाधीन मकान की छत गिरने से 30 लोग दब गए। इस घटना में दो मजदूर की मौत हो गई है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को अस्पताल भेजा है। हादसे के बाद क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल है। मृतकों की पहचान नीरज (20) निवासी बेलवा खुर्द और दूसरा पिपरा परसीनी निवासी ऐश कुमार (25) के रूप में हुई है। घटना के बाद मौके पर भीड़ जुट गई है।

धमका कर महिला के साथ चार साल से कर रहा था दुष्कर्म, रिटायर्ड दरोगा गिरफ्तार

देवरिया। देवरिया जिले में सलेमपुर कोतवाली पुलिस ने मंगलवार को एक रिटायर्ड दरोगा के खिलाफ दुष्कर्म के मामले में केस दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया। आरोप है कि मजबूरी का फायदा उठाकर कर रिटायर्ड दरोगा चार वर्षों से महिला के साथ दुष्कर्म करता रहा। जब भी महिला विरोध करती थी तो अपने को ऊंची पहुंच का बताते हुए जान से मारने की धमकी देता रहा। कोतवाली थाना क्षेत्र के एक गांव की एक महिला ने कोतवाली पुलिस को तहरीर दी। बताया कि उसके गांव के एक रिटायर्ड दरोगा ने झांसा में रखकर उसके साथ दुष्कर्म किया। जब महिला ने इसका विरोध किया तो जान से मारने की धमकी देने लगा। डरी सहमी महिला ने कई बार शिकायत की, लेकिन कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद पीड़ित ने सोशल मीडिया पर अपनी पीड़ा को उजागर किया, तो आनन-फानन में कोतवाली पुलिस ने केस दर्ज कर लिया।

इजराइल दूतावास विस्फोट

संदिग्ध नजर आए दो युवक, दिल्ली में बढ़ाई गई सुरक्षा

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित इजराइल के दूतावास के पास मंगलवार शाम को हुए विस्फोट मामले में सीसीटीवी कैमरे में दो संदिग्ध युवक दिखाई दिए हैं. सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि विस्फोट से कुछ देर पहले दो युवकों को घटनास्थल के करीब सड़क पर चलते हुए देखा जा सकता है। सुरक्षा एजेंसियों ने अब्दुल कलाम रोड और पृथ्वीराज रोड पर कई सीसीटीवी कैमरे के फुटेज खंगाले हैं। एक अधिकारी ने कहा कि इस घटना के बाद दिल्ली पुलिस ने सुरक्षा कड़ी करते हुए राष्ट्रीय राजधानी में गश्त बढ़ा दी है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) ने फोरेंसिक विशेषज्ञों के साथ बुधवार को सुबह घटनास्थल का दौरा किया। उन्होंने पत्तियों व घास के नमूने एकत्र किए, जिसके बारे में उन्हें संदेह था कि इसमें विस्फोट में इस्तेमाल किए गए रसायन हो सकते हैं। अधिकारी ने कहा कि पुलिस ने चाणक्यपुरी स्थित दूतावास के पास विस्फोट के बाद राष्ट्रीय राजधानी में भी सुरक्षा बढ़ा दी है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में इजराइल दूतावास और यहूदी प्रतिष्ठानों के आसपास के इलाकों में सुरक्षाकर्मियों की निगरानी बढ़ाई गई है। घटनास्थल का दौरा करने वाले सुरक्षा अधिकारियों ने कहा कि चूंकि घटनास्थल पर विस्फोटक का कोई अवशेष नहीं मिला, इसलिए ''रासायनिक विस्फोट की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। अधिकारियों ने बताया कि घटनास्थल से इजराइली राजदूत को ''अभद्र भाषा में संबोधित एक पत्र बरामद किया गया है. उन्होंने बताया कि इस घटना में कोई घायल नहीं हुआ है। अधिकारियों ने कहा कि फिंगर प्रिंट की पहचान के लिए पत्र को फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला भेजा गया है। एक पुलिस सूत्र ने कहा, ''यह अंग्रेजी भाषा में लिखा गया एक पृष्ठ का पत्र है. इसके तार किसी 'सर अल्लाह रेजिस्टेंस नामक संगठन से जुड़े होने की आशंका है. पत्र में यहूदी, फलस्तीन और गाजा जैसे शब्द लिखे गए हैं। विस्फोट और पत्र बरामद होना दूतावास के समीप 2021 में हुए विस्फोट की याद दिलाता है जिसमें कुछ कारें क्षतिग्रस्त हुई थीं। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने उस मामले की जांच की थी।

मामले में इस्राइल ने क्या कहा है?

नई दिल्ली। विस्फोट के बाद इस्राइली राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने भारत में अपने नागरिकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। घटना को लेकर इस्राइल ने कहा है कि यह आतंकी हमला हो सकता है। इस्राइल ने यहूदी और इस्राइली नागरिकों के लिए एजवाइजरी जारी की है और उन्हें संभावित खतरे से बचने के लिए आगाह किया गया है। एडवाइजरी में यह भी कहा गया है कि अगर कोई कहीं जाए तो अपनी पहचान आम लोगों के साथ साझा न करें और तस्वीरें सोशल मीडिया पर डालने में परहेज करें।

धमाका करने वालों का मकसद क्या हो सकता है?

नई दिल्ली। पुलिस सूत्रों ने बताया कि उन्हें इस्राइल राजदूत को संबोधित करते हुए लिखा गया एक पत्र मिला है। सूत्रों ने बताया कि यह पत्र टाइप किया हुआ है जिसमें काफी अपमानजनक भाषा लिखी गई है। इसमें गाजा में इस्राइली कार्रवाई का जिक्र किया गया है और बदले की बात भी लिखी गई है। दिल्ली पुलिस के सूत्रों ने बताया कि उन्हें एक या दो व्यक्तियों के शामिल होने का संदेह है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही हैं और दूतावास वाले इलाके से मोबाइल फोन टावर डंप डेटा का विश्लेषण भी किया जा रहा है।

पहले क्या घटनाएं घटी थीं?

नई दिल्ली। मंगलवार की घटना से पहले भी दो बार इस्राइली दूतावास को निशाना बनाया गया था। पहली घटना फरवरी 2012 में घटी, जब एक अज्ञात मोटरसाइकिल चालक ने इस्राइली दूतावास की टोयोटा इनोवा कार पर स्टिकी बम रख दिया था। इस घटना में वाहन में मौजूद अधिकारी और चालक घायल हो गए थे। उस समय पुलिस जांच में पाया गया था कि घटना के पीछे ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स का हाथ था। जनवरी 2021 में भी इस्राइली दूतावास के पास कम तीव्रता का विस्फोट हुआ। हालांकि, घटना में कोई हताहत नहीं हुआ। घटना में इस्तेमाल आईडी के कारण सड़क पर एक गड्ढा हो गया था और आसपास खड़ी तीन कारें भी क्षतिग्रस्त हो गई थीं। सुरक्षा एजेंसियों को घटनास्थल पर इस्राइल दूतावास के राजदूत को संबोधित एक पत्र भी मिला था। पहले जांच दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल कर रही थी जिसे बाद में एनआईए को सौंप दिया गया। अधिकारियों ने कहा था कि यह हमला ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स की कुद्स फोर्स शाखा द्वारा किया गया था।

पीएम मोदी के आगमन पर त्रेतायुगीन वैभव के अनुरूप सुसज्जित होगी धर्मनगरी अयोध्या

एजेंसी

लखनऊ। अयोध्या को त्रेतायुगीन वैभव के अनुरूप सुसज्जित किया जा रहा है। इसके लिए अयोध्या व आसपास के जनपदों के साथ ही पश्चिम बंगाल, मथुरा व सीतापुर के 700-800 कारीगर जुटे हुए हैं। रामनगरी को सुसज्जित करने में विदेशी फूलों से लेकर अशोक पत्ती, गेंदे की खुशबू तक का इस्तेमाल किया जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन पर त्रेतायुगीन वैभव के अनुरूप रामनगरी सुसज्जित होने लगी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर पीएम के अभूतपूर्व स्वागत की तैयारी की जा रही है। देशी-विदेशी फूलों और तोरणद्वार के जरिए अयोध्या को दुल्हन की तरह तैयार किया जा रहा है। वहीं पुष्पवर्षा के जरिए पीएम के अभिनंदन की भी तैयारी की जा रही है। इस काम में अयोध्या व आसपास के जनपदों के साथ ही पश्चिम बंगाल, मथुरा व सीतापुर के 700-800 कारीगर जुटे हैं। यहां कोलकाता, कानपुर, दिल्ली, बेंगलुरु आदि स्थानों से फूल मंगाए जा रहे हैं।

एयरपोर्ट बाईपास से फोरलेन धर्मपथ, साकेत पेट्रोल पंप हनुमानगढ़ी के रास्ते लगभग 9 किमी. से अधिक दूरी तय करने में दो दर्जन से अधिक तोरणद्वार बनाए जाएंगे। यहां रेलिंग डिवाइडर-मूर्तियों आदि को फूलों व बुके से सजाया जाएगा। पीएम के स्वागत के मद्देनजर अभूतपूर्व तैयारी की जा रही है। राममय अयोध्या के भव्य तोरणद्वार काफी शानदार होंगे।

अयोध्या के रहने वाले बालकृष्ण सैनी अपनी टीम के साथ काम में जुटे हैं। उन्होंने बताया कि पीएम के स्वागत में देशी-विदेशी फूलों से अयोध्या महक उठेगी। लगभग 20 डीसीएम से अधिक फूल (अनुमानित 1,44,000 कुंतल) लगाए जाएंगे। इनमें कोलकाता से गेंदा की लड़ी, कानपुर व दिल्ली से अशोक की पत्ती, दिल्ली से कर फ्लावर व बेंगलुरु से विदेशी फूल आएंगे। इनमें आर्केड, इनथेरियम, कोनिया, कार्नेसन, टाटा रोज, स्टार, डेली, जरबेरा के साथ ही विक्टोरिया, सन ऑफ इंडिया, पैराग्रास, मनोकोमली, चाइना पत्ती, घोड़ापाम, एरिका पान आदि से सजावट की जाएगी। वहीं गेंदा, गुलाब, रजनीगंधा, कनेर, डहलिया आदि फूल से भी रास्तों को सजाया जाएगा।

सैनी के मुताबिक उनकी टीम के 700-800 कारीगर रात दिन एक हुए हैं। कारीगरों ने बताया कि सजावट उनका काम है, लेकिन यह अभूतपूर्व हो, ऐसी मन की आवाज है। पीएम मोदी व सीएम योगी ने अयोध्या को अलग ही पहचान दिला दी। इन दोनों का स्वागत करना हर किसी के मन में है। इस कार्य में मथुरा-वृंदावन के 250, सीतापुर के 250, पश्चिम बंगाल के 150 कारीगर, स्थानीय स्तर पर 75 कारीगर लगे हैं। पीएम के आगमन में महज तीन दिन शेष होने के कारण कार्य काफी तेज गति से किया जा रहा है।

दिल्ली में होने लगी कोरोना की वापसी

रोज हो रहे 400 आरटी-पीसीआर टेस्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में एक बार फिर कोरोना ने तेजी से पैर पसारने शुरू कर दिए हैं। नए मामले सामने आते ही दिल्ली सरकार ने लोगों से सतर्क रहने के लिए कहा है। इसके साथ ही राजधानी में आरटीपीसीआर टेस्ट भी शुरू कर दिए गए हैं। मिली जानकारी के मुताबिक, बीते मंगलवार को कोरोना के दो और नए मामले सामने आए थे। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री और आप नेता सौरभ भारद्वाज ने बताया कि हमने दिल्ली में आरटीपीसीआर परीक्षण को शुरू कर दिया है। हर दिन 250 से 400 आरटीपीसीआर टेस्ट किए जा रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, बीते दिन दिल्ली में दो नए मरीज मिले। फिलहाल, अभी अस्पताल में कुल चार से पांच मरीज भर्ती हैं। अभी तक किसी भी मरीज की संक्रमण की वजह से मौत नहीं हुई है।

दिल्ली में कोरोना के नो मामले हैं। इनमें से 8 मरीज ऑक्सीजन बेड पर भर्ती हैं। दिल्ली में कोरोना के सभी मरीजों के नमूने जिनोम अनुक्रम के लिए प्रयोगशालाओं में भेजे जा रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक दिल्ली में हर दिन संक्रमण के औसतन 3-4 मामले सामने आ रहे हैं। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज का कहना है कि सरकार कोरोना वायरस संक्रमण के संभावित प्रसार से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार है। सभी अस्पतालों में जरूरत के आधार पर बिस्तर तैयार हैं। कोरोना महामारी एक बार फिर तेजी से पैर पसार रहा है। हर दिन नए मामले सामने आ रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि भारत में सिर्फ एक दिन में कोविड-19 के 529 नए मामले सामने आए हैं। इससे संक्रमण के सक्रिय मामलों की संख्या बढ़कर 4,093 हो गई है। वहीं, देश में जेएन.1 कोविड वेरिएंट के कुल 109 मामले सामने आए हैं। वर्तमान में जेएन.1 उप स्वरूप फैल रहा है, जिसकी आर वैल्यू यानी संक्रमण प्रसार की दर अधिक है। ऐसे में आशंका है कि क्रिसमस और नए साल की वजह से जनवरी पहले सप्ताह में दिखाई देने वाला उछाल उसके आगामी तीन सप्ताह और रह सकता है। इसके बाद ही कोरोना के ट्रेंड में किसी बदलाव की उम्मीद की जा सकती है। हालांकि, अधिकारियों का यह भी कहना है कि कोरोना का नया उपस्वरूप कब तक आबादी में स्थिर रह सकता है, इसके बारे में अनुमान लगाना संभव नहीं है।

उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को 10 से ज्यादा सीटें देने के पक्ष में नहीं: अखिलेश

एजेंसी

लखनऊ। अगर हम उनके पिछले चुनाव गठबंधन पर नजर डालें, तो हम पाते हैं कि इसका कोई परिणाम नहीं निकला और विधानसभा चुनाव 2017 में बुरी तरह विफल रहा। सपा-कांग्रेस गठबंधन ने 403 में से केवल 54 सीटें जीतीं।

लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर राजनीतिक दल अपनी तैयारियों को शुरू कर चुके हैं। भाजपा के खिलाफ 26 से ज्यादा दलों ने इंडिया नाम का गठबंधन बनाया है। इसको लेकर उत्तर प्रदेश से बड़ी खबर आ रही है। समाजवादी पार्टी (एसपी) लोकसभा चुनाव 2024 के लिए उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को 10 सीटें और राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) को 5-7 सीटें देने की पेशकश कर सकती है। सूत्रों ने इस बात की जानकारी दी। यह तीनों दल इंडिया गठबंधन के हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में अखिलेश यादव के नेतृत्व वाली सपा और मल्लिकार्जुन खड़गे के नेतृत्व वाली कांग्रेस के बीच प्यार और नफरत का रिश्ता रहा है। सबसे पुरानी पार्टी और सपा तब करीब आए जब बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आगामी लोकसभा चुनावों में नरेंद्र मोदी-अमित शाह के नेतृत्व वाली भगवा पार्टी को एकजुट चुनौती देने के लिए भाजपा विरोधी गुट बनाना शुरू किया। लेकिन, आश्चर्यजनक रूप से उनके रिश्ते में खटास तब आ गई जब कांग्रेस नेता कमल नाथ और अखिलेश यादव के बीच मध्य प्रदेश चुनाव में सीट बंटवारे को लेकर तीखी नोकझोंक हुई, जो राज्य चुनाव में बिना किसी दोस्ती के साथ समाप्त हुई और यूपी के पूर्व प्रमुख को यह कहने के लिए भी प्रेरित किया कि कांग्रेस एक चालाक पार्टी है। अगर हम उनके पिछले चुनाव गठबंधन पर नजर डालें, तो हम पाते हैं कि इसका कोई परिणाम नहीं निकला और विधानसभा चुनाव 2017 में बुरी तरह विफल रहा। सपा-कांग्रेस गठबंधन ने 403 में से केवल 54 सीटें जीतीं। उस समय, मुलायम सिंह यादव ने इसके लिए कांग्रेस के साथ गठबंधन को जिम्मेदार ठहराया था। इस बीच, हाल ही में संपन्न पांच राज्यों के चुनावों के बाद दोनों पार्टियां दोस्ती मोड में लौट आई, उन्होंने एक-दूसरे के खिलाफ अपने सुर नरम कर दिए और अब वे एकजुट विपक्ष की बात कर रहे हैं। 19 दिसंबर को द्ब.ह्.ष्.द्ब ब्लॉक पार्टियों की आखिरी बैठक में, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि ब्लॉक राज्य स्तर पर सीट-बंटवारे की बातचीत पर ध्यान केंद्रित करेगा और देश भर में सार्वजनिक बैठकें आयोजित करेगा, इस बात पर जोर देते हुए कि प्रधान मंत्री पद के उम्मीदवार पर कोई भी निर्णय होगा चुनाव के बाद लिया गया. सूत्रों ने कहा कि इंडिया ब्लॉक पार्टियों ने जनवरी के दूसरे सप्ताह तक सीट बंटवारे को अंतिम रूप देने का फैसला किया है।

सीएम योगी पहुंचे संगमनगरी

माघ मेले और कुंभ की तैयारियों का लिया जायजा

एजेंसी

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करीब चार घंटे की देरी से प्रयागराज पहुंचे। पुलिस लाइंस स्थित मैदान पर बने हेलीपैड पर करीब साढ़े तीन बजे योगी का हेलीकॉप्टर उतरा। इसके बाद वह संगम नोज पर पहुंचे और विधि विधान से गंगा का पूजन किया। इसके बाद कुंभ की तैयारियों समेत माघ मेले का व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनथ करीब चार घंटे की देरी से प्रयागराज पहुंचे। पुलिस लाइंस स्थित मैदान पर बने हेलीपैड पर करीब साढ़े तीन बजे योगी का हेलीकॉप्टर उतरा। इसके बाद वह संगम नोज पर पहुंचे और विधि विधान से गंगा का पूजन किया। इसके बाद वह अक्षय वट पहुंचे। मुख्यमंत्री श्री बड़े हनुमानजी का दर्शन भी कर सकते हैं। इसको लेकर सारी तैयारियां की गई हैं। इस दौरान योगी ने कुंभ की तैयारियों के साथ माघ मेले की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मेलाधिकारी विजय किरन आनंद ने उन्हें विस्तार से जानकारी दी। इस मौके पर तमाम अधिकारी मौजूद रहे। सीएम योगी माघ मेले में चल रहे कार्यों की समीक्षा करेंगे।इसके पूर्व हेलीकॉप्टर से उतरने पर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी, सांसद केसरी देवी पटेल, महापौर उमेशचंद गणेश केसरवानी, विधायक हर्षवर्धन बाजपेयी, एमएलसी सुरेंद्र चौधरी, सतुआ बाबा आदि ने स्वागत किया।

सीएम योगी ने संगम तट पर स्थित श्री बड़े हनुमानजी का पूजन अर्चन कर आरती उतारी। सीएम योगी के आगमन के दौरान सुरक्षा व्यवस्था का व्यापक बंदोबस्त रहामाननीय मुख्यमंत्री योगी ने किला घाट, दशाश्वमेघ घाट के निर्माण कार्य एवं अक्षयवट, पातालपुरी व सरस्वती कूप कॉरिडोर आदि के कार्यों का निरीक्षण एवं समीक्षा की। मुख्यमंत्री के साथ जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव के अलावा लोक निर्माण मंत्री जितिन प्रसाद, औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी सहित सभी विधायक मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के शहर आगमन के दौरान उनकी सुरक्षा में तीन हजार से ज्यादा जवानों की तैनाती की जाएगी। सुबेदारगंज से लेकर संगम तक चप्पे-चप्पे पर जवान मुस्तैद किए जाएंगे। मुख्यमंत्री माघ मेले में सुरक्षा व्यवस्था की तैयारियों की भी समीक्षा करेंगे, ऐसे में पुलिस विभाग देर रात तक तैयारियों में जुटा रहा।

मुख्यमंत्री के आगमन के दौरान आरएएफ व पीएसी के जवानों की भी तैनाती की जाएगी। दोनों बलों को मिलाकर 20 कंपनियों को लगाया जाएगा। इसके अलावा 50 से ज्यादा राजपत्रित अधिकारियों को भी मुस्तैद किया जाएगा। इंस्पेक्टर, दरोगा, मुख्य आरक्षी व आरक्षी मिलाकर करीब 1500 पुलिसकर्मियों को भी तैनात किया जाएगा। शहर के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों के थानों की फोर्स भी वीआईपी ड्यूटी में लगाई गई है।

वीआईपी आगमन के मद्देनजर पुलिस आयुक्त रमित शर्मा ने मंगलवार शाम पुलिस लाइन में मातहतों को विस्तृत दिशा निर्देश दिए। उधर मुख्यमंत्री के आगमन से पूर्व फ्लीट रिहर्सल भी हुआ। ब्रीफिंग में डीसीपी नगर दीपक भूकर, डीसीपी यमुनानगर अभिनव त्यागी, डीसीपी गंगानगर अभिषेक भारती, डीसीपी प्रोटोकॉल आशुतोष द्विवेदी समेत अन्य अफसर, कर्मचारी मौजूद रहे। संगम क्षेत्र में मुख्यमंत्री को संगम तट पर मां गंगा का विधि विधान से पूजन तीर्थ पुरोहितो ने कराया। आचार्य दीपू शास्त्री की देखरेख में पूजन किया गया। पं राजेंद्र पालीवाल, राजेश तिवारी, संतोष भारद्वाज, अमरनाथ तिवारी सहित 11 तीर्थ पुरोहित मौजूद थे। पूजन के बाद मुख्यमंत्री को प्रसाद देते समय तीर्थ पुरोहित राजेंद्र पालीवाल ने मांग किया कि संगम क्षेत्र में किसी भी उचित स्थान पर तीर्थराज प्रयागराज की एक विशाल प्रतिमा कराई जाए, जो सम्पूर्ण मेला क्षेत्र में समस्त श्रद्धालुओं को दश?न मिल सके। माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा समय आने दे सब होगा

पीजीआई में आग से प्रभावित हुई ओटी में फिर से ऑपरेशन हुए शुरू

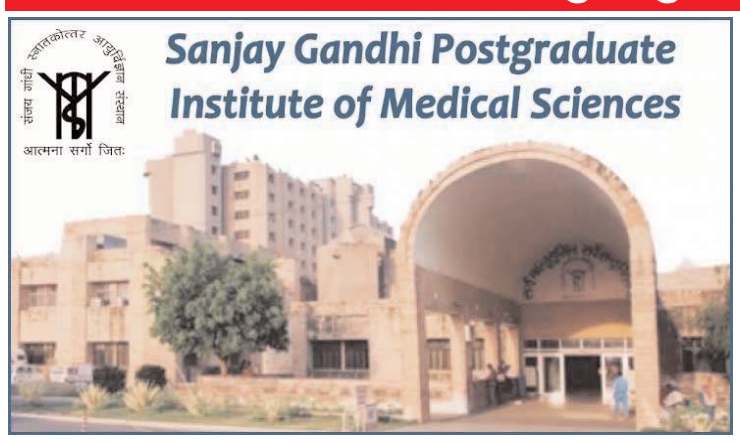

द अचीवर टाइम्स रघुनाथ सिंह

लखनऊ। पीजीआई में आग से प्रभावित ओटी दोबारा शुरू हो गई हैं। ओटी काम्प्लेक्स में अग्निकाण्ड से ऑपरेशन थियेटर में जो भी नुकसान हुआ था। संस्थान प्रशासन ने उसकी मरम्मत करा दी है। इंडोक्राइन सर्जरी और सीवीटीएस समेत दूसरे विभाग के ऑपरेशन शुरू हो गए। अग्निकाण्ड की वजह से टाले गए मरीजों को जल्द ऑपरेशन होंगे। ऑपरेशन शुरू होने से दिल, थायराइड समेत दूसरी बीमारियों के मरीजों को बड़ी राहत मिली है।

संस्थान में 18 दिसम्बर को ऑपरेशन के दौरान इंडो क्राइन सर्जरी की ओटी में मानीटर में स्पार्क से आग लग गई थी। आग भड़कने से पास के सीवीटीएस विभाग की ओटी को चपेट में ले लिया था। अग्निकाण्ड से ओटी काॅम्प्लेक्स की अन्य ओटी भी प्रभावित हुई थी। जिसके चलते मरीजों के ऑपरेशन टाल दिये गए थे। संस्थान प्रशासन ने इन मरीजों के ऑपरेशन के लिए अस्थायी ओटी की व्यवस्था की थी। पीजीआई निदेशक डॉ. आरके धीमान का कहना है कि ओटी कॉम्प्लेक्स में 13 ऑपरेशन थियेटर हैं। इनमें से आग से दो ओटी ज्यादा प्रभावित हुई थी। अन्य ओटी में मरम्मत का काम पूरा हो गया है। बुधवार से इंडोक्राइन सर्जरी और सीवीटीएस की ओटी दोबारा से शुरू कर दी गई है। रोबोटिक ओटी भी चालू कर दी गई है। आग घटना की वजह से जिन मरीजों के ऑपरेशन नहीं हो पाए हैं। उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी। अलग-अलग विभाग के डॉक्टर मरीजों को फोन करके ऑपरेशन के लिए बुला रहे हैं। वार्डों में ऑपरेशन वाले मरीजों की भर्ती शुरू हो गई है।

दो सप्ताह से अधिक खांसी रहने पर टीबी की जांच जरूरी- डीटीओ

डीएफएस सेंटर पर टीबी संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन

❖ 66 कर्मचारियों की हुई स्क्रीनिंग, 46 स्पुटम भी लिए गए।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। संयुक्त निदेशक अतिहिमीकृत वीर्य उत्पादन (डीएफएस) केंद्र, बाबूगढ़ के संयुक्त निदेशक डा. आरबी राम के आग्रह पर बुधवार को केंद्र पर पहुंची जिला क्षय रोग विभाग की टीम ने सभी कर्मचारियों का टीबी के प्रति संवेदीकरण किया। कर्मचारियों की टीबी के लक्षणों के साथ ही राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी गई। संवेदीकरण कार्यशाला के दौरान डीएफएस केंद्र से डिप्टी डायरेक्टर डा. हयात वारिश सैफी और पशु चिकित्सा अधिकारी डा. साक्षी वशिष्ठ मौजूद रहीं। जिला क्षय रोग विभाग की टीम मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) डा. सुनील कुमार त्यागी के निर्देशन और जिला क्षय रोग अधिकारी (डीटीओ) डा. राजेश सिंह के नेतृत्व में पहुंची थी। टीम ने केंद्र के सभी 66 कर्मचारियों की स्क्रीनिंग की और उनमें से 46 कर्मचारियों का स्पुटम (बलगम का नमूना) जांच के लिए लिया। **डीटीओ डा. राजेश सिंह ने कहा** - दो सप्ताह से अधिक खांसी या बुखार, खांसी में बलगम या खून आना, रात में सोते समय पसीना आना, भूख न लगना, वजन कम होना या सीने में दर्द रहना टीबी के लक्षण हो सकते हैं। इनमें से कोई लक्षण नजर आने पर तत्काल टीबी की जांच जरूरी है। इसके साथ ही यदि किसी परिवार में टीबी का रोगी है तो परिवार के सभी सदस्यों को समय-समय पर टीबी की जांच कराते रहना चाहिए। सभी सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों पर टीबी की जांच और उपचार की सुविधा उपलब्ध है। जल्दी जांच और जांच में टीबी की पुष्टि होने पर ही टीबी मुक्त भारत का संकल्प पूरा हो सकता है। वर्ष 2025 तक टीबी मुक्त भारत का संकल्प पूरा करने के लिए विभाग फोकस्ड जांच कर रहा है। टोल कर्मचारियों की स्क्रीनिंग भी इसी क्रम में की जा रही है। **डीटीओ ने कहा** - कोई विभाग, कारखाना या कोई भी प्रतिष्ठान अपने कर्मचारियों की जांच कराकर इस संकल्प को पूरा करने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकता है। जिला क्षय रोग विभाग का प्रयास है कि अधिक से अधिक लक्षणयुक्त व्यक्तियों की जांच हो। जिला पीपीएम समन्वयक सुशील चौधरी ने कहा कि जांच में टीबी की पुष्टि होने पर घबराने की जरूरत नहीं है। विभाग के पास बेहतर उपचार उपलब्ध है। उपचार के साथ सरकार की ओर से बेहतर पोषण के लिए हर माह पांच सौ रुपए की आर्थिक मदद भी निक्षय पोषण योजना के तहत दी जाती है। जिला क्षय रोग विभाग की स्क्रीनिंग टीम में वरिष्ठ उपचार पर्यवेक्षक दीपक और लैब टेक्नीशियन राजेश भी शामिल रहे। डीएफएस केंद्र से डा. समीर बिंदल, डा. सचिन चौधरी और लैब असिस्टेंट अशोक कुमार का सहयोग रहा।

एक नज़र

युवती को बहला -फुसलाकार भगा ले जाने का आरोप

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

उन्नाव। माखी थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी युवती को अन्य गांव का युवक भगा ले गया था। पुलिस ने उन्नाव से युवती को बरामद कर मेडिकल के लिए भेज दिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है । थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी 19 वर्ष की युवती के पिता ने पुलिस को तहरीर देकर कहा कि 24 दिसम्बर को बेटी शौच के लिए गई थी। वापस नहीं लौटी। काफी खोजबीन के बाद उसका कहीं पता नहीं चला। पिता की तहरीर पर पुलिस ने पुरवा कोतवाली क्षेत्र के बैगांव निवासी रमाकांत के विरुद्ध. बहला-फुसलाकर अपहरण की रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच शुरु की । कार्यवाहक थाना प्रभारी राजपाल ने बताया कि युवती को उन्नाव स्टेशन से बरामद कर मेडिकल के लिए भेज दिया है। युवक की तलाश की जा रही है।

शीत लहर के चलते 28 व 29 दिसंबर तक कक्षा 1 से 12वी तक स्कूल का अवकाश घोषित

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। शीत लहर के दृष्टिगत जिला अधिकारी के द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में 28 दिसंबर से 29 दिसंबर तक कक्षा 1 से 12 तक के समस्त परिषदीय, राजकीय, सहायता प्राप्त एवं मान्यता प्राप्त विद्यालयों मैं अध्यनरत बच्चों का अवकाश घोषित किया जाता है तथा विद्यालय में कार्यरत अध्यापक यथावत उपस्थित रहते हुए यू डायस फीडिंग एवं अन्य विभाग के कार्य उक्त अवधि में पूर्ण करेंगे। उक्त का अनुपालन कड़ाई से सुनिश्चित किया जाए। आज्ञा से जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं जिला विद्यालय निरीक्षक हापुड़

एस. के. डी. एकेडमी वृन्दावन योजना ब्राँच दौड़ प्रतियोगिता में भार्गवी ने बाज़ी मारी

द अचीवर टाइम्स रघुनाथ सिंह

लखनऊ। दौड़ प्रतियोगिता में पहला स्थान भार्गवी दूसरा स्थान आध्या सिंह तथा तीसरा स्थान अदिती का रहा। एस के डी एकेडमी वृंदाबन योजना रायबरेली रोड लखनऊ में दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे सभी बच्चों ने बड़ चड कर हिस्सा लिया एस के डी की प्रिंसिपल अर्चना ने बताया की हमारे यहाँ निदेशक मनीष सिंह के निर्देशन से प्रति वर्ष ऐसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जिस से बच्चों का मनोबल बढ़ता है। इस मौक़े पर क्लास टीचर नेहा निशा सिंह मंजू गेम टीचर उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश पावर कार्पोरेशन के संविदा कर्मचारी ने हड़ताल और उच्च अधिकारियो पर लगाये गम्भीर आरोप

द अचीवर टाइम्स सुधांशु अवस्थी

सीतापुर। जहां एक तरफ योगी सरकार भ्रष्टाचार मुक्त उत्तर प्रदेश का दक्ष भरती है ।वही एक संविदा कर्मी को अवर अभियंता (विधुत)द्वारा नौकरी के लिये पैसे मांगना योगी जी के भ्रष्टाचार मुक्त सपने को चूर चूर करता है।देना योउत्तर प्रदेश पावर कार्पोरेशन के संविदा कर्मचारियो ने अपनी मांगो को लेकर धरना पदर्शन किया वही कर्मचारियो ने एसी पर तानाशाही का आरोप लगाया ।वही प्रदीप कुमार ने अवर अभियंता संतोष कुमार पर तीस हजार लेकर संविदा पर नौकरी का आरोप लगाया है।अब देखना है खबर चलने पर संविदा कर्मचारियो प्रशासन न्याय दे पाता है या यू हि आउटसोर्सिग से रखे गये कर्मचारियो ऐसे लूटा जाता रहेगा।

निर्माणाधीन मकान की दीवार गिरने से बीएससी के छात्र की मृत्यु

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हरदोई। विकासखंड कछौना के अंतर्गत ग्राम कहली में निर्माणाधीन घर/मकान की दीवार गिरने से 21 वर्षीय छात्र की मृत्यु हो गई। इस घटना से परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। बताते चलें विकास कछौना के ग्राम कहली में दिलीप जायसवाल निवासी ग्राम कहली थाना कासिमपुर का मकान निर्माण अधीन है। शुक्रवार की अपराह्न अचानक निर्माणाधीन मकान की दीवार गिरने से छात्र अमन जयसवाल पुत्र दिलीप जायसवाल निवासी ग्राम कहली थाना कासिमपुर दीवार के मलबे में दबने से मौके पर ही दर्दनाक मृत्यु हो गई। जानकारी के अनुसार जब दीवार गिरी तब अमन जयसवाल उसी के पास से गुजर रहे थे। इसी दौरान वह दीवार की चपेट में आ गए। जिससे दीवार के मलबे में दबने से उनकी मृत्यु हो गई। मृतक छात्र जय सुभाष डिग्री कॉलेज में बीएससी का छात्र था। परिजनों ने जानकारी के अभाव में बिना पोस्टमार्टम कराए अंतिम संस्कार कर दिया है। इस हृदय विदारक घटना से गांव में मातम छा गया। वहीं परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के तहत दिया यातायात नियमों का पालन करने का संदेश

द अचीवर टाइम्स, प्रभात तिवारी

लखनऊ। सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के तहत बुधवार को अवध चौराहा पर पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा वाहन चालकों को यातायात नियमों की जानकारी दी गई। इसमें वाहन चालकों से सड़क पर चलते समय अपने ही लेने का प्रयोग करने समेत अन्य नियमों का कड़ाई से पालन करने के लिए प्रेरित किया गया। सडक सुरक्षा पखवाड़ा 15 से 30 दिसम्बर तक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं लोक निर्माण मंत्री जितिन प्रसाद के निर्देशन में आयोजित किया जा रहा है। आज अवध चौराहे पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे विभाग ने वाहन चालकों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरुक कर दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश बताएं साथ ही उनका सख्ती से पालन करने को भी कहा।

पट्टे का तालाब बना टमाटर खेती करने का जरिया नहीं पल सकती मछलियां

तालाब में टमाटर की खेती किये जाने के मामले में अब तक नहीं हुई कार्यवाही

द अचीवर टाइम्स संवाददाता कुन्दन सिंह

हसनगंज उन्नाव। नगर पंचायत न्योतनी में मीठा तालाब में मछलियों की जगह टमाटर की खेती किये जाने की खबर प्रकाशित होने के बाद नगर पंचायत न्योतनी के अधिशासी अधिकारी संतोष कुमार चौधरी ने मौके का निरीक्षण किया था जिसमे उन्होंने पाया था कि तालाब में नियम विरुद्ध मछली पालन की जगह टमाटर की खेती की जा रही है और तालाब में हार्वेस्टिंग सिस्टम कराकर तालाब का पानी सूखा दिया गया है जिस पर उन्होंने तालाब पट्टा धारक पर नियम के अनुसार कार्यवाही की बात कही थी पर कई दिन बीत जाने के बाद भी कोई कार्यवाही नही हुई। बता दें तालाब संरक्षण के पीछे सरकार की जो मंशा है कि इन तालाबो से वन्य जीवों व पंछियों को पीने के लिए पानी मिलेगा साथ ही भूगर्भ जल भी संरक्षित होगा पर नगर पंचायत न्योतनी के जिम्मेदार सरकार की मंशा और योजनाओं को पलीता लगाने से बाज नही आ रहे है।जिम्मेदारों की ही सह पर नगर के सुरक्षित तालाब को खेत बना कर उसके प्राकृतिक रूप से खिलवाड़ किया गया है नगर के जिम्मेदार जिन्होंने जांच भी की पर कार्यवाही कोई नही इसके पीछे इनकी मंसा क्या हो सकती है या है ये समझना शायद मुश्किल नही होगा।

इस मामले में एसडीएम हसनगंज नवीन चन्द्र ने एक संवाददाता से बात करने पर बताया मामला संज्ञान में आया है जांच कराई जाएगी मामला सही पाए जाने पर विधिक कार्यवाही की जाएगी।अधिशासी अधिकारी द्वारा मामले में कार्यवाही न किये जाने के सवाल पर उन्होंने कहा यदि मामले में अधिशासी अधिकारी को गलत पाए गये तो उनके खिलाफ भी कार्यवाही के लिए लिखा जाएगा।

12 लाख की अफीम बरामद दो अफीम तस्कर भी गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। शहर कोतवाली पुलिस व एसओजी टीम ने दो अफीम तस्करों को गिरफ्तार कर लिया। हरदोई से जगदीशपुर जाने वाली रोड पर मम्मरपुर मोड़ के निकट पकड़े गए तस्करों के पास से 12 लाख रुपए की अफीम भी बरामद हुई है। एसपी केसी गोस्वामी के मुताबिक 26 दिसंबर की शाम को एएसपी नृपेंद्र सिंह,सीओ सिटी अंकित मिश्रा के नेतृत्व में शहर कोतवाली इंस्पेक्टर संजय पांडेय व एसओजी टीम अवैध मादक पदार्थ तस्करों की तलाश में वाहन चेकिंग कर रही थी।इस दौरान मम्मरपुर के पास एक कार आती दिखाई दी।

बाजार में अफीम कीमत 12 लाख रुपये

पुलिस के द्वारा रोके जाने पर चालक मम्मरपुर की ओर गाड़ी मोडकर भागने लगा। पुलिस ने नाकाबंदी करते हुए कार को पकड़ लिया। गाड़ी में सवार पाली थाना क्षेत्र के तेजराम व सुनील कुमार के पास से एक किलो 16 ग्राम अफीम बरामद हुई। जिसकी बाजार में कीमत 12 लाख रुपये बताई जा रही है. दोनो के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई के साथ जेल भेज दिया गया है।

ट्रको मे लगी बैटरी की चोरी करने वाले चोर को 24 घंटे के अंदर पुलिस ने किया गिरफ्तार

द, अचीवर टाइम्स पप्पू उपाध्याय

कटनी। पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन के निर्देशन व मनोज केडिया अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, एवं विजय राघवगढ़ एसडीओपी के.पी. सिंह के मार्गदर्शन में थाना कैमोर पुलिस द्वारा ग्राम अमहेटा में रात्रि के समय रोड के किनारे खड़े ट्रकों व बल्करो से बैटरी चोरी करने वाले चोर व चोरी की हुई बैटरी खरीदने वाले आरोपी को मुखबिर की सूचना के आधार पर रेड कार्यवाही गई जिसमें पुलिस को सफलता हासिल हुई, कार्यवाही दिनांक 25/12/2023 फरियादी सरोत्तम लाल ने थाने पर रिपोर्ट किया कि उसके ड्राइवरों ने दिनांक 25/12/2023 को ट्रक क्रमांक MP20 ZG 2926 व बलकर क्रमांक CG 04PH 7913 को माल अनलोड करके ग्राम अमहेटा कंपनी गेट के आगे रोड किनारे पर खड़ा कर दिया था व दोनो ड्राइवर गाड़ी में ही सो गए थे सुबह उठकर देख तो ट्रक व बलकर मैं लगी हुई बैटरियां नहीं थी जिसे कोई अज्ञात चोर रात्रि के समय चोरी कर ले गया है रिपोर्ट पर पुलिस ने अपराध क्रमांक 447/23 धारा 379 की कायम कर अज्ञात आरोपी की तलाश पतासाजी की गई जो मुखबिर की सूचना के आधार पर आरोपी अभिलाष कोल उर्फ अप्पू पिता गंगा कोल उम्र 18 साल नि वार्ड न 03 बिलदरा मैहर व राजू उर्फ राजेश गुप्ता पिता बुद्धुलाल गुप्ता उम्र 48 साल नि ग्राम अमहेटा कैमोर और आरोपी को गिरफ्तार कर चोरी गई बैट्रियां कीमती 60,000/- रू बरामद कर आरोपीगणों को न्यायालय पेश किया। उक्त कार्यवाही में - दिनेश करोसिया, प्र आर 509 प्रेम शंकर, प्र आर 206 चंद्रभान विश्वकर्मा, आर 739 विनोद, आर 216 अजीत सिंह, आर 370 सुशील पटेल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है,

पुलिस थाना विजयराघवगढ़ जिला कटनी अपहृत बालिका को किया दस्तयाब

द, अचीवर टाइम्स पप्पू उपाध्याय

कटनी। पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन के निर्देशन व मनोज केडिया अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, एवं विजयराघवगढ़ एसडीओपी के.पी. सिंह के मार्गदर्शन में अनूप सिंह ठाकुर निरीक्षक थाना प्रभारी विजयराघवगढ़ के नेतृत्व में छः माह पूर्व गुम बालिका को दस्तयाब करने में पुलिस को सफलता हासिल हुई।

दिनांक 16/07/2023 को गुम बालिका का नाना थाना विजयराघवगढ़ आकर बताया कि उसकी नातन घर में अकेली थी जो घर पर नहीं मिलने व वापस नहीं लोटने के कारण आसपास काफी पता तलाश करने के बावजूद भी नहीं मिल पाई है उसे शंका है कि उसकी नातन को किसी अज्ञात व्यक्ति ने अपहरण कर लिया है। उक्त सूचना को पुलिस ने गंभीरता पूर्वक लेते हुए पुलिस ने तत्काल ही अपराध धारा 363 भा द वि का मामला पंजीबद्ध कर विवेचना में जुट गई किंतु गुम बालिका के नाना, नानी कम पढ़े लिखे होने के कारण कोई भी तथ्यात्मक जानकारी पुलिस को नहीं दे पा रहे थे जिस कारण पुलिस अंधेरे में सुई ढूढने जैसा काम कर रही थी, पुलिस ने अपहृत बालिका को ढूढने के लिए लगातार प्रयास करती रही और आसपास उनके सभी रिश्तेदारों के बारे में सभी जगह पता तलाश करने के कारण गुम बालिका जो कि अपने घर में बिना बताये नाशिक तरफ़ मजदूरी करने चली गई थी और पुलिस के लगातार ढूढने के प्रयास के कारण सकुशल वापस घर आई। गुम बालिका से बिना बताए घर से जाने का कारण पूछे जाने पर बताया कि घर में बताने पर घर से बाहर जाने को नहीं मिलता इसलिए नहीं बताए। विजयराघवगढ़ पुलिस ने वैधानिक कार्यवाही करते हुए गुम बालिका को सकुशल उसके परिजनों को सौंप दिया है।

उक्त कार्यवाही में - अनूप सिंह ठाकुर निरीक्षक थाना प्रभारी विजयराघवगढ़, सहायक उप निरीक्षक हिम्मत सिंह, आरक्षक पप्पू प्रजापति आरक्षक चालक मज्जू कोल एवम् महिला आरक्षक नेहा सिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं छात्रों को संदेश संस्था द्वारा निःशुल्क पोषण किट की वितरित

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

धौलाना। स्वयं सेवी संस्था संदेश द्वारा पोषण की और परियोजना के अंतर्गत स्वास्थ्य शिविर का आयोजन कम्पोस्ट विद्यालय बिहारीपुरा में किया गया। जिसमे कक्षा 6 से कक्षा 8 के सभी छात्र छात्राओं के योगासन,मानसिक स्वस्थ, बीएमआई,एचबी व आँखों की जाँच की गयी। जाँच के पश्चात सभी छात्रों को निःशुल्क पोषण किट वितरित की गयीं।विद्यालय की छात्राओं को महावारी स्वच्छता प्रबन्धन के बारे में जागरूक कर उन्हें बायोडिग्रेडेबल सैनेटरी पेड निःशुल्क उपलब्ध कराई गयी। कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए संदेश की सचिव पूनम परिहार ने बताया कि संदेश का लक्ष्य शिक्षा के अधिकार के साथ साथ छात्रों को स्वास्थ्य का भी अधिकार मिले जिसके चलते संस्था द्वारा निःशुल्क स्वस्थ जाँच शिविर का आयोजन करा रही हैं।जाँच के पश्चात स्वास्थ्य के आधार पर सभी को पोषण किट उपलब्ध कराई जाती है। तथा समय समय पर लगातार जाँच कराई जाएगी।सहायक प्रबन्धक राहुल सक्सेना ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की डॉ0 रामबीर सिंह, डॉ नीधि व उनकी टीम ने परीक्षण कार्य किया। विद्यालय के प्रधान अध्यापक राजपाल सिंह व सुनीता रानी,रोहित अरोरा ने संस्था का आभार प्रकट किया तथा इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविरों में विद्यालय सदैव सहयोग करता रहेगा।इस दौरान संस्था परियोजना समन्वयक स्वास्थ्य सुमित कुमार,अनुराग सिंह आदि का सहयोग रहा।

मोदी-योगी सरकार में मंत्री नहीं बने ओपी राजभर

अब सुभासपा के प्लान-बी से BJP में उथल-पुथल मचाने की तैयारी

संवाददाता

लखनऊ। लोकसभा चुनाव में उम्मीदवार उतारने को लेकर सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी ने यूपी की तीन सीटों पर दावा ठोका है। इसमे एक सीट चंदौली भी है। इस सीट से अभी केंद्रीय मंत्री महेंद्र नाथ पांडेय सांसद है। अब चर्चा है कि ओपी राजभर इस सीट से चुनाव लड़ने का मूड बना रहे है। लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर राजनीतिक दल अपनी बिसात बिछाने में जुट गए है। इसी क्रम में सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी ने भी अपनी तैयारियों को जोर देना शुरू कर दिया है। हृष्ठ का हिस्सा बनी सुभासपा ने 2024 लोकसभा चुनाव में कुल 5 लोकसभा सीटों पर चुनाव की इच्छा जाहिर की है। इसमें यूपी की तीन और बिहार की दो सीट शामिल है। उधर सुभासपा के एक दावे ने मोदी सरकार में मंत्री महेंद्र नाथ पांडेय की मुश्किलें बहुत हद तक बढ़ा दी है। बता दें ओपी राजभर के मंत्री बनने में हो रही देरी को लेकर सुभासपा अब अपने प्लान बी पर भी काम कर रही है। दरअसल सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर के लगातार प्रयासों के बाद भी मंत्री बनने की संभावनाएं दिन पर दिन कम होती ही जा रही है। इसको देखते हुए अब सुभासपा ने प्लान बी पर भी काम करना शुरू कर दिया है। इसी को लेकर अब यह चर्चा भी जोरों पर होने लगी है कि ओपी राजभर इस लोकसभा चुनाव में यूपी की चंदौली लोकसभा सीट से चुनाव लड़ सकते हैं। उधर सुभासपा ने यूपी की जिन तीन सीटों पर चुनाव लड़ने का दावा ठोका है, उसमें चंदौली लोकसभा सीट भी शामिल है।

बेटे अरुण राजभर ने की पुष्टि

ओपी राजभर के बेटे अरुण राजभर ने एनबीटी ऑनलाइन से बातचीत में कहा कि ओम प्रकाश राजभर चंदौली सीट से चुनाव लड़ सकते हैं। उन्होंने बताया कि चंदौली सीट पर हमारे साढ़े तीन लाख वोटर हैं। ऐसे में केंद्रीय मंत्री महेंद्र नाथ पांडेय की मुश्किलें बढ़ना तय मानी जा रही है। क्योंकि मोदी सरकार में मंत्री महेंद्र नाथ पांडेय उत्तर प्रदेश की चंदौली से लोकसभा सांसद है। यूपी बीजेपी के अध्यक्ष रहे महेंद्र नाथ पांडेय ने 2014 और 2019 लोकसभा बीजेपी के टिकट पर लड़ा था, दोनों ही चुनावों में महेंद्र नाथ पांडेय ने जीत दर्ज की था।

महेंद्र नाथ पांडेय की सीट पर दावा

चंदौली से बीजेपी सांसद महेंद्र नाथ पांडेय को मोदी सरकार में भारी उद्योग मंत्रालय का जिम्मा सौंपा गया है। अब देखने वाली बात यह होगी कि क्या बीजेपी अपने मंत्री महेंद्र नाथ पांडेय का टिकट काटकर चंदौली सीट अपने सहयोगी सुभासपा को देगी या नहीं। अगर यह सीट सुभासपा के खाते में जाती है तो फिर क्या महेंद्र नाथ पांडेय को किसी दूसरी सीट से चुनाव लड़ने का मौका देगी या नहीं। सुभासपा के चंदौली सीट से चुनाव लड़ने के दावे के बाद अब ये सवाल भी उठने लगे हैं।

नहीं बन रही ओपी राजभर की बात

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के हृष्ठ में शामिल हुए 6 महीने से ज्यादा का वक्त हो गया है। हृष्ठ का हिस्सा बनने के बाद से सुभासपा मुखिया व पूर्व मंत्री ओम प्रकाश राजभर योगी सरकार में कैबिनेट मंत्री बनना चाहते हैं। इसी के चलते ओपी राजभर कई बार मंत्री बनने की तारीख भी बता चुके है। इस सिलसिले में दिल्ली से लेकर लखनऊ तक बीजेपी के कई बड़े नेताओं से मुलाकात पर मुलाकात भी कर चुके हैं। हालांकि ना ही योगी मंत्रिमंडल का विस्तार हो रहा है ना ही ओपी राजभर के मंत्री बनने पर कोई आधिकारिक पुष्टि ही हो रही है। वहीं राजभर के मंत्री ना बनाए जाने को लेकर तरह तरह की चर्चाएं हो रही है। इसमें से एक पिछले विधानसभा चुनाव में ओपी राजभर द्वारा सीएम योगी आदित्यनाथ के खिलाफ दिए गए जुबानी हमले बताए जा रहे हैं।

एक नज़र

सत्यनारायण गंगाराम पित्रोदा...जब भाजपा प्रवक?ता राकेश त्रिपाठी बोले ये सैम पित्रोदा का असली नाम है

- भाजपा प्रवक्ता राकेश त्रिपाठी ने कांग्रेस नेता सैम पित्रौदा पर पलटवार किया है
- कांग्रेस के थिंक टैंक सैम पित्रौदा ने पीएम मोदी के मंदिर जाने पर सवाल उठाए हैं
- राकेश त्रिपाठी का कहना है कि कांग्रेसी होने के लिए हिंदुत?व को गाली जरूरी है

संवाददाता

लखनऊ। कांग्रेस के नेता सैम पित्रौदा ने राम मंदिर के उद्घाटन से पहले कई सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि देश का प्रधानमंत्री मंदिरों को ज?यादा समय दे रहा है। 10 सालों में उसने एक भी प्रेस कॉन?फ्रेंस नहीं किया। यह बहुत गंभीर बात है।

भाजपा का सैम पर पलटवार

कांग्रेस के थिंक टैंक सैम पित्रौदा ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंदिर में अधिक समय दे रहे हैं। एक देश का पीएम 10 साल तक प्रेस कॉन?फ्रेंस नहीं करता, ये बात मुझे परेशान करती है। उन?होंने अगला चुनाव देश की नियति तय करेगा। अब भाजपा ने सैम पित्रौदा पर पलटवार किया है। उत?तर प्रदेश भाजपा के प्रवक?ता राकेश त्रिपाठी का कहना है कि सैम पित्रोदा को प्रधानमंत्री के मंदिर जाने पर आपत्ति है, प्रभु राम के मंदिर बनने से आपत्ति है। सैम पित्रोदा का असली नाम सत्यनारायण गंगाराम पित्रोदा है। कांग्रेसी होने के लिए हिंदुत्व को गाली देने का सर्टिफिकेट आवश्यक है। बुधवार को जारी वीडियो संदेश में राकेश त्रिपाठी ने कहा- सैम पित्रोदा को आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मंदिर जाने पर आपत्ति हो रही है। राम मंदिर बनने से बौखलाहट हो रही है। सत?यनारायण गंगाराम पित्रोदा जब सैम पित्रोदा हो जाते हैं न तो ये समस?या पैदा होती है। देश से बाहर जाकर अपने मूल?यों को भूल जाना, आध?यात्मिक शक्ति को भूल जाना, अपने नाम में जिसने परिवर्तन कर लिया उससे आप अपेक्षा भी क?या कर सकते हैं। कांग्रेसी होने के लिए मूल शर्त यही है कि भारत के भावों को नकार दीजिए। भारत की आध?यात्मिक शक्ति को भुला दीजिए। और कैसे तुष्टिकरण में आकंठ डूब जाइए। भारत के हिंदुत?व को अपमानित करने का प्रयास कीजिए।

राम मंदिर शुभारंभ से पहले कांग्रेस के सवाल

आपको बता दें कि 22 जनवरी को अयोध?या में भव?य राम मंदिर का उद्घाटन होने जा रहा है। एक बड़े समारोह के बीच रामलला की प्राण प्रतिष?ठा की जानी है। इसके लिए हजारों मेहमानों को बुलाया गया है। इस कार्यक्रम से पहले कांग्रेस के वरिष?ठ नेता सैम पित्रोदा ने कई सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि देश का असली मुद्दा राम मंदिर है या बेरोजगारी और महंगाई। कभीकभार मंदिर जाना ठीक है लेकिन आप उसे मुख?य मंच नहीं बना सकते।

करवाचौथ के अलावा महिला शिक्षकों को दो और ऑफ, माध्यमिक स्कूलों का छुट्टी कैलेंडर देखिए

संवाददाता

लखनऊ। यूपी के माध्यमिक स्कूलों में अगले साल की छुट्टी कैलेंडर के मुताबिक कुल 118 छुट्टियां हैं। इनमें ग्रीष्मावकाश और रविवार की छुट्टियां भी शामिल हैं। होली पर दो छुट्टी रहेगी। इनके अलावा तीन छुट्टियां प्रिसिंपल दे सकेंगे। उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में अगले साल की छुट्टियों का कैलेंडर जारी कर दिया गया है। माध्यमिक शिक्षा निदेशक महेंद्र देव की ओर से जारी कैलेंडर के अनुसार महिला शिक्षक करवाचौथ के अलावा साल में दो अन्य व्रत त्योहारों में छुट्टियां ले सकेंगी। ये छुट्टियां कॉलेज के प्रिंसिपल स्वीकृत करेंगे। माध्यमिक विद्यालयों में विवाहित महिलाओं के लिए करवाचौथ व्रत की छुट्टी रहती है। अलग-अलग क्षेत्रों में मनाए जाने वाले व्रत त्योहारों जैसे हरितालिका तीज/हरियाली तीज, संकटा चतुर्थी, हल षष्ठी/ललई छठ, जीउतिया व्रत/अहोई अष्टमी जैसे त्योहारों के लिए पिछले साल कैलेंडर में कोई जिक्र नहीं था। बाद में मांग उठने पर अलग से आदेश कर इन त्योहारों पर छुट्टियां घोषित की गई थीं। इस साल कैलेंडर में ही इन छुट्टियों का जिक्र कर दिया गया है। करवाचौथ पर पहले की तरह ही छुट्टी रहेगी। अन्य व्रत त्योहारों पर किन्हीं दो पर महिला शिक्षको को छुट्टी मिल सकेगी। ग्रीष्मावकाश 21 मई से 30 जून तक 41 दिन का होगा। ग्रीष्मावकाश, रविवार और अन्य छुट्टियां मिलाकर साल में कुल 118 अवकाश होंगे। बोर्ड परीक्षाएं 15 दिन चलेंगी। साल में 233 दिन पढ़ाई होगी। इनके अलावा तीन छुट्टियां स्कूल के प्रिंसिपल अपने विवेक से दे सकेंगे, लेकिन उसकी सूचना डीआईओएस को देनी होगी। होली पर दो और दीपावली पर गोवर्धन पूजा व भैया दूज सहित तीन दिन की छुट्टी होगी। महापुरुषों के जन्म दिवसों पर उनके योगदान के बारे में बच्चों को बताया जाएगा।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने छीना विपक्ष से मुद्दा, अब स्कऔर क्रस्ष्ट की प्रतिक्रिया देख लीजिए

संवाददाता

लखनऊ। पुलिस भर्ती को लेकर आयु सीमा को लेकर मचे बवाल के बाद सीएम योगी आदित्यनाथ की घोषणा ने राजनीति को बंद कर दिया। सीएम योगी की ओर से उम्मीदवारों की आयु सीमा में तीन साल की छूट दिए जाने का ऐलान किया गया है। 2018 के पांच साल बाद आई पुलिस वैकेंसी को लेकर उम्मीदवार छूट की मांग कर रहे थे। इस पर राजनीति भी खूब हो रही थी। उत्तर प्रदेश में पुलिस भर्ती को लेकर जारी राजनीति पर विराम लगा दिया गया है। उत्तर प्रदेश पुलिस कॉन्स्टेबल भर्ती में योगी सरकार को पीछे हटना पड़ा है। भर्ती में आयु सीमा में छुट को लेकर पुलिस भर्ती का लंबे समय से इंतजार देख रहे युवाओं का लगातार दर्द सामने आ रहा था। वहीं, पुलिस भर्ती में आयु सीमा बढ़ाने को लेकर युवाओं को विपक्षी पार्टियों का साथ मिलते ही यह मामला सोशल मीडिया पर भी गरमाने लगा था। एक्स पर यूपी पुलिस भर्ती टॉप पर ट्रेंड करने लगी थी। खासकर युवाओं की मांग को देखते हुए योगी सरकार को बैकफुट पर आना पड़ा है। सीएम योगी ने सभी वर्गों के अभ्यर्थियों को लेकर 3 साल की आयु सीमा में छूट देने का फैसला लिया है। उधर यूपी सरकार के बैकफुट को विपक्षी दलों के हाथ से एक बड़े मुद्दे को छीन लिया है। इस विवाद को हवा देकर विपक्ष की ओर से भाजपा की योगी सरकार को घेरने की कोशिश की जा रही थी, लेकिन जिस मुद्दे को सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से लेकर रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी तक हवा दे रहे थे। उसे सीएम योगी ने एक झटके में खत्म कर दिया। ऐसे में

अब श्रेय लेने की होड़ मच गई है। आरएलडी मुखिया व राज्यसभा सांसद जयंत चौधरी ने योगी सरकार के फैसले के तुरंत बाद एक्स पर पोस्ट करते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी। जयंत चौधरी ने लिखा कि कल मेरा जन्मदिवस है और इससे अच्छा तोहफा नहीं मिल सकता है। उत्तर प्रदेश में 60,244 सिपाही भर्ती में 3 साल की आयु सीमा बढ़ेगी। योगी जी ने उचित निर्णय लिया है। आरएलडी मुखिया ने पोस्ट के जरिए बताया कि रालोद कार्यकर्ताओं ने इस महत्वपूर्ण मुद्दे को जबरदस्त तरीके से उठाया और अपनी बात मनवाई है। दरअसल, जयंत चौधरी ने पिछले दिनों सीएम योगी को पत्र लिखकर उम्र सीमा में छूट देने की मांग की थी। मंगलवार को रालोद ने विरोध जताते हुए जोरदार प्रदर्शन भी किया था। समाजवादी पार्टी ने इस लड़ाई को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रही है। समाजवादी पार्टी ने भी आयु सीमा में 3 साल की छूट देने के सरकार के फैसलों को सपा की जीत बताई है। सपा प्रवक्ता फखरुल हसन चांद ने कहा कि यह सपा और विपक्ष की जीत है। कोविड काल की वजह से नौजवानों को मौका नहीं मिल पाया था। इसके कारण उनकी उम्र ज्यादा हो गई थी। उन अभ्यर्थियों को इस भर्ती में छूट दी जाए। इसको लेकर सपा ने इस मुद्दे को पुरजोर से उठाया था। सरकार ने जो फैसला लिया है वो विपक्ष और नौजवानों के दबाव में लिया है। सपा की पूरी तरह से जीत हुई है। हमने नौजवानों की लड़ाई को लड़ा था। इसी वजह से सरकार को झुकना पड़ा है। हालांकि, अखिलेश यादव ने इस मुद्दे पर सिर्फ एक ट्वीट किया था। योगी सरकार में इस फैसले को लेकर कांग्रेस भी श्रेय लेने में पीछे नहीं रही। कांग्रेस प्रवक्ता सुरेंद्र राजपूत ने कहा कि कांग्रेस का दबाव काम आया। उन्होंने बताया कि कांग्रेस नेता पवन खेड़ा की मुरादाबाद में प्रेस के बाद योगी सरकार दबाव में आई। बीजेपी सरकार ने पुलिस भर्ती की उम्र में 3 साल की छूट की घोषणा की है। इसके साथ ही जेवर से बीजेपी विधायक धीरेंद्र सिंह ने भी सीएम योगी से मुलाकात की फोटो पोस्ट की। उन्होंने लिखा कि प्रदेश के नौजवानों को उनका हक मिलेगा। उन्होंने बताया कि सीएम आवास पर नौजवानों की पुरजोर वकालत की थी। सीएम योगी ने मौके पर ही प्रमुख सचिव गृह और डीजीपी को नौजवानों के हित में निर्णय लेने के लिए निर्देश दे दिया। भाजपा ने सीएम योगी के फैसले पर उन्हें धन्यवाद कहा है। देवरिया से बीजेपी विधायक शलभमणि त्रिपाठी ने भी इससे जुड़ी एक्स पर एक पोस्ट डाली। जिसमें सीएम योगी से मुलाकात की फ़ोटो, सीएम योगी को लिखा गया पत्र और सीएम योगी के ट्वीट का स्क्रीन शॉट शेयर किया है। शलभमणि ने लिखा यूपी पुलिस भर्ती में उम्र की सीमा बढ़ाई गई। प्रदेश के युवाओं के हित में ये शानदार निर्णय लेने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने बताया कि सीएम योगी से मिलकर इस दिशा में अनुरोध किया था। बलिया से सांसद वीरेंद्र सिंह मस्त ने पुलिस भर्ती में साल की आयु सीमा बढ़ाने के लिए सीएम योगी का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद किया।

रात्रि जागरण में हुई मनमोहक झांकियो की प्रस्तुति सुंदर भजनों ने श्रद्धालुओं का मोह लिया मन

संवाददाता /प्रभाकर शुक्ला

महोली (सीतापुर)। महोली क्षेत्र के शिव मन्दिर बसवैं, भुड़कुड़ी, में आयोजित रात्रि जागरण में राजेश दुर्गा जागरण पार्टी खुदागंज (शाहजहांपुर) एण्ड ष्क्र महाकाल झांकी ग्रुप (बाराबंकी) द्वारा मनमोहक झांकियां प्रस्तुति की गई। मुख्य आयोजक सतीश गुप्ता के द्वारा जगराता की अखंड ज्योति प्रज्वलित कर गणेश वंदना के साथ भजन व सुंदर झांकियों की प्रस्तुति के साथ रात्रि जागरण का शुभारंभ हुआ। शिव मंदिर परिसर में कलाकारों ने मनमोहक झांकी गणेश नृत्य, सुदामा चरित्र, बरसाने की होली, शिव तांडव, कृष्ण राधा सहित अन्य मनमोहक झाकियां प्रस्तुति की। इस अवसर पर मुख्य आयोजक सतीश गुप्ता ने बताया कि धर्म कार्य क्षेत्र होने से लोगों को संस्कृति व संस्कार का ज्ञान होता है। जिससे आने वाली पीढियों को संस्कृति का बोध होता है। आयोजक सतीश गुप्ता ने जगराता में आए हुए समस्त ग्रामवासी क्षेत्रवासी एवं अतिथियों भक्तों का आभार व्यक्त किया। सुंदर मनमोहक झांकियां एवं बरेली से सिंगर राधिका , सिंगर महेंद्र शुक्ल बरेली वआगरा से आई हुई सिंगर मंजू सहित आए हुए सिंगरों द्वारा भजनों की सुंदर प्रस्तुतियों ने शिव मन्दिर परिसर जागरण पंडाल में बैठे हुए सभी भक्तों श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। जय माता दी हर हर महादेव के उद्घोष से जागरण पंडाल गुंजायमान हो गया।

अब सभागारों में कार्यक्रम करना महंगा

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में आम और खास सभी को सभागारों को किराये पर लेने के लिए अब अधिक धनराशि देनी होगी। सभागारों और भवनों की बढ़ी हुई नई दरें वित्त समिति से पास होने के बाद अब कार्यपरिषद से भी अनुमोदित हो गई हैं। जल्द ही इन्हें लागू करने का औपचारिक आदेश भी जारी कर दिया जाएगा। लविवि प्रशासन लंबे समय से सभागारों व अन्य स्थलों के किराये की दरों में वृद्धि करने की योजना बना रहा था। इसे अब औपचारिक सहमति मिल गई है। इससे पूर्व वर्ष 2017 में हुई कार्यपरिषद की बैठक में किराये में बढ़ोतरी की गई थी। जिन लोगों को कार्यक्रम के आयोजन के लिए विवि सभागार किराये पर चाहिए, वे विवि से संपर्क कर सकते हैं।

मायावती का नया तेवर, क्स्कका बदल रहा कलेवर, लोकसभा चुनाव से पहले बसपा 2.0 वर्जन के लिए हो जाइए तैयार

संवाददाता

लखनऊ। लोकसभा चुनाव से पहले बहुजन समाज पार्टी अपना चोला बदलने जा रही है। कभी चुनावी काल में पार्टी की नीतियों को कैडर तक ले जाकर लाने वाली पार्टी के स्वरूप में बदलाव की योजना तैयार की गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, लोकसभा चुनाव से पहले बसपा अपने नए कलेवर में नजर आएगी। 15 जनवरी को इस बदले स्वरूप की योजना पर काम शुरू किया जाएगा। उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारी शुरू हो गई है। देश में अगले साल होने जा रहे लोकसभा चुनाव को लेकर तमाम राजनीतिक दल तैयारियों को पूरा करने में जुटे हुए हैं। इसी क्रम में बहुजन समाज पार्टी ने अपने स्वरूप में बदलाव की योजना पर काम शुरू किया है। बसपा अपने नए तेवर और कलेवर के साथ प्रदेश और देश की राजनीति में उतरने की योजना बना रही है। बहुजन समाज को राजनीतिक ताकत देने के लिए काशीराम ने जिस दल का गठन किया था। वह अब नए स्वरूप में नजर आएगी। इसे बसपा का वर्जन 2.0 कहा जा रहा है। अब तक बहुजन समाज पार्टी चुनावी कल में अपनी नीतियों और मुद्दों के साथ चुनावी मैदान में उतरती थी। मायावती की लो प्रोफाइल और कैडर पर भरोसे वाली नीति ने बसपा को लगातार सफलता दिलाई, लेकिन 2014 में नरेंद्र मोदी कल शुरू होने के बाद भारतीय जनता पार्टी ने बसपा के वोट बैंक में सेंधमारी शुरू कर दी। हालांकि, अब बसपा भी आधुनिक तकनीक के सहारे तमाम राजनीतिक दलों से मुकाबले को तैयार होती दिख रही है।

ग्रामीणों के लिए नासूर बनी नमामिगंगे परियोजना कार्य में हो रही लापरवाही

लीकेज पाइपलाइनों से बरबाद हो रहा हजारों लीटर पानी, गांव में जगह जगह दलदल

संवाददाता सुरेंद्र सिंह

हमीरपुर। नमामिगंगे परियोजना से जहां लोगों को पेयजल की सुविधा मुहैया कराई जानी है वही परियोजना ठेकेदारों व जिम्मेदारों की लापरवाही से ग्रामीणों के लिए नासूर बन गई है। गांवों में जगह जगह कहीं दलदल है तो कहीं गड्ढे खुदे पड़े हैं जिसके चलते ग्रामीणों को समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। सुमेरपुर विकासखंड के पत्योरा गांव में नमामिगंगे परियोजना के तहत पाइप लाइने खोदी गई थी तथा पाइप लाइन डालने के बाद ग्रामीणों को पानी देना शुरू किया गया। लेकिन पानी संचालन होते ही पूरे गांव में जगह जगह लीकेज होने लगे जिसके कारण गली मुहल्लों में पानी बहने से दलदल जैसी स्थित हो गई है। कई जगह लीकेज सही करने को गड्ढे खोदे गए जिन्हे महीनों बीत जाने के बाद भी नहीं भरा गया। पत्योरा निवासी वीरू प्रजापति, रामकुमार सिंह, मुकेश कुमार, रज्जन दुबे, भगत सविता आदि ने बताया की गांव में जगह जगह पाइप लाइने लीकेज हैं जिसके चलते हजारों लीटर पानी तो बर्बाद हो ही रहा है साथ ही उनके ठीक न किए जाने से गांव में कई जगहों पर दलदल जैसी स्थित बनी हुई है। ग्रामीणों का कहना है कि इस संबंध में कई बार प्रधान व ठेकेदारों से शिकायत की है लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ है।

दृष्य 1

पत्योरा के ब्राह्मण मुहल्ले में पंद्रह दिन पहले लीकेज ठीक करने को खोदी गई पाइप लाइन को अभी तक ठीक नहीं किया गया। मुहल्ले के लोगों का कहना है कि गड्ढा न भरे जाने के कारण आए दिन छोटे बच्चे उसमें गिरकर चोटिल होते है।

दृष्य 2

पत्योरा के काली देवी मंदिर के पास मुख्य मार्ग में पाइप लाइन डालने को खोदी गई नाली को ठीक से न बनाने के चलते दलदल की स्थिति हो गई है। पाइप लाइन को खोदे करीब छह महीने बात चुके हैं लेकिन उसे सही ढंग से नही ठीक करने के चलते वहां से गुजरने वाले लोगों को दलदल से गुजरने को मजबूर होना पडता है।

दृष्य 3

गांव के राम-जानकी मंदिर के पास करीब एक महीने से पाइप लाइन लीकेज हो रही है जहां पानी बर्बादी के साथ ही मुहल्ले में कीचड़ की समस्या बनी रहती है। कहने के बाद भी जिम्मेदारों ने उसे ठीक नहीं कराया जो समस्या का कारण बनी हुई है।

दृष्य 4

गांव के प्रजापति मुहल्ले में पाइपलाइन डालकर खोदी गई नाली को न ही बराबर किया गया और नही उसे पक्का किया। जिसके चलते रात के समय वहां से गुजने वालों को समस्या का सामना करना पडता है।

संपादक की कलम

गंगोत्री में कैसे बचेंगे देवदार के पेड़

हिमालय की नाजुक परिस्थितियों की चर्चा न तो संसद में हो रही है और न उच्च अदालत में ही। पर्यावरण की पूरी अनदेखी के साथ सुरक्षा का हवाला देकर जंगल, पानी और मिट्टी की अधिकतम बर्बादी की कीमत पर विकास की रेखा खींची जा रही है। केंद्रीय सड़क एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी पहाड़ों में हरित निर्माण तकनीक के अनुसार सड़कों के चौड़ीकरण की बात कर रहे हैं, उनके दावों के विपरीत ऑल वेदर रोड में सभी निर्माण कार्य किए जा रहे हैं। पहाड़ों में दुर्गम स्थानों को पार करने के लिए निश्चित ही सुदृढ़ व सुगम सड़कों के निर्माण की आवश्यकता है, लेकिन वह पहाड़ों की ऐसी बर्बादी न करे, जैसी चार धाम में निर्माणाधीन ऑल वेदर रोड के चौड़ीकरण में सामने आई है। इस सड़क के लिए अंधाधुंध पेड़ों का कटान, मिट्टी, पानी, पत्थर की बर्बादी और छोटी-छोटी बस्तियों को उजाड़ने में कोई देर नहीं लगी है। लेकिन इस पर सरकार का ध्यान उतना नहीं गया, जितना कि उच्च अदालतों ने संज्ञान लिया है। सुप्रीम कोर्ट ने अगस्त, 2019 में चार धाम सड़क चौड़ीकरण कार्य से समाज और पर्यावरण पर पड़ रहे प्रभाव के अध्ययन के लिए एक उच्च अधिकार प्राप्त कमेटी डॉ. रवि चोपड़ा की अध्यक्षता में गठित की थी। इस रिपोर्ट के आधार पर अधिकतम चौड़ाई सात मीटर करने का आदेश दिया गया था। इस दौरान सड़क चौड़ीकरण बहुत तेजी से हो रहा था, जिसमें कहीं भी पूर्व प्रस्तावित 10-24 मीटर चौड़ी सड़क को सात मीटर तक नहीं किया गया। यह सिलसिला थमा नहीं और नवंबर, 2020 में रक्षा मंत्रालय ने सेना की जरूरतों का हवाला देते हुए चौड़ी सड़क की मांग उठाई। दिसंबर, 2021 में सुप्रीम कोर्ट ने फिर संशोधन कर दिया, जिसमें सड़क को 10 मीटर तक चौड़ा रखने का आदेश है। जबकि अदालतों में बहसों के चलते 12 हजार करोड़ रुपये की लागत की इस परियोजना का काम 70 प्रतिशत तक पूरा भी हो गया है। सुप्रीम कोर्ट ने कह दिया है, %क्या पर्यावरण संरक्षण सेना की जरूरतों से ऊपर होगा या हमें यह कहना चाहिए कि रक्षा चिंताओं का ध्यान पर्यावरणीय क्षति न हो।% इस उलझन के संबंध में उच्च अधिकार प्राप्त कमेटी के अध्यक्ष ने सुप्रीम कोर्ट के सेक्रेटरी जनरल को पत्र भेज कर इस्तीफा दे दिया। डॉ. रवि चोपड़ा का कहना है कि कमेटी का अधिकार क्षेत्र केवल नॉन-डिफेंस स्ट्रेचेज तक सीमित रखने से उनका पद पर बने रहना उचित नहीं है।

हिमालय की नाजुक परिस्थितियों की चर्चा न तो संसद में हो रही है और न उच्च अदालत में ही। पर्यावरण की पूरी अनदेखी के साथ सुरक्षा का हवाला देकर जंगल, पानी और मिट्टी की अधिकतम बर्बादी की कीमत पर विकास की रेखा खींची जा रही है। केंद्रीय सड़क एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी पहाड़ों में हरित निर्माण तकनीक के अनुसार सड़कों के चौड़ीकरण की बात कर रहे हैं, उनके दावों के विपरीत ऑल वेदर रोड में सभी निर्माण कार्य के आदेश के बाद शेष बचे उत्तरकाशी से गंगोत्री के बीच लगभग 100 किमी में सड़क चौड़ीकरण होना है। यहां पर लाखों देवदार के छोटे-बड़े पेड़ों को काटने की तैयारी चल रही है। इस संबंध में नितिन गडकरी ने कहा है कि पेड़ों को दूसरी जगह स्थानांतरित किया जाएगा। यह तो भविष्य ही बताएगा। वर्ष 1962-65 में गंगोत्री मोटर मार्ग का निर्माण हुआ था। तब यहां स्थित सुखी, जसपुर, झाला आदि कई गांवों ने अपनी जमीन निःशुल्क सरकार को दी थी। आज इसे नजरंदाज करके सड़क दूसरी दिशा में मोड़ी जा रही है। वह भी ऐसे स्थान से जहां देवदार समेत कई बहुमूल्य प्रजाति के घने जंगल हैं, और जंगली जानवरों के सघन आवास मौजूद हैं। यहां कटान के लिए हजारों देवदार के पेड़ों पर निशान लगा दिए गए हैं। विरोध में 18 जुलाई, 2018 को सुखी टॉप (आठ हजार फीट) में एकत्रित होकर गांव वालों ने हरे देवदार के पेड़ों को बचाने हेतु रक्षासूत्र बांधे हैं। पेड़ों की रक्षा का संकल्प लेते हुए स्थानीय लोगों ने सुखी गांव से ही मौजूदा सड़क को यथावत रखने की अपील की है। इससे आगे जसपुर गांव से बगोरी, हर्षिल, मुखवा से जांगला तक ऑल वेदर रोड की मांग की है। यहां पर बहुत ही कम पेड़ हैं और अधिकांश जगह पर मोटर सड़क बन भी गई है। यदि सड़क और राजमार्ग मंत्रालय इसकी स्वीकृति दे दे, तो सुखी बैंड से हर्षिल होते हुए जांगला तक हजारों देवदार के पेड़ों को बचाया जा सकता है। इसके अलावा गंगोत्री जाने वाले यात्रियों को भागीरथी के दोनों ओर से जाने-आने की सुविधा मिलेगी।

दुनिया को फिर से बनाने में होगी हिंदुस्तान की भूमिका

कोरोना पर विश्व स्वास्थ्य संगठन का लापरवाही भरा रवैया पूरी दुनिया ने देखा। कोरोना जैसे अनजान वायरस के प्रसार को महामारी घोषित करने में इस वैश्विक संगठन ने बहुत वक्त लगा दिया। तब तक देर हो चुकी थी। दुनिया के कई देशों में इस वायरस का प्रसार होने लगा। लोग बीमार होने लगे और मरने लगे। इस अनजान वायरस को नाम दिया गया कोविड 19 यानी कोरोना वायरस।

दुनिया भर में वैश्विक आपदाओं और महामारियों का पुराना इतिहास रहा है। अमूमन हर 100 साल पर मानव जाति को किसी वैश्विक महामारी का सामना करना पड़ता है जिसमें लाखों की संख्या में जान-माल का नुकसान होता आया है। लगभग 100 साल पहले आए स्पैनिश फ्लू ने भारत में लाखों लोगों को अपना शिकार बनाया था। हैजा भी भारत में महामारी के रूप में अपना कहर बरपा चुका है। लेकिन यह उस दौर की बात है जब विज्ञान अपने शैशवकाल में था। दरअसल, हम यह मानकर चल रहे थे कि 21वीं सदी में जब एक से बढ़कर एक प्राणघातक रोगों का भी इलाज संभव है ऐसे में कोई महामारी समूचे विश्व को विवश नहीं कर पाएगी। पश्चिमी देशों को अपने विज्ञान पर बहुत अभिमान था। भारत सहित तमाम देश इसी आधुनिक विज्ञान के पीछे पंक्तिबद्ध खड़े नजर आते थे। लेकिन 21वीं सदी का 21वां साल हमारी कई सारी मान्यताओं को ध्वस्त करने वाला था। साल 2019 खत्म होने वाला था कि चीन में एक अनजाने वायरस से लोगों के बीमार होने की खबरें आने लगीं। भारत सहित अधिकांश देशों ने इस पर ध्यान नहीं दिया और अंतर्राष्ट्रीय विमानों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी लापरवाही भरा रवैया अपनाते हुए इस अनजान वायरस के प्रसार को महामारी घोषित करने में बहुत वक्त लगा दिया। तब तक देर हो चुकी थी। दुनिया के कई देशों में इस वायरस का प्रसार होने लगा। लोग बीमार होने लगे और मरने लगे। इस अनजान वायरस को नाम दिया गया कोविड 19 यानी कोरोना वायरस। चीन के बाद अमेरिका सहित समूचे यूरोप में इस वायरस के कारण हाहाकार मचने लगा। हैरानी की बात यह है कि कोरोना वायरस ने सबसे अधिक तबाही उन देशों में मचाई जिन्हें दुनिया विकसित देशों की श्रेणी में रखती है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी जैसे देश जो आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से लैस थे इस अनजान वायरस का मुकाबला नहीं कर पा रहे थे। बड़ी संख्या में बुजुर्गों की मौत होने लगी। इन विकसित देशों की व्यवस्था चरमरा गई। लोग सड़कों पर मरने लगे। ऑक्सीजन सहित बुनियादी मेडिकल सुविधाओं की किल्लत से लोग मरने लगे। अस्पताल अपनी क्षमता से कहीं ज्यादा काम कर रहे थे लेकिन लोगों को बचा पाने में असमर्थ थे। साल 2020 सारी दुनिया के लिए कोरोना काल के तौर पर अवतरित हुआ। सारी दुनिया से होता हुआ कोरोना वायरस भारत भी पहुंचा और इस देश ने न भूतो न भविष्यति जैसा दृश्य देखा। प्रधानमंत्री ने पहले जनता कर्फ्यू का आवाहन किया। इसके बाद देश ने लॉकडाउन जैसा शब्द पहली बार न सिर्फ सुना अपितु बहुत करीब से महसूस भी किया। किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी जैसा नजारा देश में देखने को मिला। सड़कें सुनसान हो गई, लोग घरों में कैद थे और सारे देश में एक डर का माहौल था। भारत में भी कोरोना वायरस ने मौत का तांडव मचाया लेकिन यह उतना भयानक नहीं था जितना अमेरिका और ब्राजील जैसे देशों ने देखा। चीन ने न सिर्फ अपने देश में इस वायरस के प्रसार की बात छुपाई बल्कि उस पर यह शक भी गहराया कि यह वायरस उसकी शरारत तो नहीं है। ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों ने दावा किया कि कोरोना वायरस चीन के वुहान शहर की एक लैब में बनाया गया है। कोरोना वायरस को वैश्विक साजिश के तौर पर देखा गया लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हो पाई।

दूसरी तरफ दुनिया के कई देश कोरोना के कारण लाचार दिखे। महामारी और बेबसी के इस दौर में जब आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं और विज्ञान ने हाथ खड़े कर दिए भारत में दोबारा उसकी अपनी विद्या यानी कि योग का प्रसार हुआ। सांस की समस्या से निपटने के लिए प्राणायाम एक विकल्प के तौर पर आया। पुराने जमाने की तर्ज पर औषधीय काढ़ा का लोगों के घरों में दोबारा आगमन हुआ। कोरोना वैक्सीन आने में साल भर से अधिक का वक्त लगा। तब तक भारत के लोगों की रक्षा योग और प्राकृतिक तत्वों के सेवन ने ही किया। भारत ने दुनिया को एक रास्ता दिखाया। अंग्रेजी चिकित्सा व्यवस्था बीमारी के बाद काम में आती है। जबकि योग और प्राणायाम व्यक्ति को बीमार पड़ने से रोकता है। यह फर्क बहुत साफ तौर पर सारी दुनिया को समझ में आया। भारत की विश्व मंगल की अवधारणा में योग का एक बड़ा योगदान है। आज दुनिया भर के देशों में योग और प्राणायाम की धूम मची हुई है। भारत से ज्यादा विदेशों में लोग योग के मुरीद हो रहे हैं। कोरोना महामारी के दौर में भारत ने दुनिया भर के देशों में जरूरी दवाईयां और मदद भेजी। इनमें विश्व का पावरहाउस अमेरिका भी शामिल था। भारत की विश्वमंगल की भावना से किये गए कामों ने सारी दुनिया में तारीफ बंटोरी। भारत ने कोरोना महामारी की तीन लहरों का सामना किया है और जनसंख्या के मुकाबले काफी कम नुकसान सहा। इतना ही नहीं जब कोरोना वैक्सीन आई तब भारत ने गरीब देशों को वैक्सीन भी बांटी। हालांकि सरकार के इस फैसले का भारत में ही राजनीतिक दलों ने विरोध किया लेकिन इस कदम से विश्व में भारत की साख बहुत मजबूती से स्थापित हुई। आपदा की घड़ी में भारत द्वारा उठाए गए इन कदमों से यह बात स्थापित हो गई कि भारत के लिए वसुधैव कुटुम्बकम सिर्फ एक नारा नहीं बल्कि जीवनशैली है। अब तक कोरोना महामारी से दुनिया भर में 50 लाख से अधिक लोगों की जान गई है। 8 लाख से ऊपर अमेरिकी नागरिकों की जान विश्व की सर्वश्रेष्ठ सुविधाएं होने के बावजूद नहीं बच पाई। भारत में अमेरिका से तीन गुना अधिक लोग रहते हैं। ब्राजील में 6 लाख से अधिक लोगों की जान कोरोना के कारण गई। भारत में भी 4 लाख से अधिक लोग कोरोना महामारी की भेंट चढ़ गए। शोक और त्रासदी का लंबा दौर देखा भारत ने लेकिन वह टूटा नहीं। भारत उस वक्त भी मजबूती से अपने नागरिकों के साथ खड़ा रहा जब दुनिया ठप पड़ चुकी थी। लोग घरों में कैद थे। फैक्ट्री, कारखाने लोगों के काम-धंधे बंद हो चुके थे। बड़ी संख्या ऐसे लोगों की थी जो दिहाड़ी मजदूर थे। जिनकी जिंदगी रोज कमाने रोज खाने के सिद्धांत पर चलती थी। यह देश का बहुत बड़ा तबका था जो दोहरी मार झेल रहा था। घर से बाहर कोरोना मौत बनकर नाच रहा था तो घर पर भूख मार डालती। ऐसे मुश्किल वक्त में भारत ने लोक कल्याणकारी गणतंत्र को चरितार्थ करते हुए करोड़ों लोगों को मुफ्त राशन मुहैया करवाया। आपदा के दौर में मुफ्त राशन के लिए सारी शर्तें हटा ली गई।

चुनौतियों के बीच भारत

कोरोना की चुनौतियों से हर मोर्चे पर लड़ते हुए भारत ने इस दिशा में दुनिया को हमेशा एक स्पष्ट राय दी। प्रकृति के साथ ही मनुष्य का विकास निहित है। प्रकृति का दोहन आखिरकार हमारे लिए विनाशकारी सिद्ध होगा। अब यह परिणाम नजर भी आने लगे हैं। इसलिए कोरोना महामारी की विभीषिका झेल चुकी दुनिया शायद इस बात को अब बेहतर तरीके से समझ रही होगी। याद करिए जब कोरोना वैक्सीन आई तो अमेरिका सहित विकसित देशों ने टीका पर एकाधिकार सा कर लिया था। उन्होंने करोड़ों डोज पहले ही खरीद ली थी। गरीब देशों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया था। ऐसी स्थिति में भारत ने उन्हें मुफ्त वैक्सीन बांटी। जब प्राण संकट में हों तब कोई मददगार आपकी जान बचा ले तो उसका अहसान व्यक्ति जीवन भर नहीं भूलता। भारत का यह कदम ये देश भी कृतज्ञता से स्वीकारते हैं। अब कोरोना की एक और लहर से दुनिया जूझ रही है। यह संभवतः पिछली लहर की तरह विनाशकारी सिद्ध न हो लेकिन इतना तो तय है कि इस महामारी के जख्मों से उबरने में दुनिया को काफी वक्त लग जाएगा। साथ ही कोरोना पश्चात यह विश्व एक बड़े बदलाव से गुजरेगा इसकी पूरी संभावना है। यह दुनिया पहले जैसी नहीं रह जाएगी। कोरोना महामारी ने भारत को भी काफी कुछ सिखाया।

सिर्फ न्यायाधीशों की कमी ही जिम्मेदार नहीं

कलम के थमते ही छूट गई सृजन से बंधी सांसें

वरिष्ठ फिल्म पत्रकार और स्तंभकार जयप्रकाश चौकसे नहीं रहे। एक ऐसे दौर में जब फिल्मों को ही गंभीरता से नहीं लिया जाता था और उसका प्रभाव पत्रकारिता में सिनेमा और मनोरंजन पत्रकारिता पर भी नकारात्मक ही था और जिसके चलते फिल्म पत्रकारिता मुख्यधारा में केवल चटपटी मसालेदार खबरों की भरपाई मात्र थी, वहां जयप्रकाश चौकसे जैसे प्रखर फिल्म पत्रकार/स्तंभकार ने 5 दशक तक सिनेमाई दुनिया के संसार की ऐसी छवि गढ़ी जिसने फिल्म पत्रकारिता को एक स्तर दिया और अपनी गरिमा और प्रतिष्ठा के साथ स्थापित कर दिया।

मप्र के बुरहानपुर में 1939 में जन्में जयप्रकाश चौकसे ने अंग्रेजी ओर हिंदी साहित्य में एमए किया था। उनकी लगातार साहित्य और संस्कृति में आवाजाही थी।

सांसों की डोर सृजन से बंधी होती है। रचनात्मकता यश को नहीं उम्र को भी बढ़ाती है और कलाएं जीवन में केवल बाह्य उपक्रम मात्र नहीं होती बल्कि उसका एक संसार आत्मा और देह के बीच भी रचता-बसता है जहां जीवन की तमाम उठापटक और तन-मन की आधियों-व्याधियों के बीच आयु के सेतु की सतत् मरम्मत होती रहती है। संगीत की साधना हो अथवा कैनवास में रंग भरती किसी चित्रकार की कूची अथवा शब्दों से संसार में रचते-पगते किसी लेखक, स्तंभकार की कलम, जिस दिन सृजन की यह यात्रा थमती है उससे बंधी सांसें भी उखड़ने लगती हैं और देह और आत्मा के बीच बंधा आयु का सेतु दरकने लगता है। वरिष्ठ पत्रकार श्री जयप्रकाश चौकसे की सांसों की डोर भी उनकी कलम से बंधी थी। 26 साल तक एक कॉलम लगातार लिखते रहने वाले इस अद्भुत और अद्वितीय फिल्म पत्रकार, कहानीकार, उपन्यासकार और संवेदनशील कवि हृद्य ने कुछ दिन पूर्व ही जब अस्पताल के बिस्तर से यह खबर अपने चाहने वालों और लाखों पाठकों के बीच पहुंचाई कि वे अब बीमारी और देह की मनाही के बीच लिख ना पाएंगे तो अंदेशा हो गया था कि चौकसे जी निस्संदेह ज्यादा तकलीफ में हैं, अन्यथा कैंसर जैसी बीमारी के शारीरिक, मानसिक कष्ट और पीड़ा के बीच आत्मा के भीतर चल रही कलम की यह यात्रा अचानक ना थमती।

जाहिर है, आयु का सेतु कहीं दरकने लगा था और अलविदा की गूंज उन्हें सुनाई देने लगी थी। और आज वही हुआ जिसकी आशंका मुझे 25 फरवरी के दैनिक भास्कर के प्रथम पृष्ठ पर उनके स्तंभ के थमने और फिर दोबारा शुरू होने की सूचना के बीच थी। उनकी अलविदा की गूंज आज पत्रकारिता जगत और उनके लाखों पाठकों के संसार के बीच निधन की सूचना बन गई। जयप्रकाश चौकसे अपनी विदा की सूचना में गूंजती अलविदा के साथ ही हजारों-लाखों पाठकों का संसार सूना कर गए और उन्हें छोड़ गए पर्दे के पीछे की उस दुनिया के साथ जिसे आने वाली पीढ़ियां एक पाठशाला के तौर पर आजीवन अपनी विरासत के तौर पर याद रखेंगी। एक ऐसे दौर में जब फिल्मों को ही गंभीरता से नहीं लिया जाता था और उसका प्रभाव पत्रकारिता में सिनेमा और मनोरंजन पत्रकारिता पर भी नकारात्मक ही था और जिसके चलते फिल्म पत्रकारिता मुख्यधारा में केवल चटपटी मसालेदार खबरों की भरपाई मात्र थी, वहां जयप्रकाश चौकसे जैसे प्रखर फिल्म पत्रकार/स्तंभकार ने 5 दशक तक सिनेमाई दुनिया के संसार की ऐसी छवि गढ़ी जिसने फिल्म पत्रकारिता को एक स्तर दिया और अपनी गरिमा, प्रतिष्ठा के साथ स्थापित कर दिया।

अपनी 50 साल की फिल्म पत्रकारिता में चौकसे जी ने करियर की आधी से ज्यादा जिंदगी यानी 26 साल दैनिक भास्कर जैसे राष्ट्रीय अखबार में पर्दे के पीछे जैसे स्तंभ को गढ़ते हुए गुजारी। पर्दे के पीछे जैसा यह कॉलम चौकसे जी जैसे फिल्म पत्रकार ने अपने सरल, सहज भाषाई तेवर के साथ बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड और क्षेत्रीय सिनेमा की दुनिया के भीतर चल रही तकरीबन चौंकाने देने वाली जानकारियों व विवेक-विचार के कौशल के साथ समृद्ध किया और इतनी मजबूती से स्थापित किया कि इसने भविष्य के फिल्म पत्रकारों के लिए प्रकाश स्तंभ का ही किया काम किया। जयप्रकाश चौकसे के दैनिक स्तंभ के केंद्र में भले ही फिल्में और सिनेमा था, लेकिन उनके इस कॉलम की दुनिया इतनी विशाल थी कि इसमें साहित्य, समाज, संस्कृति, लोकजीवन, लोककथाएं, परपंराएं और भारतीय परंपरा की विराट किस्सागोई आकार लेती थी। श्री जयप्रकाश चौकसे का यह सिनेमाई पर्दा फिल्मों की केवल रुपहले पर्दे की रंग-बिरंगी दुनिया ही समेटे हुए नहीं था, बल्कि इसमें व्यवस्था के हर चित्र और आयाम का लेखा-जोखा था। सरकारों से लेकर कलाकारों और साहित्यकारों से लेकर फिल्मकारों की प्रशंसा, आलोचना और तीखे तेवरों के साथ कटाक्ष भी शामिल थे। अपने कॉलम के माध्यम से श्री चौकसे खुले विचारों, लोकतांत्रिक मूल्यों, शोषित, वंचित और पीड़ित वर्ग की भी खबर लेते थे और व्यवस्था को कटघरे में खड़ा करते थे। उनकी पैनी दूरदृष्टि और तीखी नजर ने हाशिए पर पड़े और तकरीकबन उपेक्षित ओर संसाधनविहीन सिनेमा के कलाकारों की पूछ परखी ली, बल्कि उनकी प्रशंसा और सराहना के बीच उन्हें जगह दिलवाने में मदद भी की।

मप्र के बुरहानपुर में 1939 में जन्में जयप्रकाश चौकसे ने अंग्रेजी ओर हिंदी साहित्य में एमए किया था। उनकी लगातार साहित्य और संस्कृति में आवाजाही थी। उन्हें दराबा और ताज जैसे दो उपन्यास लिखे और कहानियां भी लिखीं। साहित्य में वे जितना नए को पढ़ रहे थे उतनी ही उनकी दृष्टि अतीत व प्राचीन सृजन संसार की प्रासंगिकता पर भी बराबर बनी रही। इन पंक्तियों के लेखक की श्री जयप्रकाश चौकसे से दो मुलाकातें हैं। मुंबई में पत्रकारिता करते हुए जब उनके कैंसर जैसे प्राणघातक रोग की गिरफ्त में आने की सूचना मिली थी तब उसके कुछ महीने बाद एक बार अंधेरी पश्चिम के यारी रोड वाले फ्लैट में हिंदुस्तान में कार्यरत् वरिष्ठ खोजी पत्रकार और अभिन्न मित्र मुकेश बालयोगी के साथ मिलना हुआ था और लंबी बातें हुई थीं। उनकी सेहत और कुशलक्षेम के साथ ही उस समय भी उनसे सिनेमा पर लंबी बातचीत हुई। तकरीबन 1 घंटे की इस मुलाकात में भी वे अपनी देह में लग चुके इसे जानलेवा रोग से भयाक्रांत नहीं दिखाई पड़े। किसी मुश्किल अथवा परेशानी से इतर वे लगातार फिल्मों, कवियों और बॉलीवुड में हो रहे प्रयोगधर्मी सिनेमा पर बतियाते रहे। इधर, उनसे दूसरी मुलाकात भी मुंबई में 2014 में अपने अखबार के दफ्तर में ही हुई और लंबी बातचीत के बीच वे घर आने का निमंत्रण देकर लौट गए। इस बीच 2016 में मराठी सिनेमा पर साहित्यिक पत्रिका वसुधा के लिए लिखे लेख में उनसे एक लंबी बातचीत फोन पर हुई। उस दौरान भी उन्होंने लगभग हैरत में ही डाल दिया। मराठी सिनेमा व संस्कृति को लेकर उनकी जानकारियां हतप्रभ करने वाली थीं। तकरीबन एक घंटे

अब मैं किसी भी सूरज को नहीं डूबने दूंगा

सूरज जायेगा भी तो कहां/उसे यहीं रहना होगा/यहीं हमारी सांसों में/हमारी रगों में/हमारे संकल्पों में/हमारे रतजगों में/तुम उदास मत होओ/अब मैं किसी भी सूरज को नही डूबने दूंगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद देते हुए अपने संबोधन की इतिश्री इन्हीं पंक्तियों से की। यह पंक्तियां हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कालजयी कविता 'सूरज को नही डूबने दूंगा' से हैं। प्रधानमंत्री ने भले ही इन पंक्तियों से अपने भाषण खत्म किया हो, लेकिन कविता के यह सकारात्मक शब्द जीने की नयी राह दिखाते हैं। निराशा को आशा में बदलते हैं। इन पंक्तियों में इतनी सकरात्मकता, आशा, उम्मीद और सपने छिपे हैं कि जो एक साथ करोड़ों-करोड़ों देशवासियों के अन्दर एक नयी ऊर्जा का संचार कर जाते हैं। वास्तव में जो सपने देखता है, सकारात्मक सोच रखता है, जो आशा और उम्मीद की डोर टूटने नहीं देता, वही तो आगे बढ़ता है, शिखर को छूता है, इतिहास के पन्नों पर अपना नाम दर्ज करवाता है, भले ही वो कोई व्यक्ति हो या फिर कोई देश। यक्ष प्रश्न यह है कि कोई एक व्यक्ति करोड़ों देशवासियों में एक साथ सकारात्मक ऊर्जा का संचार कैसे कर सकता है? प्रश्न यह भी है कि कोई एक व्यक्ति कैसे लाखों-करोड़ों सूरजों को डूबने से बचा सकता है? आम आदमी तो इस बारे में सोचने का साहस भी नहीं जुटा पाता। लेकिन ये सपने तब पूरे होते हैं जब दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र और सवा सौ करोड़ देशवासियों का प्रतिनिधि संसद के अंदर से ये ऐलान करता है कि 'अब मैं किसी भी सूरज को डूबने नहीं दूंगा', तो करोड़ों देशवासियों में एक नयी ऊर्जा, उमंग और आशा की लहर आर-पार हो जाती है। देशवासियों को एकबारगी लगने लगता है कि सचमुच अब कोई सूरज नहीं डूबेगा। तब लगने लगता है कि आने वाला कल आज से बेहतर होगा। जो सपने हमनें देखे हैं वो जरूर पूरे होंगे, हर सूरज एक दिन आसमान में चमकेगा। 15 अगस्त 1947 की आधी रात को देश ने पंडित नेहरू के नेतृत्व में आधुनिक राष्ट्र बनने का सपना देखा था। इस सपने को साकार करना आसान नहीं था, क्योंकि ये वो दौर था जब देश बंटवारे के दर्द से गुजर रहा था। सांप्रदायिकता और अलगाववादी सोच चरम पर थी। ऐसे वक्त में नेहरू उन विचारों को लेकर मजबूती से खड़े हुए, जिस पर वो पूरी शिद्दत के साथ विश्वास करते थे। जिसे वो आजादी की लड़ाई के वक्त से ही संवार रहे थे। आजादी के बाद जब देश का नेतृत्व नेहरू के हाथ में आया, तब उन्होंने नए भारत के निर्माण में सरदार पटेल और राजेंद्र प्रसाद जैसे परंपरावादियों, सी. राज गोपालाचारी और आंबेडकर जैसे विरोधियों को भी जगह दी। मौलाना आजाद जैसे वामपंथी सोच वाले कांग्रेसी को भी साथ ले कर चले। नेहरू ने ऐसे राष्ट्र के निर्माण की कोशिश की जिसमें मजहब, जाति, रंग या लिंग के आधार पर भेदभाव न होता हो। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आजादी के बाद चंद दशकों में ही राजनीति और राजनेताओं के चरित्र में परिवर्तन आया। जो राजनीति किसी जमाने में जनोन्मुखी थी, वो मंचोन्मुखी हो गयी। बदलते दौर में मंच तो बड़े से विशाल हो गये, लेकिन उन पर बैठने वाले किरदारों का कद बौना हो गया। शायद तभी मशहूर जनकवि अदम गोंडवी ने ये शेर लिखा था, 'चांद है जेरे कदम सूरज खिलौना हो गया, हां मगर इस दौर में किरदार बौना हो गया'। राजनीति देशसेवा छोड़कर, परिवार सेवा में डूब गयी। सत्ता लोलुपता और स्वार्थ के चलते राजनीति वंशवाद और परिवारवाद की चाश्नी में पूरी तरह डूब गयी और तंत्र के तीन खंभों की आपसी समझ, गठजोड़ और मिलीभगत ने मिलकर लोकतंत्र के मालिक 'लोक' को 'साइड लाइन' लगा दिया। बीच-बीच में बदलाव की चिंगारियां फूटी, लेकिन अंधेरा इतना घना और तंत्र के तीन तंतुओं का गठजोड़ इतना मजबूत था कि चिंगारियां चमकने और भड़कने से पहले ही बुझ गयी। तमाम झंझावातों, उठापटक, अभावों, लूट, अव्यवस्था और लोक की दुर्गति के बाद भी न देश रूका और न ही देशवासी। तमाम नकारात्मक शक्तियों में चंद सकारात्मक शक्तियों ने इस देश की आशाओं, उम्मीदों को किसी भी सूरत में मरने नहीं दिया।

आजादी के बाद से आज तक राजनीति ने देशवासियों को लाखों सपने दिखाए हैं। हर पांच साल के बाद नये-नये सपने दिखाने और वादे करने का दस्तूर हमारे यहां पहले चुनाव से लेकर आजतक बदस्तूर जारी है। सपने दिखाना और वादे करना एक बात है, सपने पूरे होना दूसरी बात और यहां दूसरी बात ही अहम है। लेकिन हुआ इसका उल्टा। आजादी के वक्त जो सपने दिखाए गये थे वो आज भी मुकम्मल नहीं हो पाये हैं और सपने दिखाने वाले 'सेवक' से राजा बनकर सत्ता सुख भोग रहे हैं। चंद लोगों ने सत्ता को अपनी दासी बनाकर अपने खूंटे से बांध लिया और करोड़ों सपनों को अपनी झोली में समेट लिया। सत्ता कायम रखने के राजनीति ने जात-पात, बोली-भाषा और क्षेत्रवाद की जहरीले बीज बोने का काम भी किया। लेकिन न देश रूका और न देशवासी। छोटे-छोटे सपनों के साथ देश आगे बढ़ता रहा। यही इस देश की खासियत और महानता है। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भुवनेश्वर के परेड ग्राउंड में 30 अक्टूबर 1984 को एक चुनावी सभा में भाषण में कहा था, 'मैं आज यहां हूं। कल शायद यहां न रहूं। मुझे चिंता नहीं मैं रहूं या न रहूं। देश की चिंता करना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। मेरा लंबा जीवन रहा है और मुझे इस बात का गर्व है कि मैंने अपना पूरा जीवन अपने लोगों की सेवा में बिताया है। मैं अपनी आखिरी सांस तक ऐसा करती रहूंगी और जब मैं मरूंगी तो मेरे खून का एक-एक कतरा भारत को मजबूत करने में लगेगा। जब देश का सबसे सशक्त शख्सियत देश के लिये देशवासियों के लिये कुर्बान होने की जज्बा दिखाए तो देश कैसे पिछड़ सकता है। सन् 1996 में संसद में अपनी पहली अल्पमत सरकार के विश्वास मत के लिए अटल बिहारी वाजपेयी ने भाषण में कहा था कि सत्ता का खेल तो चलेगा..सरकारें आएंगी जाएंगी। पार्टियां बनेंगी बिगड़ेंगी। मगर ये देश रहना चाहिए। इस देश का लोकतंत्र अमर रहना चाहिए। इस भाषण के बाद अटल जी की सरकार तो गिर गयी, लेकिन देश और उसकी आत्मा सदा के लिये बच गयी।

गोर्बाचेव, पुतिन और नाटो, तीसरे विश्व युद्ध की दहलीज पर खड़े हम

हालांकि वर्ष 1991 में सोवियत साम्राज्य के पतन का श्रेय रोनाल्ड रीगन ने अमेरिका को दिया, लेकिन लाखों रूसियों का मानना था कि मिखाइल गोर्बाचेव द्वारा शुरू किए गए पेरेस्त्रोइका और ग्लासनोस्त अंततः सोवियत संघ के विघटन का कारण बने! हैरानी नहीं कि रूस के लोग गोर्बाचेव से नफरत करते थे और उनकी लोकप्रियता घटकर 3.5 फीसदी रह गई। अन्य कई रूसियों की तरह व्लादिमीर पुतिन ने ऐतिहासिक रूस के विघटन पर अपमानित महसूस किया और गोर्बाचेव को कभी माफ नहीं किया। तथ्य यह है कि अत्यधिक विस्तृत सोवियत साम्राज्य आर्थिक रूप से अस्थिर हो गया था और हाशिये पर चला गया था। लेकिन गोर्बाचेव के बिना बर्लिन की दीवार नहीं गिरती और जर्मनी का एकीकरण नहीं होता! जाहिर है, जर्मनी में नायक के रूप में उनका स्वागत किया जाता था। हालांकि अपने संस्मरण में गोर्बाचेव ने नाटो के पूर्व की ओर विस्तार नहीं होने के बारे में कुछ आश्वासनों की बात की थी, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से उन्होंने बाद में अपना दावा वापस ले लिया। हालांकि पुतिन का मानना था कि आश्वासन दिए गए थे। दिसंबर 2021 में चुटकी लेने के लिए उन्हें उद्धृत करते हुए कहा, आपने 1990 में हमसे वादा किया था कि (नाटो) पूर्व की ओर एक इंच भी आगे नहीं बढ़ेगा। आपने बेशर्मी से हमें धोखा दिया। पुतिन यूक्रेन को लेकर विशेष रूप से संवेदनशील थे और कहा था कि अगर यूक्रेन नाटो में शामिल होता है, तो यह रूस की सुरक्षा के लिए सीधे खतरा होगा। उन्हें लगा कि रूस के खिलाफ नाटो के हमले के लिए यूक्रेन फौजों का अड्डा बन सकता है। जॉर्जिया में पुतिन की कार्रवाई और 2014 में क्रीमिया पर उनके कब्जे से नाटो मुख्यालय को समझ जाना चाहिए था कि पुतिन फिर से कार्रवाई कर सकते हैं, यदि उनकी रेडलाइन को पार किया गया। लेकिन नाटो ने पूर्व की ओर बहुत करीबी 14 देशों को लापरवाही से सदस्यता देते हुए अपना विस्तार किया, जिसने रूस को झकझोर कर रख दिया। रक्षा आपूर्ति की रिपोर्ट और यूक्रेन में साइबर हथियार और अंतरिक्ष हथियार को ऑपरेशनल डोमेन में डालने से पुतिन के संदेह और असुरक्षा बढ़ गई होगी। रूस कानूनी रूप से बाध्यकारी प्रतिज्ञा चाहता था कि नाटो आगे विस्तार नहीं करेगा। पुतिन ने यह भी मांग की कि नाटो रूस की सीमाओं के पास हथियार तैनात नहीं करेगा, और 1997 से नाटो में शामिल होने वाले सदस्य देशों से बलों और सैन्य बुनियादी ढांचे को हटा देगा। दूसरे शब्दों में, रूस नाटो को 1997 से पहले की सीमाओं पर वापस भेजना चाहता था। हालांकि 1994 में, रूस ने यूक्रेन की स्वतंत्रता का सम्मान करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन पिछले साल पुतिन ने रूसियों और यूक्रेनियन को एक राष्ट्र के रूप में वर्णित किया और दावा किया कि आधुनिक यूक्रेन कम्युनिस्ट रूस द्वारा बनाया गया था। पुतिन की सुरक्षा संबंधी चिंताएं जायज हैं। नाटो विस्तार लापरवाह और असंवेदनशील रहा है। सोवियत संघ के पतन पर उनके अपमान की भावना और यहां तक कि रूस के पुराने वैश्विक प्रभाव को बहाल करने के उनके सपनों को कोई भी समझ सकता है। अमेरिका, नाटो और यूरोपीय संघ को रूसी चिंताओं को खारिज करने के दोष से मुक्त नहीं किया जा सकता है। लेकिन यूक्रेन पर पुतिन के क्रूर आक्रमण को कुछ भी उचित नहीं ठहरा सकता, जिसके परिणामस्वरूप निर्दोष लोगों की जान चली गई, बुनियादी ढांचे/संपत्तियों का विनाश हुआ और लाखों आम नागरिकों के जीवन में व्यवधान आया, जो पड़ोसी देशों में हताश शरणार्थी बन गए। पुतिन को निश्चित रूप से रोका जाना चाहिए।

शुद्ध पेयजल के लिए हमे जल संचय व जल संरक्षण पर विशेष जोर देना होगाः सांसद

लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए सरकार वृहद योजना चला रहीः जय प्रकाश

❖ लोगों को शुद्ध पेयजल की आवश्यकता के विषय में जागरुक करायें- डीएम

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। विकास भवन के स्वर्ण जयंती सभागार में आयोजित राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन के तहत जल जीवन मिशन की हर घर जल योजनांतर्गत जनपद स्तरीय जन जागरूकता कार्यशाला का उदघाटन मुख्य अतिथि माननीय सांसद हरदोई जय प्रकाश ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि ने कहा कि आज शुद्ध पेयजल के सम्बन्ध पूरा विश्व चिन्तित है इसलिए हमे जल संचय व जल संरक्षण पर विशेष जोर देना चाहिए, सरकार नल के माध्यम से लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए वृहद योजना चला रही है और आने वाली पीढ़ी के लिए पानी को बचाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने इस दिशा में जिलाधिकारी व उनकी प्रशासनिक टीम की सराहना की। कार्यशाला में मा0 सांसद ने अधिशासी अभियंता जल निगम से कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में हर घर जल योजना के अन्तर्गत पाइप लाइन डालने के लिए जिन सड़कों को तोड़ा जाये उन्हें पाइन डालने के बाद संबंधित कार्यदायी संस्था द्वारा पुनः सड़क ठीक कराई जाये और जिन सड़को को ठीक न किया जाये उनका भुगतान रोक दिया जाये। कार्यशाला में जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्था के अधिकारियों से कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय के बच्चों की रैली आदि के माध्यम से जागरूकता अभियान चलायें और ग्राम पंचायत में गरीब परिवारों की बस्तियों में लोगों को शुद्ध पेयजल की आवश्यकता के विषय में जागरूक करायें और लोगों को स्वास्थ्य के महत्व के बारे में बताये। कार्यशाला के दौरान नुक्ड़ नाटक दलों द्वारा नाटक के माध्यम से स्वच्छ पेयजल के महत्व को रेखांकित किया गया। जिलाधिकारी ने कार्यशाला के उपरांत राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन के स्टॉल का निरीक्षण किया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरुरानी, जिला विकास अधिकारी अरविन्द कुमार, अधिशासी अभियंता जल निगम एके त्रिपाठी, जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार सहित एमडी जल जीवन मिशन रियाज खान, पीडीसी नरेश कुमार, एडीपीसी मदन लाल, एमटी जर्नादन यादव, डीपीसी मुबासिर व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

यूपी में हो रहे ब्राह्मणों पर अत्याचारों को लेकर वीबीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष से की मुलाकात

❖ पं.गोपाल शर्मा ने महामना मदनमोहन मालवीय सम्मान से वीबीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष को किया सम्मानित।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन यूपी इंडिया के प्रदेश महामंत्री पंडित गोपाल शर्मा ने वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंडित रविकांत शर्मा से मुलाकात कर उन्हें महामना मदन मोहन मालवीय सम्मान से सम्मानित किया। आपको बताते चलें कि मंगलवार को पंडित गोपाल शर्मा ने वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन के पदाधिकारियों के साथ वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंडित रविकांत शर्मा जी से उनके द्वारिका स्थित कार्यालय पर मुलाकात कर यूपी में ब्राह्मणों पर हो रहे अत्याचारों से अवगत कराया, पंडित गोपाल शर्मा ने बताया कि किस तरह से आज यूपी में बहन, बेटियों और महिलाओं के साथ लूट, हत्या और बलात्कार की घटनाएं आम हो गई हैं, और तो और यूपी में ब्राह्मण परिवारों पर जैसे गाज ही गिर गई है, ऐसा इस योगी सरकार में हो रहा है, योगी सरकार ब्राह्मणों के प्रति अपनी आंखें मूंद अपनी हठधर्मिता दिखाने में लगी है,जैसा आज इस भाजपा सरकार में ब्राह्मण परिवारों की अनदेखी हो रही है, ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ, आज ब्राह्मण समाज को अपनी एकजुटता के साथ आवाज़ उठाने की जरूरत है, जिसके लिए समस्त संगठन को अपनी ताकत दिखाने की जरूरत है ताकि हमारी माता, बहनें व बेटियां अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सकें, भाजपा की कथनी और करनी में हमेशा से ही अंतर रहा है, इस पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंडित रविकांत शर्मा ने वीबीएफ की राष्ट्रीय कमेटी में सामने यूपी में ब्राह्मणों पर हो रहे अत्याचारों को लेकर विचार रख जल्द से जल्द ऐक्शन लेने की बात कही। इस अवसर पर पंडित मूलचंद शर्मा जिला महासचिव, पंडित सुनील शर्मा, पंडित लोकेश शर्मा जिला मीडिया प्रभारी हापुड़ उपस्थित रहे।

एक नज़र

आपदाओं से बचाव को लेकर आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा स्कूलों के शिक्षकों को दिया जा रहा है प्रशिक्षण

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। जनसामान्य को आपदाओं से बचाव के प्रति जागरूक करने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एवं जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, हरदोई के संयुक्त तत्वाधान में स्कूल/डिग्री कॉलेज एवं ग्राम पंचायत स्तर पर आपदा जन-जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। 20 दिसम्बर से प्रारम्भ हुआ जनजागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आगामी 11 जनवरी तक चलेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के छठे दिन आज राजकीय इंटर कॉलेज हरदोई में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को मास्टर ट्रेनरों द्वारा आपदा प्रबंधन चक्र, भारत में आपदा प्रबंधन का तंत्र, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पेरिस समझौता, सेंडई फ्रेमवर्क, के संबंध में प्रशिक्षण दिया। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) प्रियंका सिंह द्वारा विभिन्न आपदाओं जैसे आकाशीय विद्युत, डूबना, अग्निकांड, बाढ़, शीतलहर, लू सर्पदंश, आधी तूफान, भूकम्प, ओलावृष्टि आदि विभिन्न आपदाओं के बारे में बताया और इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को सभी शिक्षकों द्वारा प्राप्त करने के बाद इन आपदाओं के बारे में स्कूल के विद्यार्थियों कर्मचारी शिक्षकों और समुदाय के लोगों के उपयोग के बीच साझा करने को भी कहा। इसके साथ ही मास्टर ट्रेनरों द्वारा शिक्षकों को सचेत ऐप और दामिनी ऐप के सम्बन्ध में बताया और उनके मोबाइल में इंस्टॉल भी कराया। स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा आपदा के समय प्रभावित व्यक्ति को प्राथमिक उपचार कैसे दिया जाता है और सीपीआई आदि के बारे प्रेक्टिकल करके डिमोंस्ट्रेट किया गया। इसके अगले चरण में सुशील कुमार सिंह प्रभारी अधिकारी अग्निशमन द्वारा सिलेंडर की आग को घरेलू नुस्खे से कैसे बुझाए जा सकता है इसके बारे में भी प्रेक्टिकल डेमोंसट्रेशन करके बताया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आपदा विशेषज्ञ ज्ञान दीप शर्मा, आपदा लिपिक पंकज कुमार और प्रवीण श्रीवास्तव और अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

डॉ अनिल बाजपेई हरियाणा में हूए सम्मानित, लोगों ने दी बधाई

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दिल्ली गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग भारत सरकार द्वारा यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी के प्रशासनिक अधिकारी डॉ अनिल बाजपेई को हरियाणा में सम्मानित किया गया। यह सम्मान बाजपेई को गुरुग्राम स्थित पंजाब बैंक के प्रधान कार्यालय के एक ऑडिटोरियम में दिया गया। राजभाषा सदस्य सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक ने कहा डॉ अनिल बाजपेई की कविताएं जहां एक ओर वीर रस से श्रोताओं में जोश भरती हैं वहीं दूसरी ओर उनकी लेखनी हास्य व्यंग्य की ओर भी चलकर मुस्कराहट बिखेरने का भी कार्य करती है। बाजपेई की इस उपलब्धि पर यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी के दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय 2 के उप महाप्रबंधक श्री जी के बंसल,शाखा कार्यालय हापुड़ वरिष्ठ शाखा प्रबंधक प्रियंका त्यागी, सहायक शाखा प्रबंधक प्रमोद कुमार,वरिष्ठ सहायक धीरज शर्मा,नीरजा तिवारी,लता रानी,प्रीतम,सरदार बीरेंद्र सिंह,अमित ने बधाइयां प्रेषित करते हुए कहा कि यह हमारे कार्यालय के लिए गर्व और गौरव की बात है। एलायंस क्लब के पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर राकेश माहेश्वरी,विनोद गुप्ता,रविंद्र सिंघल,सिमरन गोयल,डा आराधना बाजपेई के साथ साथ अखिल भारतीय साहित्य परिषद, अखिल भारतीय साहित्यालोक,हिंदी प्रोत्साहन समिति के पदाधिकारियों ने भी बधाई प्रेषित की।

लोकेशन थाना ढीमरखेड़ा जिला कटनी मध्य प्रदेश

पिकअप की टक्कर से पति की मौत,पत्नि घायल।

द अचीवर टाइम्स इंद्र कुमार पटेल, गाड़ी नंबर एम पी 20 जी ए जिसमें ग्राम देवरी पिकअप बर्मन का पिकअप बताया जा रहा है जिसमें गाड़ी नंबर गाड़ी नंबर MP 20 GA 2972 जिसमें पिकअप में सामने लिखा हुआ है जय मां कंकाली प्रकरण दर्ज कर मामले की जांच में जुटी पुलिस,मध्य प्रदेश जिला कटनी ढीमरखेड़ा थाना क्षेत्र के पिंडरई के समीप की घटना-ढीमरखेड़ा थाना क्षेत्र के पिंडरई गांव के समीप मंगलवार को पिकअप चालक ने बाइक सवार दंपत्ति को टक्कर मार दी। घटना में पति की मौत हो गई ,जबकि पत्नि की हालत गंभीर है।पुलिस मर्ग कायम कर मामले की जांच में जुटी है। हासिल जानकारी के मुताबिक ढीमरखेड़ा थाना क्षेत्र के भैसवाही निवासी भागचंद ठाकुर अपनी पत्नि सीमा ठाकुर को बाइक से लेकर कोठी गांव ससुराल जा रहा था। पिंडरई गांव के समीप पिकअप वाहन के चालक ने बाइक में टक्कर मार दी। बाइक सहित दंपत्ति सड़क पर गिर गए। ग्रामीणों ने एम्बुलेंस की सहायता से उमरियापान अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टर ने भागचंद को मृत बता दिया जबकि सीमा को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल के लिए रेफर किया है। पुलिस टक्कर मारने वाले चालक के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर जांच में जुटी है।

केन्द्रीय मंत्री नितिन गड़करी के पर्सनल सचिव से मिला भाकियू अराजनीतिक प्रतिनिधिमंडल

गढ़मुक्तेश्वर में प्रस्तावित टोल प्लाजा को हटवाने की मांग को हटवाने की मांग

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। भारतीय किसान यूनियन अराजनीतिक के जिलाध्यक्ष पवन हूण के नेतृत्व में किसानों का एक प्रतिनिधिमंडल बुधवार को केन्द्रीय मंत्री नितिन गड़करी के पर्सनल सचिव पीएस सिनधे से मिला और उन्हें जनपद के किसानों की समस्याओ से अवगत कराते हुए एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया गया कि किसानो की मांग है कि जिला हापुड़ क्षेत्र के किसानों के हित को दृष्टिगत रखते हुए जनपद हापुड़, उ0प्र0 से गंगा एक्सप्रेस-वे निकल रहा है जिसमें काफी किसानों की जमीनें गंगा एक्सप्रेस-वे के दोनों तरफ बच गयी है, जिसके कारण किसानों को अपने खेत की जमीन पर पहुँचने में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा, इसलिए किसानों के हित को देखते हुए व जिले में औद्योगीकरण योजना को बढ़ावा देने हेतु गंगा एक्सप्रेस-वे के दोनो तरफ सर्विस रोड का निर्माण कराया जाना सुनिश्चित किया जाये। जिला हापुड़ एक बहुत कम एरिये का जिला है, जिसमें मात्र तीन तहसीले ही आती है और जिसमें पहले से ही तीन टोल टैक्स प्लाजा संचालित है और चौथे टोल टैक्स प्लाजा शुरू होने जा रहा है। जनहित में गढ़मुक्तेश्वर के टोल टैक्स प्लाजा को हटवाया जाए।किसान प्रतिनिधिमंडल में वरिष्ठ किसान नेता राजेंद्र गुर्जर, जिला संरक्षक कटार सिंह गुर्जर, रवि भाटी प्रदेश सचिव युवा, अजब सिंह रोसा, मोनू त्यागी तहसील अध्यक्ष हापुड़, यतेंद्र कसाना आदि शामिल रहे।

कृषि विभाग द्वारा आयोजित रोड शो का जिलाधिकारी ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

❖ मिलेट्स खाद्य पदार्थ के प्रयोग से दैनिक जीवन की अनेक बीमारियों का से छुटकारा पाया जा सकता है-डीएम, हापुड़।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। मिलेट्स पुनरोद्धार कार्यक्रम वर्ष 2023-24 अन्तर्गत कृषि विभाग द्वारा आयोजित रोड शो का शुभारंभ जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर कलेक्ट परिसर से रवाना किया। यह रोड शो कलेक्ट्रेट परिसर हापुड़ से पक्का बाग चौराहा हापुड़ तक आयोजित किया गया। इसके माध्यम से जन सामान्य को मिलेट्स फसलों के दैनिक भोजन में इस्तेमाल करने तथा उत्पादन के लिए प्रेरित किया गया जिलाधिकारी ने कहा कि मिलेट्स खाद्य पदार्थ के प्रयोग से दैनिक जीवन की अनेक बीमारियों का से छुटकारा पाया जा सकता है अतः हमें अपने भोजन में मोटे अनाजों को सम्मिलित करने पर बल दिया जाना चाहिए। इस रोड शो में उप कृषि निदेशक हापुड़ डा0 वी0बी0 द्विवेदी एवं कृषि विभाग के कर्मचारी तथा विद्यालयों के छात्रों द्वारा प्रतिभाग किया गया। रोड़ शो में सम्मिलित सभी प्रतिभागियो को मिलेट्स लोगो की टी-शर्ट एवं कैप प्रदान की गयी। इसके उपरान्त प्रचार प्रचारक बैन, पोस्टर, बैनर एवं तख्तियो के द्वारा मिलेट्स फसलो, उत्पादो का प्रदर्शन करके जन सामान्य को जागरूक किया गया।

कोतवाली बिलग्राम में 16 हिस्ट्रीशीटर अपराधियों को परेड करा दी गई विशेष जिम्मेदारी

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। बिलग्राम कोतवाली पुलिस ने थाने में दर्ज विभिन्न आपराधिक मामलों में लिप्त रहे 16 हिस्ट्रीशीटर अपराधियों को कोतवाली परिसर में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें एक शपथ दिलाई गई।जिसके तहत क्षेत्र में होने वाले हर आपराधिक व सन्देहास्पद घटनाओं को अंजाम देने वाले लोगों की जानकारी पुलिस को देना होगी।क्योंकि अधिकांश मामलों में कुछ नए लोगों द्वारा छुटपुट घटनाओं को अंजाम दिया जाता रहा है जिसका ठीकरा पुराने अपराधों में लिप्त रहे लोगों पर स्थानीय लोगों द्वारा विभिन्न चर्चाओं के दौरान सन्देहास्पद परिस्थितियों में ठहराया जाता है।जिसके चलते जिन घटनाओं में शामिल न रहे लोग सभ्रांत व्यक्तियों के कोपभाजन का शिकार बन रहे थे।लेकिन इस बार कोतवाली बिलग्राम परिसर में आयोजित विशेष पाठशाला में हिस्ट्रीशीटर सभी 16 अपराधियों को कानून का पाठ समझ में आया जिन्होंने स्वयं ही एक शपथपत्र देकर बाकायदा लिखित शपथ ग्रहण करते हुए संकल्प लिया कि वह क्षेत्र व अपने आसपास किसी भी आयुवर्ग के बच्चों को अपराध की दुनियां में नहीं जाने देंगे।हर संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी कोतवाली पुलिस को समय रहते हुए देंगे व कानून का पालन भी बखूबी करेंगे।

तेरवीं में गए पत्रकार के पिता पर गांव के हिस्ट्री सीटर एवं दो लड़कों ने किया जानलेवा हमला

पूर्व में जिला बदर भी रह चुका है हिस्ट्री सीटर टोनी उर्फ नागेंद्र

❖ पीड़ित की तहरीर पर कप्तान ने दिए आरोपियों को गिरफ्तार कर विभिन्न धाराओं में मुकदमा पंजीकृत करने के आदेश।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़ । गांव बजदा खुर्द निवासी 75 वर्षीय रिटायर्ड अध्यापक वीरेंद्र सिंह 26 दिसंबर को अपनी भाभी की 13वीं में शरीक होने अपने पुस्तैनी गांव गए थे जहां मौजूद हिस्ट्री सीटर और जिला बदल रह चुके टोनी उर्फ नागेंद्र एवं उसके दो लड़के जिनके नाम क्रमशः है निशु उर्फ प्रदीप एवं भोलू उर्फ प्रिंस है तीनों ने मिलकर अचानक बुजुर्ग पर लात घुसो से हमला बोल दिया मौके पर मौजूद बुजुर्ग के दूसरे भतीजे सुनील उर्फ जबरा ने अपने चाचा को उनके चुंगल से छुड़ाया और अपने भतीजे द्वारा बुजुर्ग को घर छुड़वा दिया । गांव समाज के सामने उपरोक्त युवकों द्वारा मार पिटाई किए जाने पर शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना झेल रहे बुजुर्ग को इतना आत्मज्ञानी हुई की घर पहुंच कर उसने आत्महत्या की कोशिश की उपरोक्त घटना की सूचना रिश्तेदार से मिलने पर बुजुर्ग के बेटे ने तत्काल हापुड़ कप्तान से मिलकर बुजुर्ग की आपबीती सुनाई क्रमवार घटना सुनकर हापुड़ कप्तान ने संबंधित थाने के कोतवाल को उपरोक्त आरोपियों को गिरफ्तार कर मुकदमा पंजीकृत करने के आदेश दिए हैं कल हुई इस घटना से पीड़ित का परिवार डरा और सहमा हुआ है गौरतलब है कि उपरोक्त हिस्ट्रीसीटर टोनी उर्फ नागेंद्र पीड़ित एवं पीड़ित की भाभी दोनों की पुश्तैनी जमीन पर अवैध कब्जा किए हुए हैं जिसकी जांच उच्च अधिकारी स्तर पर चल रही है जमीन पर इस अवैध कब्जे के चलते उपरोक्त हिस्ट्री सीटर एवं उसके दोनों लड़कों ने इस वारदात को अंजाम दिया है वहीं दूसरी और कोतवाली पुलिस ने पीड़ित को उपचार हेतु मेडिकल के लिए भेज दिया है गौरतलब है की बुलडोजर बाबा कहे जाने वाले योगी आदित्यनाथ की सरकार में जहां एक तरफ शासन प्रशासन भू माफियाओं को ढूंढ ढूंढ कर अवैध कब्जा की गई संपत्तियों पर बुलडोजर चला रही है वहां जिला बदल रह चुका एक कुख्यात अपराधी लगातार खुलकर बार बार अवैध कब्जे एवं जानलेवा हमले जैसी वारदातों को अंजाम देकर शासन प्रशासन को खूनी चुनौती दे रहा है

जनपद में विटामिन ए संपूरण अभियान शुरू

लगभग 5.54 लाख बच्चों को विटामिन ए की दवा पिलाने का लक्ष्य

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। विटामिन ए संपूरण कार्यक्रम के तहत बुधवार को विटामिन ए संपूरण अभियान शुरू हुआ जिसके तहत नौ से पाँच साल तक के बच्चों को विटामिन ए की दवा पिलाई जाएगी। इसी क्रम में अभियान का शुभारंभ मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. रोहताश कुमार ने जिला महिला चिकित्सालय में बच्चे को विटामिन ए की दवा पिलाकर किया। इस मौके पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने उपस्थित लोगों से अपील करते हुए कहा कि अपने बच्चों को विटामिन ए की दवा जरूर पिलाएं। यह अंधेपन, रतौंधी, कुपोषण,निमोनिया, छाती के संक्रमण सहित अन्य बीमारियों से बचाता है, इसके साथ ही शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है जिससे कि बच्चा जल्दी जल्दी बीमार नहीं पड़ता है। नौ माह से पाँच साल तक के बच्चों को विटामिन ए की 9 खुराकें पिलाकर बीमारियों से बचाया जा सकता है। जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डा.आर.के.सिंह ने बताया कि जनपद में नौ माह से पाँच साल तक के लगभग 5.54 लाख बच्चों को विटामिन ए की दवा पिलाने का लक्ष्य है। जिसमे एक साल तक के 32,236 बच्चे, एक से दो साल के 1,21,474 बच्चे और दो से पाँच साल के 3,99,850 बच्चों को विटामिन ए की दवा पिलाने का लक्ष्य है। जिला प्रतिरक्षण अधिकारी ने कहा कि विटामिन ए पीले लाल और हरे फलों तथा सब्जियों में पाया जाता है इसलिए हरी पत्तेदार सब्जियों, आम, पपीता, गाजर, पालक आदि को भोजन की थाली में जरूर रखें और बच्चों को इनका सेवन कराना सुनिश्चित करें। इस मौके पर जिला महिला चिकित्सालय के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डा. सुबोध, यूनिसेफ़ से संजू कश्यप, यूएनडीपी के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

योजनाओं से संबंधित आवेदन पत्र बैंक स्तर पर लंबित होने पर डीएम हुई नाराज

❖बैंकर सरकारी योजनाओ के सफल क्रियान्वयन मे मदद करे- जिलाधिकारी।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा ने जिला स्तरीय सलाहकार समिति, जिला स्तरीय समीक्षा समिति, जिला स्तरीय सुरक्षा समिति की बैठक बैंक अधिकारीयों के साथ कलेक्टर सभागार में की ,उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से सम्बंधित आवेदन पत्र बैंक स्तर पर किसी भी कीमत पर लंबित नहीं होने चाहिए। जिन बैंकों को सरकारी योजनाओं से सम्बंधित ऋण आदि संबंध में जो लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं वह उसे हर हालत में पूरा करें तथा यदि किसी प्रकार की समस्या हो तो संबंधित अधिकारी से समन्वय करें। जिलाधिकारी द्वारा बैंक ऑफ बड़ौदा के अधिकारियों से उनके स्तर पर लंबित आवेदनों के बारे में पूछे जाने पर अभिज्ञता जाहिर की। उन्होंने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, एक जनपद एक उत्पाद कार्यक्रम, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना, मुख्यमंत्री माटी कला रोजगार योजना, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना तथा दीनदयाल अंत्योदय योजना के तहत राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के घटक स्वरोजगार कार्यक्रम के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूह की खाता खुलवाने हेतु बैंक स्तर पर लंबित आवेदन तथा अन्य योजनाओं से संबंधित आवेदन पत्र के बैंक स्तर पर लंबित होने पर नाराजगी जाहिर की। उन्होंने बैंकों से आवेदन पत्रों के के ससमय निस्तारण करने के निर्देश दिए। बैंकों के अधिकारियों द्वारा योजनाओं से संबंधित आवेदनों के बारे में उचित जानकारी न होने पर उन्होंने पुनः बैठक 30 दिसंबर को निर्धारित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बैंक आवेदन पत्रों के निर्धारित समय मे निस्तारण करके योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में मदद कर सकते हैं। यदि बैंक अधिकारी को किसी प्रकार की समस्या हो तो संबंधित अधिकारी से संपर्क कर सकते हैं। उन्होंने प्रदेश सरकार तथा केंद्र सरकार की योजनाओं के उद्देश्य को पूरा करने के लिए बैंकों से सहयोग करने को कहा। बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी अभिषेक कुमार वर्मा, अपर जिलाधिकारी वित्त/राजस्व संदीप कुमार, उप जिलाधिकारी, उपयुक्त उद्योग तथा अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

किसानों के खातों में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि भेजे जाने दिया गया का प्रमाण

विकसित भारत संकल्प यात्रा का मुख्य उद्देश्य हैं कि ग्राम पंचायत में निवासित जन समूह को जनपद में संचालित योजनाओं का लाभ जन- जन तक पहुंचाना

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

उन्नाव। भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार की मंशा के अनुरूप जनपद में प्रदेश सरकार से प्राप्त 10 सचल वाहनों द्वारा विकसित भारत संकल्प यात्रा संचालित की जा रहीं हैं। यह यात्रा जनपद के 10 विकास खण्डों की 20 ग्राम पंचायतों में प्रत्येक दिवस संचालित की जा रहीं हैं। विकसित भारत संकल्प यात्रा का मुख्य उद्देश्य हैं कि ग्राम पंचायत में निवासित जन समूह को जनपद में संचालित योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुंचाना। विकसित भारत संकल्प यात्रा की आज की कड़ी में जनपद के सिकन्दरपुर सिरोसी, सिकन्दरपुर कर्ण, सुमेरपुर, पुरवा, हसनगंज, मियाँगंज, औरास, गंजमुरादाबाद, सफीपुर, हिलौली कुल दस विकास खण्डों के बीस ग्राम पंचायतों को आच्छादित किया गया। आज का आयोजन जनपद के सभी विकास खण्डों में लगभग 23000 स्थानीय निवासियों ने प्रतिभाग कर

वर्ष 2047 तक भारत देश को विकसित करने का संकल्प लिया। विकसित भारत संकल्प यात्रा दौरान ग्राम पंचायत में निवासित ग्रामवासियों तक जनपद में संचालित योजनाओं का लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से राजस्व विभाग, सहकारिता, कृषि विभाग, स्वास्थ विभाग, खाद्य एवं आपूर्ति, ग्राम्य विकास विभाग, महिला एवं बाल विकास पुष्टाहार, बेसिक शिक्षा, जिला अग्रणी बैंक, पशुपालन विभाग, नेहरू युवा केन्द्र एवं समाज कल्याण विभाग द्वारा स्टाल लगाकर लाभान्वित किया गया।

कृषि विभाग के तत्वावधान में संचालित प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के किसानों की ईकेवाईसी, एनपीसीआई, भू-अंकन एवं किसानों का ओपेन सोर्स के लगभग 118 किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया तथा प्रत्येक ग्राम पंचायत के 05 किसानों के खातों में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि भेजे जाने का प्रमाण दिया गया। विकास खण्ड हसनगंज के ग्राम पंचायत शेरवा अलादादपुर में विधायक मोहान बृजेश रावत, विकास खण्ड गंजमुरादाबाद ग्राम पंचायत कैथोली एवं गोवा पट्टी में विधायक बाँगरमऊ श्रीकान्त कटियार, विकास खण्ड औरास के ग्राम पंचायत मोहम्मदपुर चक सुनौरा में विधायक सफीपुर बम्बा लाल दिवाकर, सिकन्दरपुर सिरोसी के ग्राम पंचायत प्यारेपुर में विधायक सदर पंकज गुप्ता एवं जिला भाजपा अध्यक्ष श्रीकांत कटियार, विकास खण्ड सिकन्दरपुर कर्ण के ग्राम पंचायत बेहटी गोपालपुर में विधायक भगवन्त नगर आशुतोष शुक्ला ने प्रतिभाग कर किसान उपस्थित जन-समूह की समस्याओं से अवगत हुए तथा जिन समस्याओं का निदान तत्काल सम्भव था उसका निदान करवायें अन्य समस्याओं का अतिशीघ्र निदान कराने का आश्वासन दिया।

वृद्ध महिला का शव सीएचसी के गेट पर डालकर भाग गए 108 एंबुलेंस चालक

द अचीवर टाइम्स रमेश चन्द्र लखीमपुर खीरी

फरधान। 108 एंबुलेंस चालक का एक नया कारनामा सामने आया है। एंबुलेंस चालक बीती देर रात को एक अज्ञात 60 वर्षीय महिला का शव सीएचसी फरधान के गेट पर डालकर भाग गए। पूरी घटना मेडिकल स्टोर के कैमरे में हुई कैद। पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। शव की शिनाख्त नहीं हो सकी। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फरधान गेट के सामने मेडिकल स्टोर के पास आज सुबह लगभग 60 वर्ष से एक अज्ञात बुजुर्ग महिला का शव कंबल में लिपटा हुआ मिला। नरदवल पुरवा निवासी प्रमोद श्रीवास्तव ने पुलिस को सूचना दी। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। काफी देर शिनाख्त कराने का प्रयास किया लेकिन नहीं हो सकी। वहीं इस घटना से संबंधित एक सीसीटीवी फुटेज सामने आया

है एसओ बृजेश कुमार मौर्य ने बताया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गेट के सामने एक मेडिकल स्टोर में सीसीटीवी फुटेज लगा था। जिसमें देखने पर घटना की जानकारी हुई है कि बीती रात करीब 11-15 बजे 108 एम्बुलेंस लखीमपुर के तरफ से आई और कैमरे को बचाते हुए थोड़ा आगे खड़ी करने के बाद उसमें से दो युवकों ने उतरकर एक वृद्ध महिला का शव मेडिकल स्टोर के पास बने पक्की बेंच के पास में लिटा दिया और एक अस्पताल से मिला सरकारी पुराना कंबल उड़ा दिया। उसके बाद वह लोग फरार हो गए। पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर शव डालने वाले लोगों की खोजबीन की जा रही है। रात में अधिक कोहरा पड़ रहा था जिसकी वजह से एंबुलेंस का नंबर नहीं दिख रहा है। जिसकी खोजबीन की जा रही। शव को शिनाख्त के लिए मोर्चरी में रखवा दिया है।

जल जीवन मिशन के अंतर्गत हुआ एलईडी वैनों का शुभारंभ

बाराबंकी। राज्य पेयजल स्वच्छता मिशन नमामि गंगे तथा जल निगम (ग्रामीण) विभाग उत्तर प्रदेश शासन द्वारा जल जीवन मिशन के अंतर्गत जनपद के समस्त राजस्व ग्रामीण में फंक्शनल हाउसहोल्ड टेप कनेक्शन शुद्ध एवं सुरक्षित पेयजल तथा जल जनित बीमारियों से बचाव हेतु एलईडी वैनों के माध्यम से वीडियो फिल्म प्रदर्शन कर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके क्रम मेंआज जनपद स्तर विकास खंड स्तर तथा राजस्व ग्राम स्तर पर एलईडी वैनों के माध्यम से पेयजल एवं स्वच्छता के प्रति जन जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया इस कार्यक्रम के मौके पर डीपीएमयू टीम , टीपीआई टीम, लैब टीम सहायकअभियंता ,जूनियर इंजीनियर तथा समस्त जल निगम स्टाफ मौजूद था। एलईडी वैनों का शुभारंभ जल निगम के अधिशासी अभियंता अमित कुमार ने किया इस अवसर परजिला परियोजना समन्वयक सोनू सैनी, आशीष तिवारी सहायक अभियंता के साथ जल जीवन मिशन से सत्यनारायण तथा विंग्स लखनऊ की टीम उपस्थित थी

एक नज़र

अज्ञात महिला का मिला शव

द अचीवर टाइम्स ,सुशील अवस्थी

सीतापुर।महमूदाबाद कोतवाली के अंतर्गत बाबूपुर छेत्र मे एक अज्ञात महिला का शव मिलने से खलबली मच गयी ग्रमीणों ने पुलिस को सूचना दी मोके पर इंस्पेक्टर ओमवीर सिंह व वरिष्ठ उपनिरीक्षक अरविंद कुमार कटियार पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सीतापुर भेज दिया गया आप पास लोगो से पूछताछ में महिला का पता नही सका इंस्पेक्टर ओम वीर सिंह ने ग्रामीणों से अपील की जो भी भी इस महिला को जानता हो कृपया करके महमूदाबाद कोतवाली को सूचित करें।

समाज सेवियों के द्वारा वितरण किया गया कम्बल

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

सिरौलीगौसपुर बाराबंकी। समाज सेवियों ने कोटवाधाम चौराहे पर गरीब असंहाय लोगों को सर्दी से बचाने हेतु सैकड़ों लोगों को कम्बल एवं गरम कपड़े एंव लंच पैकेट वितरित कर पुण्य कमायी । कोटवाधाम चौराहे पर स्थित श्रीमती गुड़िया देवी के आवास पर संजय कुमार सक्सेना, मिहिर विसेन स्वारुप डाक्टर हर्ष डाक्टर स्मृति इं. रजत आदि ने बेबी मिशिका के हाथों से गर्म कम्बल लंच पैकेट एंव गर्म कपडे बितरित करवा कर पुण्य कमायी।इस मौके पर सृष्टि वंश मृदु कुशाग्र समाज सेवी प्रमोद कुमार रावत नन्हा, दिनेश कुमार रावत शालू रावत, शौम्या रावत दीपक दास आदि उपस्थित रहे।

युवक ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

रामनगर बाराबंकी। थाना क्षेत्र के महादेवा चौकी अंतर्गत ग्राम पंचायत भैरमपुर के एक युवक ने बीते सोमवार को गन्ने के खेत मे फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक भैरमपुर निवासी गोलू वर्मा पुत्र केशव वर्मा उम्र लगभग 25 वर्ष है। ग्रामीणों ने बताया छः माह पूर्व सऊदी अरब से युवक कमाई करके घर वापस आया था। बीते सोमवार गन्ने के खेत में शीशम के पेड़ पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। जिससे चलते पूरे गांव में कोहराम मच गया। हा ये बात और है कि परिजनों को जानकारी होने पर उन्होंने पुलिस को बिना सूचना दिए मृतक के शव का अंतिम संस्कार कर दिया। वहीं घटना को लेकर परिजनों ने किसी तरह का किसी पर भी आरोप नही लगाया है।

उत्तर प्रदेश तीरंदाजी संघ, जिलाधिकारी तथा पुलिस अधीक्षक की उपस्थिति में राज्य स्तरीय तीरंदाजी 12वीं मिनी सब जूनियर एवं चौथी अंडर 9 चैंपियनशिप का शुभारंभ,

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी । तीन दिवसीय दिनांक 25 दिसंबर से 27 दिसंबर 2023 राज्य स्तरीय तीरंदाजी 12वीं मिनी सब जूनियर एवं चौथी अंडर 9 चैंपियनशिप का शुभारंभ के0 डी0 सिंह बाबू स्टेडियम बाराबंकी में हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश तीरंदाजी संघ के प्रदेश अध्यक्ष अवनीश अवस्थी जी सलाहकार मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश एवं विशिष्ट अतिथि जिलाधिकारी सत्येन्द्र कुमार और पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह उपस्थित रहे। इस प्रतियोगिता में प्रदेश के अलग-अलग जनपदों से अंडर-9 एवं अंडर-14 के लगभग 200 खिलाड़ी एवं उनके कोच और टीम मैनेजर उपस्थित रहे। जिला तीरंदाजी संघ के अध्यक्ष हरपाल सिंह संरक्षक कुशाल अग्रवाल एवं सचिव कपिल वर्मा ने अतिथियों को पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका अभिवादन किया। इस प्रतियोगिता में कई अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी उपस्थित रहें जिसमें से विशेष योगदान विश्वास जी विकास शास्त्री जी का रहा। प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि ने स्वयं मैदान में जाकर खिलाड़ियों से हाथ मिलाकर एवं उनको मंच पर बुलाकर उनका उत्साह वर्धन किया मुख्य अतिथि अवनीश अवस्थी जी ने प्रतियोगिता संपन्न करने के लिए जिला आर्चरी एसोसिएशन बाराबंकी को 51000 रु की धनराशि देने की घोषणा की। यह प्रतियोगिता जिला तीरंदाजी संघ सचिव सोनभद्र बलराम कृष्ण यादव जी की देखरेख में हुई। उद्घाटन समारोह का संचालन श्री संजय कुमार जी बलराम कृष्ण यादव जी ने संयुक्त रूप से की।

उपचार के दौरान श्रमिक की मौत, आक्रोशित परिजनों ने फैक्ट्री गेट पर काटा हंगामा।

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

उन्नाव। अजगैन कोतवाली क्षेत्र के गोकुल खेड़ा निवासी 65 वर्षीय लल्लू 12 दिसंबर को दही औद्योगिक क्षेत्र के एक केमिकल फैक्ट्री में साइकिल से काम करने जा रहे थे। इस दौरान किसी अज्ञात वाहन की टक्कर लगने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया था तबसे उनका उपचार लखनऊ के एक निजी अस्पताल में चल रहा था। मंगलवार सुबह उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई। इलाज में किसी प्रकार का फैक्ट्री द्वारा सहयोग नहीं मिलने से नाराज परिजनों और ग्रामीणों ने फैक्ट्री गेट पर पहुंचकर हंगामा किया तो इसकी सूचना तत्काल फैक्ट्री प्रबंधन ने पुलिस को दी। सूचना पाकर मौके पर पहुंचे दही थाना प्रभारी अनुराग सिंह ने मृतक के स्वजनों को समझा- बूझकर मामला शांत कराया और फैक्ट्री प्रबंधन से बात कराई जिसमें फैक्ट्री प्रबंधन ने 02 लाख इलाज हेतु और डेढ़ लाख ग्रेजुएटी देने की बात कही हैं।फैक्ट्री प्रबंधन से वार्ता के दौरान मृतक के बेटे गुड्डू और मिथलेश मौजूद थे। घटना से आहत पत्नी राजेश्वरी सहित स्वजनों का रो-रोकर बुरा हाल हैं। जबकि फैक्ट्री की तरफ से दो लाख की पत्नी के नाम चेक और दस हजार अंतिम संस्कार के लिए दिए गए हैं।

खुद को समाज से जोड़ें, फिर समाज जुड़ेगा : पूर्व न्यायमूर्ति अजय रस्तोगी

❖ दो दिवसीय हरिश्चंद्र वंशीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरु

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। गोमतीनगर स्थित इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में बुधवार को दो दिवसीय हरिश्चंद्र वंशीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के पहले दिन वक्ताओं ने समाज के उत्थान को लेकर विभिन्न पहलुओं पर अपनी राय रखी। कार्यक्रम के दौरान एक तरफ जहां सामाजिक मुद्दों पर पैनल डिसकशन किया गया तो वहीं युवा प्रतिभाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देकर आनंद की अनुभूति कराई। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में महाराजा हरिश्चंद्र की प्रतिमा के समक्ष दीप जलाकर मंचासीन अतिथियों ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

सभा को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति अजय रस्तोगी ने कहा, समाज के उत्थान के लिए अच्छे विचारों को साकार रूप देने की जरूरत है। लेकिन पहले खुद को समाज में जोड़ें, फिर समाज आपसे जुड़ेगा। जो व्यक्ति समाज के उत्थान में अपना सहयोग देता है उसी का नाम इतिहास में दर्ज होता है। समाज उत्थान के लिए सभी को एकजुट होने की जरूरत है। इसके लिए जरूरी है कि सभी लोग अपनी आय का कुछ अंश समाज कल्याण के लिए दान दें। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कोलकाता के प्रदीप रस्तोगी ने कहा, कि वह 01 हज़ार गुल्लक लखनऊ हरिश्चन्द्र वंशीय समाज को देंगे, जिससे एक बचत की मुहिम व्यापक रूप से चलाई जाए। स्वास्थ्य सेवा को लेकर पैनल डिसकशन में कार्यक्रम का संचालन सुधांशु रस्तोगी ने किया। जिसमें लोहिया संस्थान के कैन्सर विशषज्ञ डॉ मधुप रस्तोगी, डॉ शिवानी रस्तोगी, रेडियोलॉजिस्ट डॉ स्वतंत्र रस्तोगी, विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ वीसी रस्तोगी और लखनऊ विश्वविद्यालय के फिडियोलॉजी विभाग की डॉ अल्पना रस्तोगी ने बेहतर स्वास्थ्य का ख्याल रखने पर स्वस्थ रहने का उपाय बताया। इस मौके पर समाज के देहली से आई हुई श्रीमती इंदिरा मोहन, द्वारका प्रसाद रुस्तगी एवं डा प्रवीन रोहतगी, वाराणसी से आये हुए विजय शंकर जी, अध्यक्ष राजन रस्तोगी, महामंत्री प्रदीप रस्तोगी, कोषाध्यक्ष आशीष रस्तोगी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष संजीव रस्तोगी, संरक्षक हरि जीवन रस्तोगी ने समाज कल्याण को लेकर अपने विचार व्यक्त किये। मीडिया प्रभारी धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी ने बतलाया कि गुरुवार को सम्मेलन के दूसरे व आखिरी दिन मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध रंगकर्मी व अभिनेता डॉ अनिल रस्तोगी द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया जाएगा।

जल जीवन मिशन के अंतर्गत रामनगर में हुआ एलईडी वैनों का शुभारंभ

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी। राज्य पेयजल स्वच्छता मिशन नमामि गंगे तथा जल आपूर्ति विभाग उत्तर प्रदेश शासन द्वारा जल जीवन मिशन के अंतर्गत बुधवार को बाराबंकी के विकास खंड रामनगर में एलईडी गाड़ियों का का शुभारंभ किया गया जिसमें उपस्थित ब्लॉक के खंड विकास अधिकारी विजय सिंह , सहायक खंड विकास अधिकारी सरवर अली, ग्राम पंचायत अधिकारी राम आसरे , जॉइंट वीडियो नंदकुमार पांडे और ब्लॉक के ऑफिस स्टाफ, आदि लोग उपस्थित थे, टीम में जिला परियोजना समन्वयक सोनू सैनी, सहायक जिला परियोजना समन्वयक मनोज सैनी, सुरेश मौर्य, सीता सिंह, जितेंद्र वर्मा, विनय सिंह के साथ विंग्स की टीम उपस्थित थी , खंड विकास अधिकारी और सहायक खंड विकास अधिकारी द्वारा हरी झंडी दिखाकर एलईडी वैन टीम को ग्राम पंचायत में रवाना किया गया ।

ग्रामीणों ने किया विकसित भारत संकल्प यात्रा का भव्य स्वागत

द अचीवर टाइम्स- नीरज शुक्ला/ निशेष कुमार

सिरौलीगौसपुर बाराबंकी। क्षेत्र की अलग अलग ग्राम पंचायतों में विकसित भारत संकल्प यात्रा का पुष्प वर्षा कर ग्रामीणों ने स्वागत किया। क्षेत्र के ग्राम मदारपुर मे विकसित भारत संकल्प यात्रा का स्वागत सांसद उपेन्द्र सिंह ने ग्राम प्रधान जयराम मौर्या रामसागर यादव रामबक्श यादव रामकेदार वर्मा ग्राम सचिव वीरेन्द्र कुमार तिवारी दुर्गेश कुमार दीक्षित पूर्ति निरीक्षक अनुज कुमार सिंह बी डी ओ मोनिका पाठक ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। इस मौके पर उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए सांसद उपेन्द्र सिंह ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री विकास की गारन्टी तो प्रदेश के मुख्यमंत्री सुरक्षा की गारन्टी

हैं।हर घर नल से जल पी एम किसान सम्मान निधि योजना बृद्धावस्था विधवा दिब्यांग पेंशन प्रधान मंत्री मुख्यमंत्री ग्रामीण आवास आयुष्मान कार्ड रासन कार्ड शिक्षा आंगनबाड़ी स्वास्थ्य आदि योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए भारत 2047 तक विकसित भारत हो जायेगा जिसको साकार करने में आमजन मानस को सहयोग करने की अपील की गई। ग्राम मीरापुर में पंहुची विकसित भारत संकल्प यात्रा का स्वागत ग्राम प्रधान रामसागर मास्टर मुजफ्फर हुसैन अमरदीप शिवाजी मिश्रा आकाश वर्मा मनोज कुमार कुमकुम रानी शिक्षामित्र, शिवकुमार वर्मा ग्राम रोजगार सेवक आदि ने किया। इस मौके पर अमित कुमार पाण्डेय ने केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं का बखान किया। स्कूल के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

सड़क सुरक्षा अभियान के तहत निकाली गई जागरूकता रैली

द अचीवर टाइम्स- नीरज शुक्ला

रामनगर बाराबंकी। बुधवार को यूनियन इंटर कॉलेज व स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर के छात्र-छात्राओं के द्वारा संयुक्त रूप से सड़क सुरक्षा अभियान के तहत जागरूकता रैली निकाली गई। जिसमें कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। रैली में शामिल कॉलेज के छात्र- छात्राओं के द्वारा हेलमेट लगाओ,सीट बेल्ट लगाओ,और जान बचाओ, गाड़ी चलाते समय फोन पर बात न करे यमराज से नही होगी बात, के जमकर नारे लगाये गए। इसी दौरान स्थानीय पुलिस टीम के द्वारा बिना हेलमेट लगाए हुए व्यक्तियों को रोककर उनको यातायात नियमों का पाठ पढ़ाया गया तथा उनको हेलमेट भी वितरण किया गया। जिस बाइक पर तीन से चार

लोग सवार थे उनमें से कुछ वाहनों का चालान भी किया गया। इस सड़क सुरक्षा जागरूकता रैली क्षेत्राधिकारी हर्षित चौहान व यूनियन इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ कमलेश सिंह के नेतृत्व में निकाली गई। क्षेत्राधिकारी ने कहा कि हमारे क्षेत्र में दिन प्रतिदिन दुर्घटना हो रही है। सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा अभियान चलाया जा रहा है। उसी के तहत यह रैली निकाली गई है। रैली के माध्यम से लोगो को जागरूक करने का काम किया जा रहा है। इस जागरूकता रैली में शामिल कोतवाल रत्नेश पांडे,अध्यापक अनमोल तिवारी, अध्यापक दिनेश कुमार सिंह, अध्यापक सुधाकर दीक्षित, अध्यापक विनोद कुमार वर्मा, अध्यापक धर्मेंद्र पांडे,अध्यापक हरिओम सिंह, अध्यापक अनूप सहित पुलिसकर्मी व कॉलेज के कर्मचारी उपस्थित रहे।

नगर विकास मंत्री बनीकोडर में विकसित भारत संकल्प यात्रा में शामिल हुए

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी। नगर विकास शहरी, समग्र विकास नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन, ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत उत्तर प्रदेश एके शर्मा जनपद के विकास खण्ड बनीकोडर तहसील रामसनेहीघाट ग्राम हथौंदा में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। नगर विकास मंत्री ने जनप्रतिनिधियों के साथ विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में लगाये गये विभिन्न विभागों, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला व बाल विकास, महिला कल्याण, श्रम विभाग, राजस्व विभाग, कृषि विभाग, समाज कल्याण, स्वयं सहायता समूहो आदि के स्टॉलों का अवलोकन करते हुए जानकारी ली। इस दौरान बेसिक स्कूल की छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न लोक कल्याणकारी योजनाओं से वंचित लोगों को जनकल्याणकारी योजनाओं में पंजीयन कराकर लाभान्वित किया गया। नगर विकास मंत्री ने ''विकसित भारत संकल्प यात्रा'' कार्यक्रम के सम्बोधन में पीएम उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत गोल्डेन कार्ड, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), पीएम किसान सम्मान निधि, पीएम स्वनीधि योजना सहित अनेक योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र/प्रतिकात्मक चाभी आदि का वितरण किया। उन्होंने कार्यक्रम में छोटे-छोटे नवनिहालों का अन्नप्राशन तथा गर्भवती महिलाओं की गोदभराई की। उन्होंने बताया ''विकसित भारत संकल्प यात्रा'' का कार्यक्रम शानदार तरीके से पूर्ण करते हुए अधिकाधिक जनपदवासियों को लाभान्तिव किया जायेगा। कार्यक्रम के दौरान विकसित भारत संकल्प यात्रा की शपथ भी दिलायी गयी।कार्यक्रम के दौरान माननीय राज्य मंत्री सतीश चन्द्र शर्मा, खाद्य एवं रसद तथा नागरिक आपूर्ति विभाग, लल्लू सिंह सांसद अयोध्या के साथ अपर जिलाधिकारी सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

क्रिकेट जीवन का लक्ष्य प्रशांत अवस्थी

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। चौथे बीबी गुप्ता मेमोरियल ट्रॉफी के फाइनल मैच में मुख्य अतिथि के तौर पर द अचीवर टाइम्स के यूपी हेड प्रशांत अवस्थी जी रहे जिन्हें कमेटी के द्वारा मोमेंटो देकर स्वागत किया गया । चौथे बीबी गुप्ता मेमोरियल ट्रॉफी के फाइनल मैच में लाइफ केयर क्रिकेट क्लब के कप्तान आकाश उपाध्याय ने टॉस जीत कर पहले गेंदबाजी का निर्णय लिया। एलडीए की टीम ने शुरू की पूरी प्रक्रिया, खुल कर की बल्ले-बल्ले और खूब रन बटोरे। शिवम पांडे ने शानदार 42 रन बनाए. अल्ताफ ने भी बढ़िया 32 रन बनाए और कप्तान हिमांशु असनोरा ने 27 रन बनाए। लाइफ केयर के लिए हिमांशु ने बढ़िया गेंदबाजी करते हुए 2 विकेट लिए और तुषार वर्मा ने 2 विकेट लिए।लक्ष्य का पीछा करते हुए लाइफ केयर की टीम ने बेहतरीन बल्लेबाज़ी की, कप्तान आकाश उपाध्याय ने तेज़ 32 रन बनाए। पार्थ पटेल ने भी 31 रन बनाए. फाइनल मौका आखिरी ओवर तक गया जहां लाइफ केयर को जीत के लिए 5 रन चाहिए, आखिरी मौका खत्म हो गया। स्वाभिमान सिंह ने 20वें ओवर की 5वीं गेंद पर छह मार कर टीम को मैच जितवा दिया। मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि द अचीवर टाइम्स के यूपी हेड प्रशांत अवस्थी ने खिलाड़ियों को स्वागत किया और जीते हुए खिलाड़ियों को ट्रॉफी भी दी और साथ ही साथ प्रशांत अवस्थी ने अपने संबोधन में कहा कि मैच खेलना जीवन का महत्वपूर्ण है और हर लोगों को मैच खेलना चाहिए।

अटल जी की 99 वीं जयंती पर आयोजित हुए विविध कार्यक्रम

राजनीति के अजात शत्रु थे अटल: धर्मपाल सिंह

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी। भाजपा के संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि अटल जी राजनीति के अजातशत्रु थे।उनके पास सभी परिस्थितियों में कार्य करने की अद्भुत क्षमता थी।कहा कि अटल जी ने भारत की राजनीति को आइना दिखाया।नई दिशा दी।सुशासन की नींव रखी।स्थिर सरकारें जनता जनार्दन के लिए कैसे उपयोगी होती हैं , इसकी शुरुआत अटल जी ने 1998 से प्रारंभ की।आज वही परंपरा चल रही है।घरेलू हो या विदेशी मोर्चा , अटल जी राह बनाते गए। आज प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देशवासी उसी स्वरूप को नए रूप में देख रहे हैं। संगठन महामंत्री रामसनेही घाट के मिनी स्टेडियम में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई की 99 वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।इस दौरान उन्होंने 100 दिव्यांगो को ट्राइसाइकिल,47 किसानों को लघु सिंचाई पंप सेट सहित पीएम स्वनिधि,पीएम शहरी व ग्रामीण आवास सहित विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों एवम स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने कहा कि गरीबों के लिए बनने वाली योजनाओं , इन्फ्रास्ट्रक्चर के बड़े बड़े कार्य,वैश्विक मंच पर भारत को मिल रहे सम्मान व विरासत पर गर्व करने की आधार शिला अटल जी ने रखी थी।क्षेत्रीय प्रभारी संजय राय ने कहा कि अटल जी समन्वय स्थापित करने की अनोखी मिसाल थे। राज्यमंत्री सतीश चंद्र शर्मा ने कहा कि यह भी अद्भुत संयोग है कि यह वर्ष अटल जी की जन्म जयंती का शताब्दी वर्ष है और इसी वर्ष में 22 जनवरी को पीएम मोदी के करकमलों से अयोध्याजी में प्रभु राम के भव्य मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा होगी।स्थानीय नगर पालिका में भी अटल जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।इस अवसर पर जिला प्रभारी अवनीश सिंह, जिला अध्यक्ष अरविंद कुमार मौर्य, सांसद उपेंद्र सिंह रावत, सांसद लल्लू सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष राजरानी रावत, एमएलसी अंगद सिंह, विधायक दिनेश रावत, पूर्व सांसद बैजनाथ रावत, पूर्व एमएलसी हरगोविंद सिंह, अवधेश श्रीवास्तव, शशांक कुसुमेश, संदीप गुप्ता, शील रत्न मिहिर, विजय आनंद बाजपेई, गुरुशरण लोधी, सीता शरण वर्मा, राम सिंह वर्मा मौजूद रहे।

कम वसूली पर आबकारी, परिवहन,डिप्टी कमिश्नर वाणिज्य कर अधिशासी अभियंता विद्युत व वन अधिकारी को भेज कारण बताओं नोटिस

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। जनपद में कर करेत्तर, राजस्व कार्यों के निर्धारित लक्ष्यों को समय से पूरा करने के उद्देश्य से अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 संदीप कुमार ने कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक करते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष वसूली करने तथा समस्त उप जिलाधिकारियों को वसूली के संबंध में नियमित रूप से बैठक करने के निर्देश दिए। अपर जिलाधिकारी ने निर्धारित लक्ष्यों को ससमय पूर्ण करने हेतु विभागीय अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए। अपर जिलाधिकारी ने लक्ष्य की सापेक्ष कम वसूली पर आबकारी अधिकारी, एआरटीओ, डिप्टी कमिश्नर वाणिज्य कर, अधिशासी अभियंता विद्युत वितरण खंड हापुड़, तथा वन अधिकारी को कारण बताओं नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने सम्बन्धित विभागीय अधिकारियों को आई0जी0आर0एस0 पोर्टल पर प्राप्त होने वाली शिकायतों/लम्बित सन्दर्भो का गुणवत्तापूर्ण एवं ससमय निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही पाये जाने पर कड़ी कार्यवाही अमल में लायी जायेगी। उन्होंने कहा कि किसी भी दशा में प्राप्त सन्दर्भ डिफाल्टर की श्रेणी में नही आना चाहिए। सभी अधिकारी समय-समय पर पोर्टल पर सन्दर्भो को चेक करते रहे जिससे कि कोई भी प्रकरण लम्बित/डिफाल्टर की श्रेणी में न आये। एडीएम ने कहा की राजस्व वसूली तथा अन्य संदर्भ को सीएम पोर्टल से जोड़ दिया गया है जिससे जनपद की रैंकिंग निर्धारित होती है अतः राजस्व वसूली में तेजी लाएं। अपर जिलाधिकारी ने मुख्य देय, विविध देयों की वसूली, कर करेत्तर तथा राजस्व कार्यों की विभागवार समीक्षा करते हुए मानक के अनुसार निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति कम होने पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष वसूली शत-प्रतिशत करना सुनिश्चित करें। अभियान चलाकर प्रर्वतन के माध्यम से मानक के अनुरूप वसूली करने के निर्देश दिए। अवैध खनन के तहत की जा रही कार्यवाही के संबंध में खनन अधिकारी तथा संबंधित क्षेत्र के एसडीएम तथा सीओ मिलकर के संयुक्त रूप से अभियान चलाने के निर्देश दिए। उन्होने तहसील के दस बड़े बकायदारों से राजस्व वसूली के लिये अभियान चलाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी हापुड़ सुनीता सिंह, उप जिलाधिकारी गढ़ अंकित कुमार, तहसीलदार गढ़ सीमा सिंह, तहसीलदार हापुड़ जय प्रकाश, जिला आबकारी अधिकारी, खनन अधिकारी नीतू शर्मा, वन अधिकारी, तथा अन्य विभागीय अधिकारी व कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

एक नज़र

महेंद्र कुमार शास्त्री मेमोरियल इण्टर कॉलेज में हुआ पुरुस्कार वितरण

द अचीवर टाइम्स ,सुशील अवस्थी-

सीतापुर। रामपुर मथुरा के श्री महेंद्र कुमार शास्त्री मेमोरियल इंटर कालेज में व्यायाम शिक्षक अरविंद अवस्थी , राज कुमार मौर्य ,पंकज श्रीवास्तव , प्रधानाचार्य दिलमोहनी मिश्र के साथ सीता ग्रुप आफ एजुकेशन के चेयरमैन रमेश वाजपेयी विरल जी ने बच्चों का मार्गदर्शन कर विजेता बच्चों को पुरस्कृत कर सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

देश में ऊर्जा लागत को 50 फीसदी तक कम करने के लिए बूट्स इंडिया और स्वीडिश कंपनी यूआरबीएस ने लॉन्च की कूलिंग एस-ए-सर्विस

प्रारंभिक परियोजना लागत में 25 फीसदी और चालू परिचालन लागत में 80 फीसदी कमी से आवासीय और वाणिज्यिक क्षेत्रों को लाभ मिलेगा

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। देश की प्रमुख नेट-जीरो कंस्ट्रक्शन-टेक कंपनी बूट्स इंडिया ने स्थाई बिल्डिंग टेक्नोलॉजीज को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए अत्याधुनिक 'कूलिंग एस-ए-सर्विस% सॉल्यूशन देने के लिए स्टॉकहोम आधारित स्वीडिश कंपनी यूआरबीएस के साथ साझेदारी की घोषणा की है। यह सा?झेदारी भारतीय घरों, कार्यालयों, होटलों, स्कूलों, अस्पतालों, डेटा केंद्रों, कोल्ड स्टोरेज और गोदामों को कम ऊर्जा लागत में ठंडा रखने और गर्म रखने के प्रयासों में अहम साबित होगी,क्योंकि इसे नए निर्माणों और पहले से मौजूद संरचनाओं में कम लागत पर लागू किया जा सकेगा। साथ ही इससे ऊर्जा लागत में 50 फीसदी तक कमी, कार्बन उत्सर्जन 85 प्रतिशत तक कमी और घर के अंदर धूल वाली हवा को समाप्त करने जैसे लक्ष्य हासिल किया जा सकेंगे। इससे दुनिया के सर्वोत्तम मानकों के अनुसार घर में उच्च गुणवत्ता की वायु प्रवाह का मार्ग प्रशस्त होगा। बूट्स इंडिया और स्वीडिश कंपनी यूआरबीएस ऐसी तकनीक को आगे लाए हैं जो मुख्य रूप से ऊर्जा दक्षता के उन्नत नॉर्डिक सिद्धांतों पर आधारित है। इसमें बेहतर ऊर्जा क्षमता के लिए जानी जाने वाली जल-आधारित तकनीक हाइड्रोनिक सिस्टम का उपयोग किया जाता है, जो पारंपरिक वायु-आधारित सिस्टम से 400 फीसदी बेहतर प्रदर्शन करती है और प्राकृतिक व लगातार ठंडा /गर्म प्रभाव प्रदान करती है। इस सिस्टम को पहले से मौजूद इमारतों में दोबारा लगाया जा सकता है, जिसका मतलब है कि ये सिस्टम आम तौर पर इमारत के बुनियादी ढांचे में या तो फर्श या छत पैनलों के भीतर फिट हो जाते हैं और संपूर्ण आंतरिक वायु गुणवत्ता को बढ़ाते हैं और पारंपरिक एयर कंडीशनिंग / हीटिंग इकाइयों की आवश्यकता को कम करते हैं। ऐसा लचीलापन ऊर्जा कुशल जियोथर्मल टेंपरेचर कंट्रोल सिस्टम स्थापित करने की जटिलता और लागत को काफी कम कर देता है। आवासीय और वाणिज्यिक उपयोगकर्ता प्राथमिकता से हाइड्रोनिक कूलिंग एचवीएसी सिस्टम को अपना रहे हैं क्योंकि ये पारंपरिक कूलिंग और हीटिंग सिस्टम की तुलना में उपयोगकर्ताओं को कई आर्थिक, पर्यावरणीय और परिचालन लाभ प्रदान करते हैं। हाइड्रोनिक कूलिंग सिस्टम हवा की मात्रा को कम करके हवा की गुणवत्ता में सुधार करने के साथ गीली सतह के कॉइल को खत्म करते हैं, जिससे बैक्टीरिया की वृद्धि कम हो जाती है। इसके अलावा इस सिस्टम में पंखे और कंप्रेसर नहीं होने के कारण शोर-मुक्त संचालन, न्यूनतम वायु परिसंचरण के कारण धूल और एलर्जी पर बेहतर नियंत्रण, हवा की गुणवत्ता में सुधार, एक समान तापमान वितरण, ड्राफ्ट-मुक्त ठंड और गर्मी का अनुभव सुनिश्चित करने जैसे फायदे शामिल हैं, जिसके परिणामस्वरूप उपयोगकर्ता के समग्र अनुभव में वृद्धि होती है। कूलिंग-एस-ए-सर्विस की अत्यधिक आवश्यक मांग पर जोर देते हुए, बूट्स के प्रबंध निदेशक और स्थायित्व विशेषज्ञ श्री दीपक राय ने कहा, 卐एचवीएसीकूलिंग-एस-ए-सर्विस की अवधारणा विशेष रूप से मौजूदा लोगों के लिए एक क्रांतिकारी समाधान है, जो इमारतों एवं उच्च गुणवत्ता वाले आंतरिक सिस्टम में त्वरित और लागत प्रभावी परिवर्तन की पेशकश करता है। इन प्रणालियों को दोबारा लगाना न केवल अधिक प्रबंधनीय है बल्कि नए निर्माणों की तुलना में काफी सस्ता भी है। हमारी सेवा उच्च दक्षता वाली प्रणालियों को किफायती बनाकर पारंपरिक बाजार पर लगाम लगाएगी और हम इसे नवीन डिजाइन, सुव्यवस्थित स्थापना, 25 साल के रखरखाव समर्थन और वित्तपोषण में आसानी के माध्यम से स्थापित करेंगे, जिससे रीयलटर्स और डेवलपर्स को परियोजना कार्यान्वयन लागत का 25 फीसदी और चल रही परिचालन लागत का 80 फीसदी बचाने में मदद मिलेगी।卐 यूआरबीएस के संस्थापक विल सिबिया के अनुसार, 卐दुनिया भर में तापमान में वृद्धि और पारंपरिक एयर कंडीशनिंग सिस्टम के पर्यावरणीय परिणामों के बारे में बढ़ती चिंताओं ने अधिक पर्यावरण-अनुकूल और ऊर्जा-कुशल ठंडा होने की और गर्म होने की विधियों की आवश्यकता पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है। उन्नत नॉर्डिक प्रौद्योगिकियों के साथ प्राचीन भारत के स्थाई निर्माण के ऐतिहासिक रूप से सिद्ध सिद्धांतों को एकीकृत करके, यूआरबीएस के सहयोग से बूट्स द्वारा लॉन्च किया गया कूलिंग-एस-ए-सर्विस समाधान आंतरिक जलवायु विनियमन के प्रति एक बहुमुखी और नवीन दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।

सोहनपुर में मनाया डॉ0 भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा का प्रथम स्थापना

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। के मौहल्ला सोहनपुर सोटावाली में पिछले वर्ष 25 दिसंबर 2022 को समाजसेवी विनोद सागर व सहयोगी साथियों द्वारा सविधान रचियता बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा स्थापित की गई थी। जहां सोमवार को डॉ भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा के प्रथम स्थापना दिवस पर डॉ भीमराव अंबेडकर युवा उत्थान समिति सोहनपुर सोटावाली कमेटी द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके मुख्य अतिथि तीर्थ सागर मसाले फैक्ट्री के ओनर विनोद सागर की किसी कारणवश की अनुपस्थिति में पिंकी गौतम उपस्थित हुई तथा आतिथिगण मास्टर हीरालाल,के.पी सिंह, सभासद विकास दयाल, कैलाश हल्द्वानी, एडवोकेट डोनिश जौहरी आदि लोग उपस्थित रहे। जहां सर्वप्रथम सभी लोगों ने बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा पर फूलमाला अर्पण करते हुए उन्हें याद किया गया और सभी लोगों का कमेटी द्वारा पंचशील पटका पहनकर सम्मान किया गया तथा उसके उपरांत सभी लोगों ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी नहीं होते तो हम शिक्षित नही होते तो वही कमेटी के सदस्य कुलदीप कुमार के निर्धन हुए भांजे और भांजी की पढ़ाई के लिए समाज का कोई भी व्यक्ति सहायता के लिए नहीं आया है। तो डॉक्टर बी आर अंबेडकर युवा उत्थान समिति ने उन बच्चों की आगे पढ़ाई का जिम्मा उठाने के साथ आगामी 14 अप्रैल 2024 पर दोनों बच्चों को दस दस हजार रुपए देने की घोषणा की गई। इस मौके समिति के समस्त सदस्य सतीश आजाद, जयंत बक्शी, आदेश कुमार, उमेश कुमार, विजय भूषण, कुलदीप कुमार, मनोज कुमार, आकाश कुमार, अभिषेक कुमार, लोकेश कुमार उर्फ भीम, सोनू बौद्ध आदि लोग उपस्थित रहे। इस मौके पर समिति के पदाधिकारी व कार्यकर्ता जयंत बक्शी, सतीश आजाद , कुलदीप कुमार व समस्त मोहल्ले के महिला व पुरुष लोग उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री मोदी की रैली की तैयारियों में जुटी भाजपा

30 दिसंबर को अयोध्या में होगी जनसभा

❖ जनपद से 50 हजार की भीड़ जुटाने का लक्ष्य।

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी। आगामी 30 दिसंबर को अयोध्या में होने वाली रैली को सफल बनाने के लिए भाजपा ने तैयारियों को अंतिम रूप देना शुरू कर दिया है।एमएलसी व जिला प्रभारी अवनीश सिंह ने मंगलवार को भाजपा कार्यालय में जिला कार्यसमिति की बैठक में तैयारियों की समीक्षा की।उन्होंने कहा कि निकटवर्ती जिला होने के कारण प्रदेश नेतृत्व ने जनपद को 50 हजार का लक्ष्य दिया है जिसे रणनीति बनाकर हासिल किया जा सकता है।उन्होंने विधानसभावार संख्या निर्धारित करते हुए बताया कि समर्थको के आवागमन के लिए पर्याप्त संख्या में बसों और छोटे चौपहिया वाहनों की व्यवस्था कर ली गई है।कहा कि प्रभु राम का भव्य मंदिर बन रहा है।देश विदेश से श्रद्धालुओं को अयोध्या पहुंचने के लिए हवाई अड्डा और रेलवे स्टेशन बन कर तैयार है।जिसका लोकार्पण प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा 30 दिसंबर को होना है।उन्होंने कहा बाराबंकी अयोध्या का प्रवेश द्वार है इसीलिए यहां से हजारों की भीड़ प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत व अभिनंदन करने शनिवार को अयोध्या पहुंचेगी ।जिला अध्यक्ष अरविंद कुमार मौर्य ने स्वागत एवम आभार ज्ञापित किया।संचालन जिला महामंत्री संदीप गुप्ता ने किया।इस अवसर पर गुरु शरण लोधी,शील रत्न मिहिर,प्रमोद तिवारी,विजय आनंद बाजपेई,रचना श्रीवास्तव,रोहित सिंह, सीए अश्वनी श्रीवास्तव,सुशील जायसवाल,ब्रजेश रावत,डॉक्टर अंजू चंद्रा,रामेश्वरी त्रिवेदी,सीताशरण वर्मा,पवन सिंह रिंकू सहित जिला कार्यसमिति के सभी सदस्य मौजूद रहे।

कूड़ा चुगने वाले बच्चों को रेलवे पार्क में फ्री पढ़ाकर प्रधानमंत्री के सपनों को साकार करती शिक्षिका कंचन

❖ 5 वर्षो से गरीब बच्चों को बैलून व चॉकलेट देकर उनकी खुशी में होती है शरीक।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। किसी शायर ने खूब लिखा है, कि कांटे भी हैं, चुभन भी,रास्ता भी पथरीला है, मगर क्या करें गालिब आदत सी जो हो गई है। इसी रास्ते पर हापुड़ के मोहल्ला नवीन मंडी की रहने वाली कंचन सिंह चल पड़ी है। जिन्होंने शिक्षा ग्रहण करते-करते गरीब बच्चों को बैलून व चॉकलेट देकर उनकी खुशी में शरीक होना शुरू कर दिया फिर क्या था उनके जीवन का पथरीला रास्ता शुरू हो गया जिसमे काँटे भी थे, चुभन भी थी परंतु वह यही नही रुकी। एक दिन पढ़ते पढ़ते उनके मन में ख्याल आया क्यों ना मैं गरीब बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दू। इसकी शुरुआत उन्होंने रेलवे पार्क के पास बनी बस्ती में जाकर की जहाँ उन्हें दो बच्चे ऐसे मिले जिन्होंने उनसे पढ़ने की इच्छा जाहिर की बच्चों की जिज्ञासा देखते हुए उन्होंने दोनों बच्चों को रेलवे पार्क में पढ़ाना प्रारंभ कर दिया धीरे-धीरे बच्चों की संख्या बढ़ने लगी आज करीब एक महीने में उनके पास 25 से 30 बच्चे हैं जिन्हें कंचन सिंह के अलावा अन्य शिक्षिका खुशबू व हिमांशी पढ़ाती है। अब उनके पास बच्चे तो आने लगे परंतु उनके पास किताब, कॉपी व अन्य सामान की व्यवस्था नहीं थी तभी पार्क में घूम रहे एक बुजुर्ग व्यक्ति ने यह सब देखा और उन्होंने पढ़ने वाले बच्चों को किताब कॉपी व अन्य सामान की व्यवस्था कराई। कंचन का हौसला और बढ़ गया। कंचन दिन रात इन बच्चों के बारे में सोचने लगी बस फिर क्या था।

समाज के तानों से पहुंची डिप्रेशन में मगर इरादे कमजोर नहीं हुए समाज,परिवार व गली मोहल्ले में रहने वाले लोग उन्हें तरह-तरह के ताने देने लगे जिससे वह डिप्रेशन में पहुंच गई मगर उनके इरादे कम नहीं हुए उन्होंने डिप्रेशन को चुनौती देते हुए फिर एक बार इस डगर पर लौटते हुए बच्चों को पढ़ाना प्रारंभ कर दिया। शिक्षिका कंचन ने बताया कि मेरा सपना है मैं बड़े होकर एक वृद्ध आश्रम खोलू जहां मैं उन बूढ़े माता-पिता की सेवा कर सकू जो अपने पुत्र के रहते हुए भी सेवा से वंचित रह जाते हैं। कंचन सिंह ने अभी तक बीए0 बीएड तक शिक्षा हासिल की है। उनके पिता निरंजन सिंह फौज में रहकर देश की सेवा कर रहे हैं। जबकि उनकी माता सुमन देवी गृहणी है उनके भाई विशाल सिंह एक प्राइवेट हॉस्पिटल में सर्विस करते हैं। उनकी बहन संध्या सिंह उत्तर प्रदेश पुलिस में लखनऊ के महिला थाने में बतौर कांस्टेबल के पद पर तैनात है। कंचन सिंह से आगे के भविष्य के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि मैं पुलिस में सब इंस्पेक्टर बनना चाहती हूं ताकि समाज व ऐसे गरीब बच्चों की मदद कर सकूं जिन्हें पढ़ाने वाला कोई नही है। यही मेरा सपना है। इन्ही सपनो के साथ शिक्षाका कंचन देश के प्रधानमंत्री की उस अपील को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है जिसमे प्रधानमंत्री कहते है इस समाज मे सभी धर्म व वर्ग के लोग शिक्षित बने तभी हमारा देश उन्नति करेगा।

व्यापारी अपने प्रतिष्ठानों को सीसीटीवी से लैस व चालू रखें-राजकुमार अग्रवाल, एएसपी हापुड़

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। अपर पुलिस अधीक्षक राजकुमार अग्रवाल ने व्यापारियों की सुरक्षा की दृष्टिगत रखने हेतु व्यापारियों के साथ एक बैठक की और व्यापारियों से कहा कि वे अपने-अपने प्रतिष्ठानों को सीसीटीवी कैमरों से लैस रखें और उन्हे चालू रखें। आपको बता दे अपर पुलिस अधीक्षक राजकुमार अग्रवाल ने पुलिस कार्यालय में मंगलवार को जनपद के व्यापारियों के साथ सुरक्षा प्रकोष्ठ की मासिक बैठक आयोजित की। बैठक में उपस्थित सभी व्यापारियों की समस्याओं को सुनकर उनसे सुझाव मांगे और अपराध नियंत्रण एवं सुरक्षा व्यवस्था सहयोग की अपील करते हुए अपने-अपने प्रतिष्ठानों के अन्दर-बाहर अधिक से अधिक सीसीटीवी कैमरे लगवाने एवं कैमरों को 24 घंटे सुचारू रूप से चालू रखने के लिए आग्रह किया। उन्होंने व्यापारियों को सुरक्षा की गारंटी दी। व्यापारियों ने ट्रैफिक जाम की समस्या व अतिक्रमण के मुद्दे को उठाया। गोष्ठी में संयुक्त व्यापार मंडल के ललित अग्रवाल, प्रदीप हाइड्रो वाले, संजय अग्रवाल नेता, रमेश अरोरा, राजीव अग्रवाल व दीपक बंसल आदि मौजूद रहे।

चौथी बीबी गुप्ता मेमोरियल ट्रॉफी में खेले गए पहले सेमीफाइनल में लाइफ केयर क्रिकेट क्लब ने बाजी मारी

द अचीवर टाइम्स रघुनाथ सिंह

लखनऊ। चौथी बीबी गुप्ता मेमोरियल ट्रॉफी में खेले गए पहले सेमीफाइनल में लाइफ केयर क्रिकेट क्लब के कप्तान आकाश ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया। उनके फैसले को सही साबित करते हुए लाइफ केयर ने बढ़िया गेंदबाजी करते हुए एमपीसीए को 115 रन के कुल स्कोर पर रोक दिया। तुषार वर्मा ने टीम को बढ़िया शुरुआत दी और 2 विकेट झटके। उनके अलावा हिमांशु यादव और प्रखर मिश्रा ने भी शानदार गेंदबाजी करते हुए 3 और 2 विकेट लिए। एमपीसीए की तरफ से जिवेश ने 37, गुरवीर ने 21 और फैजल ने 20 रन की बढ़िया पारी खेली। लक्ष्य का पीछा करते हुए लाइफ केयर की टीम ने संभल कर खेलते हुए लक्ष्य 19 ओवर में हासिल कर लिया। प्रखर मिश्रा ने 39 रनों की शानदार पारी खेली। प्रखर मिश्रा को मैन ऑफ द मैच चुना गया।

दूसरे सेमीफाइनल में यूथ क्रिकेट क्लब की टीम ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया।बैटिंग करते हुए यूथ क्लब सिर्फ 124 रन हाय बना पाई। सत्यम अवस्थी ने 36, कुलदीप चौहान ने 46 रन बनाए। एलडीए के लिए वेदांश पंत ने 2 विकेट लिए। जवाब ने एलडीए की टीम ने 19 ओवर में आराम से लक्ष्य हासिल कर लिया। स्पर्श त्यागी ने 51 रनों की पारी खेली। शिवम पांडे ने भी 38 रन बनाए। स्पर्श त्यागी मैन ऑफ द मैच चुने गए। लाइफ केयर और एलडीए के बीच फाइनल मुकाबला आज 12 बजे खेला जाएगा।

यूपी योद्धाज घरेलू मैदान पर धमाकेदार प्रदर्शन के लिए तैयार, 29 दिसंबर से शुरू होगा होम लेग

यूपी योद्धाज ने अपने अभियान की शानदार शुरुआत करते हुए अपने पहले तीन मैचों में से दो में जीत हासिल की। वर्तमान में, दो जीत और एक टाई के साथ तालिका में दसवें स्थान पर मौजूद योद्धा अपने घरेलू दर्शकों के समर्थन पर सवार होकर बदलाव का लक्ष्य रखेंगे।

दिल्ली एनसीआर में कबड्डी का बुखार बढ़ने वाला है क्योंकि प्रो कबड्डी लीग में उत्तर प्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाली यूपी योद्धाज एक बार फिर अपने घरेलू मैदान पर लौटने की तैयारी कर रही है। योद्धाज अपने घरेलू मैदान पर 2 सीजन के लंबे इंतजार के बाद खेलन को लेकर काफी उत्सुक हैं। यूपी योद्धाज ने आज अपने घरेलू स्टेडियम में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपने होम लेग की घोषणा की। योद्धाज, अपने घरेलू दर्शकों के सामने चार रोमांचक मुकाबले खेलेंगे। 29 दिसंबर, 2023 को योद्धाज बेंगलुरु बुल्स के खिलाफ मुकाबले के साथ होम लेग की शुरूआत करेंगे।

प्रो कबड्डी लीग सीजन 10 के सभी 11 खेलों के टिकट पेटीएम इनसाइडर एप्लिकेशन और वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, प्रशंसक सीधे गेट नंबर 5 पर स्थित बॉक्स ऑफिस से भी टिकट खरीद सकते हैं। सभी दिन सुबह 11 बजे से शाम 6 बजे तक प्रशंसक टिकट खरीद सकते हैं। टिकटों की कीमत

मात्र 150 रुपये है।

29 दिसंबर 2023 को होम लेग की शुरुआत से पहले बोलते हुए, पीकेएसवी सागर ने कहा, ÷हम अपने होम लेग, नोएडा में प्रो कबड्डी लीग का स्वागत करते हुए बेहद रोमांचित हैं। मुझे उम्मीद है कि शहर के प्रशंसकों को स्टेडियम से अपनी पसंदीदा टीम को लाइव खेलते हुए देखकर रोमांचक अनुभव मिलेगा। इस बार हमने टिकटों की कीमत भी बहुत उचित दर पर रखी है। ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कबड्डी प्रशंसक बड़ी संख्या में आएं। हम प्रो कबड्डी लीग के एक शानदार और सफल नोएडा चरण की कामना करते हैं।

यूपी योद्धाज के मुख्य कोच जसवीर सिंह ने कहा, ÷टूर्नामेंट से पहले जीएमआर स्पोर्ट्स की हमारी दो अकादमियों में हमारे पास 50 दिनों का उपयोगी प्रशिक्षण सत्र था। लीग के शुरुआती दिनों में चोटों के कारण हमें कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन अब टीम पूरी तरह से फिट है। अपने घरेलू दर्शकों के सामने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए तैयार है। लीग का 70 प्रतिशत से अधिक मैच अभी बाकी है। हम आने वाले दिनों में अपनी बढ़त फिर से हासिल करने के लिए आश्वस्त हैं। जीएमआर समूह हमेशा हमारा समर्थन करता रहा है और हम अपने प्रशंसकों को खुश और गौरवान्वित रखने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, यूपी योद्धाज के कप्तान, प्रदीप नरवाल ने कहा, ÷मैं अपने घरेलू दर्शकों के सामने यूपी योद्धाज के कप्तान के रूप में अपने पहले अनुभव का इंतजार कर रहा हूं। मुझे विश्वास है कि हम एक टीम के रूप में अपना योगदान देंगे।÷ अपने प्रशंसकों को खुश देखने का ये सबसे अच्छा मौका होगा ।

इस अवसर पर बोलते हुए, सुरेंदर गिल, रेडर, यूपी योद्धाज ने कहा, ÷यह अब तक एक मिश्रित सीजन रहा है। घरेलू दर्शकों के सामने हर मुकाबला रोमांचित रखने का पूरा प्रयास करेंगे। एक टीम के रूप में हम कड़ी ट्रेनिंग कर रहे हैं। मैं घरेलू चरण में हमारे लिए अनुकूल नतीजों को लेकर सकारात्मक हूं।

यूपी योद्धाज ने अपने अभियान की शानदार शुरुआत करते हुए अपने पहले तीन मैचों में से दो में जीत हासिल की। वर्तमान में, दो जीत और एक टाई के साथ तालिका में दसवें स्थान पर मौजूद योद्धा अपने घरेलू दर्शकों के समर्थन पर सवार होकर बदलाव का लक्ष्य रखेंगे। सुरेंद्र गिल योद्धाज के लिए मुख्य आकर्षण का केंद्र रहे हैं। गिल सबसे सफल रेड (56) और सबसे अधिक रेड पॉइंट (75) के साथ सूची में तीसरे स्थान पर काबिज हैं। उन्हें डबकी-किंग परदीप नरवाल का अच्छा समर्थन प्राप्त है, जिन्होंने अपनी महानतम प्रदर्शन किया है। इस सीजन में अब तक 43 रेड अंक हासिल प्राप्त किए किए हैं। योद्धाज की रक्षा का ध्यान नितेश कुमार, गुरदीप और सुमित की तिकड़ी ने अच्छी तरह से रखा है, जिनके पास क्रमशः 22, 19 और 17 टैकल पॉइंट हैं। घरेलू दर्शकों को इन खिलाड़ियों से शानदार प्रदर्शन की उम्मीद होगी और उम्मीद होगी कि योद्धा जीत की राह पर लौटेंगे।

जगरेब जाएंगे भारतीय पहलवान ओलंपिक के साल में तैयारी पर होगा पूरा जोर

21 दिसंबर को कुश्ती महासंघ के पूर्व अध्यक्ष और भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह के करीबी संजय सिंह महासंघ के अध्यक्ष बने थे। उन्होंने उसी दिन नंदिनीनगर (यूपी) में अंडर-15, 20 राष्ट्रीय चैंपियनशिप कराने की घोषणा की थी। खेल मंत्रालय की ओर से भारतीय कुश्ती महासंघ को निलंबित किए जाने के बाद भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) ने बुधवार को तीन सदस्यीय तदर्थ समिति का गठन कर दिया। भूपिंदर सिंह बाजवा की अध्यक्षता में यह समिति कुश्ती महासंघ का कार्यभार संभालेगी। समिति के सदस्यों में पूर्व हॉकी ओलंपियन एमएम सोमाया और राष्ट्रमंडल खेलों की पदक विजेता बैडमिंटन खिलाड़ी मंजूषा कंवर शामिल हैं। बाजवा महासंघ की पिछली तदर्थ समिति के भी सदस्य थे। तदर्थ समिति का चेयरमैन बनते ही बाजवा ने घोषणा कर दी कि अगले माह सबसे पहले जूनियर और

सीनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप कराई जाएगी। इसके बाद ओलंपिक क्वालिफाइंग की तैयारियों के लिए राष्ट्रीय शिविर लगाया जाएगा।

मंत्रालय ने समिति गठित करने को कहा था

21 दिसंबर को कुश्ती महासंघ के पूर्व अध्यक्ष और भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह के करीबी संजय सिंह महासंघ के अध्यक्ष बने थे। उन्होंने उसी दिन नंदिनीनगर (यूपी) में अंडर-15, 20 राष्ट्रीय चैंपियनशिप कराने की घोषणा की थी। 24 दिसंबर को मंत्रालय जल्दबाजी में लिए गए इसी फैसले को आधार बनाते हुए महासंघ को निलंबित कर दिया था। साथ ही आईओए से महासंघ का काम देखने के लिए तदर्थ समिति गठित करने का आग्रह किया था।

पहलवानों की तैयारी होगी प्राथमिकता

आईओए अध्यक्ष पीटी उषा की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि आईओए को महासंघ की ओर से अपने ही संविधान और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) की सुशासन की नीति के खिलाफ लिए फैसलों की जानकारी है। यह महासंघ के अंदर शासन संबंधी अंतर को दर्शाता है। आईओए निष्पक्ष खेल, पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ आईओसी की ओर से खिलाड़ियों के हितों की रक्षा सुनश्चित करने के लिए तदर्थ समिति के गठन का फैसला ले रही है। समिति महासंघ के कार्यों के अलावा पहलवानों के चयन, अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में उनकी एंट्री, खेल गतिविधियां चलाएगी, साथ ही महासंघ के बैंक एकाउंट और वेबसाइट के संचालन के अलावा अन्य गतिविधियों को अंजाम देगी। बाजवा ने कहा कि यह ओलंपिक वर्ष है। इसकी तैयारियां उनकी प्राथमिकता होगी।

रैंकिंग टूर्नामेंट में जगरेब जाएगी टीम

यही नहीं 10 से 14 जनवरी को जगरेब (क्रोएशिया) में होने वाले रैंकिंग टूर्नामेंट में भारतीय टीम को भी भेजने की तैयारी कर ली गई है। इस टूर्नामेंट में एशियाई खेलों में भाग लेने वाली टीम को भेजा जाएगा। एशियाड में बजरंग भी खेलने गए थे, लेकिन इस टूर्नामेंट के लिए उनकी उपलब्धता को देखी जाएगी। यही नहीं महासंघ के चुनाव से पहले कार्यभार देख रही तदर्थ समिति ने राष्ट्रीय चैंपियनशिप की मेजबानी रेलवे को दी थी। यह चैंपियनशिप नौ जनवरी से जयपुर में होनी थी। इस चैंपियनशिप को फिर से जयपुर में कराने की कोशिशें शुरू कर दी गई हैं।

इस विश्व कप में टूटे सभी रिकॉर्ड, एक लाख करोड़ मिनट तक देखे गए मैच; आईसीसी ने जारी किए आंकड़े

आईसीसी ने वनडे विश्व कप 2023 से जुड़े सभी आंकड़े जारी कर दिए हैं और ये आंकड़े हैरान करने वाले हैं। पहली बार किसी विश्व कप को एक लाख करोड़ मिनट तक देखा गया है। भारत में आयोजित होने वाला क्रिकेट विश्व कप 2023 आईसीसी का अब तक का सबसे बड़ा टूर्नामेंट था। इस विश्व कप ने प्रसारण और डिजिटल पर सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। यह आईसीसी का पहला टूर्नामेंट था, जिसे एक लाख करोड़ (एक ट्रिलियन) मिनट से ज्यादा देखा गया। इसमें वर्टिकल वीडियो फीड जैसी नई तकनीक का योगदान भी अहम है। भारत में 2011 में खेले गए विश्व कप की तुलना में इस विश्व कप को 38त्न ज्यादा देखा गया। वहीं, 2019 में इंग्लैंड में हुए पिछले विश्व कप की तुलना में 17त्न की बढ़त देखी गई। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेला गया फाइनल मैच सबसे ज्यादा देखा जाने वाला क्रिकेट मैच बना। इसे विश्व स्तर पर 87.6 बिलियन मिनट तक देखा गया। यह 2011 से 46त्न अधिक था। भारतीय फैंस ने अकेले डिज्नी स्टार नेटवर्क पर 422 बिलियन मिनट तक मैच देखे। यह 2011 से 54त्न और 2019 से 9त्न ज्यादा था। इस में महिला दर्शकों की संख्या 2011 की तुलना में 32त्न से बढ़कर 34त्न हो गई। भारत के बाहर इंग्लैंड में 800 घंटे तक लाइव मैच देखे गए। 5.86 अरब मिनट ज्यादा था। ऑस्ट्रेलिया ने 602 घंटों के लाइव कवरेज से 3.79 बिलियन मिनट देखने में योगदान दिया, जो 2011 से 92त्न की वृद्धि दर्शाता है। टूर्नामेंट में ऑस्ट्रेलिया की सफलता के कारण 2023 विश्व कप देखने के लिए 9.1 मिलियन लोग आए, जो 2019 से तीन मिलियन अधिक है। पाकिस्तान ने भी अभूतपूर्व दर्शक संख्या हासिल की, कुल 237.12 बिलियन मिनट तक दर्शकों ने लाइव मैच देखे। डिज्नी हॉटस्टार ने इस विश्व कप को भारत में फ्री में दिखाने का फैसला किया था। इसके वजह से सबसे ज्यादा देखे जाने वाले मैच का रिकॉर्ड चार बार टूटा। अंत में फाइनल में अविश्वसनीय रिकॉर्ड बना। रिकॉर्ड तोड़ने का सिलसिला डिजिटल मोर्चे पर भी जारी रहा और आश्चर्यजनक रूप से 16.9 बिलियन वीडियो व्यूज के साथ यह अब तक का सबसे अधिक डिजिटल रूप में देखा गया आईसीसी इवेंट बन गया। 2023 विश्व कप ने ऑस्ट्रेलिया में टूर्नामेंट से 158त्न की भारी वृद्धि के साथ 2022 टी20 विश्व कप को पीछे छोड़ दिया। %इट टेक्स वन डे% प्रीव्यू शो से लेकर विशेष पर्दे के पीछे के दृश्य तक दर्शकों ने इस टूर्नामेंट से जूड़ी हर चीज को पसंद किया। सोशल मीडिया पर, अफगानिस्तान के खिलाफ ग्लेन मैक्सवेल की मैराथन पारी और दर्द से जूझने की घटना को 50 मिलियन से अधिक बार देखा गया। विराट कोहली भी बहुत पीछे नहीं रहे, उनके आदर्श सचिन तेंदुलकर के साथ गले मिलने के वीडियो ने उनके वनडे शतकों के रिकॉर्ड (78 मिलियन व्यूज) को तोड़ने के बाद इंस्टाग्राम पर 40 मिलियन व्यूज बटोरे। कोहली ने टूर्नामेंट के दौरान एक विकेट भी लिया, जिसे इंस्टाग्राम पर 39 मिलियन बार देखा गया। मेटा ने आईसीसी के साथ साझेदारी की थी, जिसमें खिलाड़ियों से जुड़ी मजेदार बातें दिखाई गई थीं।

किष्किंधा में हनुमान से मिले थे भगवान श्री राम

किष्किंधा के पूरे रास्ते में आपको पहाड़ियां दिखती हैं और हरे-भरे खेत और नारियल से लदे-फदे खेत। इस इलाके की ग्रेफाइट चट्टानें भी ऐसी विशेष हैं कि पूरे देश में उनकी मांग है, लिहाजा रास्ते में आपको पत्थर तोड़ते मजदूर भी नजर आते हैं। किष्किंधा की चर्चा काफी विस्तार से बाल्मिकी रामायण में की गई है। सीताजी की तलाश में जब राम इस इलाके में पहुंचे तो बरसात की ऋतु शुरू हो चुकी थी। अब कोई चारा नहीं कि राम और लक्ष्मण इसी दण्डकारण्य में समय बिताएं। दण्डकारण्य में ही उन्होंने एक गुफा में शरण ली। फिर कुछ महीने एक मंदिर में रुके। यहीं उनकी मुलाकात जब हनुमान से हुई। प्राचीन भारत में ये सुग्रीव और बाली जैसे ताकतवर वानरों की नगरी थी। आज भी यहां बड़ी संख्या में वानर दिखते हैं। हर तरह के वानर ललमुंहे और काले मुंह वाले दोनों। यहां के वानरों और वासिंदों के बीच अजीब दोस्ती भी देखने को मिलती है। बाली जिस गुफा में रहता था, वह गुफा भी आकर्षण का केंद्र है। यह अंधेरी, लेकिन काफी लंबी-चौड़ी गुफा है। जहां एक साथ कई अंदर जा सकते हैं। इसी गुफा से ललकार कर राम ने बाली को निकाला। जब उनके हाथों बाली की मृत्यु हो गई तो सुग्रीव को राजपाट सौंपा गया यानी यहां रामायण में उल्लेख हुई ढेरों बातें देखने को मिल जाएंगी। इससे पहले सुग्रीव अपने भाई बाली से डरकर ऋष्यमूक पर्वत पर रहता था, जो आज भी यहां मौजूद है। वहां वह बाली से इसलिए सुरक्षित था, क्योंकि बाली को एक ऋषि ने शाप दिया था कि वह अगर ऋष्यमूक पर्वत पर चढ़ेगा तो मारा जाएगा। इसी पर्वत पर हनुमान ने राम और सुग्रीव की दोस्ती कराई थी। यहां पहुंचने के लिए कर्नाटक के होसपेट रेलवे स्टेशन पर उतरना होगा। जो यहां से करीब है। किष्किंधा में रुकने के लिए अच्छे होटल हैं। बेल्लारी और बेंगलुरु से यहां सड़क मार्ग के जरिए भी पहुंचा जा सकता है। किष्किंधा घूमने के लिए एक दिन पर्याप्त होता। लेकिन यह जगह ऐसा सर्किट है, जहां आने के बाद आपको समीपवर्ती नगरों हम्पी और बदामी भी जरूर जाना चाहिए। जो हमारे गौरवशाली इतिहास की भव्य झलक

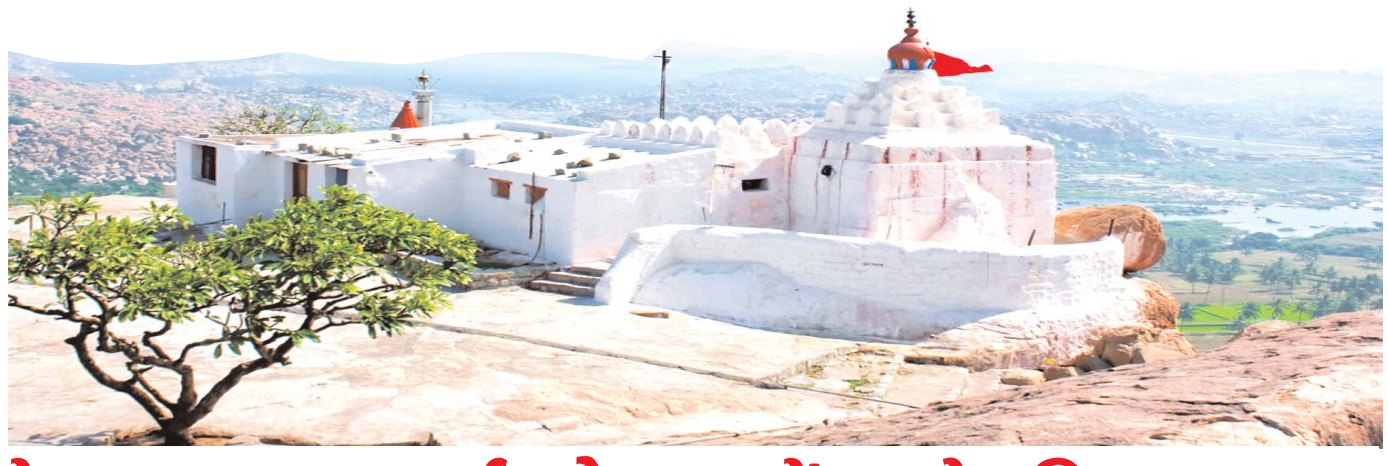

दुनिया के छह ऐसे हाइवे जो हैं अपने खतरनाक टर्न और एडवेंचर के लिए मशहूर

अगर आप भी एडवेंचर के शौकीन हैं तो दुनिया के इन हाइवे का एक्सपीरियंस लेना तो बनता है। ऊंचे-ऊंचे टेढ़े-मेढ़े इन रास्तों से गुजरना खतरनाक होने के साथ ही यादगार भी होता है। ट्रैवलिंग और शॉपिंग दो ऐसे काम हैं जिनसे बॉडी रिलैक्सिंग के साथ ही माइंड भी फ्रेश होता है और जब सफर एडवेंचर से भरा हो तब तो इसका मजा दोगुना हो जाता है। कार में बैठकर फुल स्पीड से हाईवे पर ड्राइविंग करना वाकई एक्साइटिंग होता है। सड़क के किनारों के खूबसूरत नजारों को देखना और दूर तक निगाहों में बस सड़क एक अलग ही एक्सपीरियंस देती है। दुनिया में ऐसी बहुत सारी जगहें हैं जहां जाने पर सांसें थम-सी जाती हैं, सफर खतरों से भरा होता है, लेकिन ट्रैवलिंग के शौकीन और खतरों के खिलाड़ी ही ऐसी जगहों का असली मजा उठा पाते हैं। आज 10 खतरनाक हाईवे के बारे में जानेंगे जो खूबसूरत होने के साथ ही एक्साइटिंग भी हैं।

अटलांटिक ओशियन रोड, नॉर्वे: अटलांटिक ओशियन रोड कई आइलैंड से मिलकर बना है जो एक शहर को दूसरे शहर से जोड़ता है। नार्वे का कंट्री रोड 64 आर्किटेक्चर द्वारा बनाया गया है जो बहुत ही खूबसूरत है। नदी के बीचों-बीच रोलर-कोस्टर जैसे हाईवे से गुजरने का एडवेंचर ही अलग होता है और इसी वजह से ये ट्रैवल लवर्स का भी फेवरेट है। यहां ऐड से लेकर हॉलीवुड और बॉलीवुड फिल्मों तक की शूटिंग भी हो चुकी है। इस हाईवे पर ड्राइव करते वक्त कई बार व्हेल और सील भी देखने को मिल सकती हैं।

रोहतांग पास, इंडिया: भारत का रोहतांग पास भी बहुत ही खतरनाक और एडवेंचरस हाईवे की लिस्ट में शामिल है। आसपास हरे-भरे जंगल, ऊंचे-ऊंचे पहाड़, नदियां और ग्लेशियर के बीच इस रोड से गुजरने का एक्सपीरियंस वाकई बहुत अलग होता है। लेकिन ये हाईवे मई से लेकर नवंबर तक ही खुला रहता है। उस दौरान दूर-दूर से आए टूरिस्टों को यहां के खुशगवार मौसम और खूबसूरत नज़ारों का मजा लेते हुए देखा जा सकता है। गर्मियों के दौरान इस हाईवे पर काफी भीड़ होती है। सेना की गाड़ियों के अलावा बड़े-बड़े ट्रक भी इस हाईवे से गुजरते हैं।

हाना हाईवे, माउई: माउई का हाना हाईवे भी ट्रैवलर्स के फेवरेट लिस्ट में शामिल है, क्योंकि यहां ड्राइविंग एक्साइटिंग होने के साथ ही एडवेंचर से भी भरपूर है। 84 किमी लंबे इस हाईवे पर गुजरते हुए यहां की नेचुरल ब्यूटी और हरे-भरे जंगलों को देखा जा सकता है, जो सफर को यादगार बनाता है। छोटी और घुमावदार इस सड़क पर ड्राइव करते वक्त खास ध्यान रखना पड़ता है। जरा-सी चूक हादसे का सबब बन सकती है। इस हाईवे पर गुजरने के दौरान लगभग 600 मोड़ और 59 ब्रिज मिलते हैं। इनमें से कई ब्रिज 100 साल से भी पुराने हैं।

नेशनल रूट 40: नेशनल रूट 40 या रूटा 40 भी ऐसे ही एडवेंचर वाले हाईवे में से एक है, जहां से गुजरते हुए कई नदियों और पहाड़ों का नजारा देखा जा सकता है।

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्प्लक्े स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एवं पहला तल, निधि काम्प्लेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।

समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टाचार सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।